इकतारा ट्रस्ट की प्रकाशन छाप

किताबनामा

एक चुप्पी जगह

विनोद कुमार शुक्ल
चित्र : तापोशी घोषाल
साइज़ : 8.5 X 8.5 इंच
मूल्य : 300 रुपए
ISBN: 978-93-912182-4-9

एक दिलचस्प लम्बी कहानी। एक साथ असल और काल्पनिक। जादू और असल की आँखमिचौली। बोलू जो बोलता है तो चलता है। रुक जाता है तो चुप हो जाता है। इस तरह कि कोई कहेगा, "बोलू चुप हो जाओ..." तो बोलू पहले चुप होगा फिर रुकेगा। कोई कहेगा, "बोलू, रुको..." तो बोलू पहले रुकेगा फिर चुप होगा। वह कुछ पतरंगी जैसा है। पतरंगी जब उड़ती है तो बोलती है। जब बैठती है तो चुप हो जाती है। बोलकर और उड़कर वह दोगुना थक जाती है। इसलिए दोगुना सुस्ताती है...बैठकर और चुप रहकर।

विनोद जी अपनी रचना को समूचा रचते हैं। भाषा भी रचते हैं। उनकी भाषा को पढ़ोगे तो लगेगा कि तुम यह पहली बार सुन रहे हो। इस तरह से यह पहली बार कहा गया है। चित्रकार तापोशी घोषाल के चित्र जादुई यथार्थ में और जादू भरते हैं।

एक और उदाहरण सुनो...

लकीर कहीं होती है...जिसे पेंसिल या कलम से खींचकर
हम बुलाते हैं।
मिटाते हैं तो चली जाती है
लकीर कहाँ रहती है? उसे कहाँ ढूँढें?
चलो, उस गाँव चलते हैं...जहाँ मिटाने पर लकीर लौट जाती है...

नाच घर

प्रियम्वद

चित्र : अतनु राय

साइज़ : 8.5 X 8.5 इंच

मूल्य : 225 रुपए

ISBN: 978-93-912184-2-3

कानपुर की गलियों के दो किशोरों की कहानी। दो लोगों की कहानी सिर्फ दो लोगों की कहानी कैसे हो सकती है? नब्बे के दशक के कानपुर की कहानी। लोगों के आपसी प्रेम, ईर्ष्या की कहानी। दो किशोरों के नाज़ुक सपनों की कहानी।

प्रियम्वद इतनी छोटी-छोटी चीज़ों से, वाकयों से कहानी बुन देते हैं कि बया की याद आ जाती है। वे ऊपरी ब्यौरों के कायल नहीं हैं। छाँव का पता लगाने वे धूप का पीछा करते सूरज तक चले जाते हैं।

इस बुनाई का एकाध नमूना देखें...

मोहसिन पलंग पर लेट गया। कमरे के अन्दर चाँदनी आ रही थी। धीरे-धीरे चाँद ऊपर चढ़ने लगा। कमरे में चाँदनी भरने लगी। जैसे गुब्बारे में हवा भरती है। भरती हुई चाँदनी से कमरा फूलने लगा। मोहसिन की आँखें बन्द हो गईं। अचानक तेज़ आवाज़ के साथ कमरा फट गया।

अतनु राय के बेमिसाल चित्र इसका एक और सुनहरा अध्याय हैं।

मोर डूँगरी

कहानी और चित्रः सुनीता
साइज़ : 10 x 10 इंच
मूल्य : 120 रुपए
ISBN: 978-93-912184-0-9

मोर डूँगरी भरी पूरी प्रकृति के बीच बसे एक गाँव की कहानी है। जो एक टाइगर रिज़र्व की चपेट में आ गया। उजड़कर मोर डूँगरी फिर कभी मोर डूँगरी न हो सका। कोई काम करो तो पुराने मोर डूँगरी की याद आती..कोई काम न करो... और यूँ ही बैठो तो मोर डूँगरी की याद आती। गाँव वाले क्या करते? औरतें पहले की तरह घरों की दीवारों पर माँडने बनातीं। माँडने में मोर आ जाते। और मोरों के दिखने से मोरों की याद और ज़्यादा होकर आती। उँगलियों की कोरों से और आँखों की कोरों से मिलकर बनी है यह किताब। मोर डूँगरी... पूरी दुनिया में जगह-जगह दिखती है। इस विस्थापन के दौर के बारे में बच्चों से बात करने के लिए यह एक नायाब मौका खोज लाती है।

पढ़ना, ज़रा सोचना

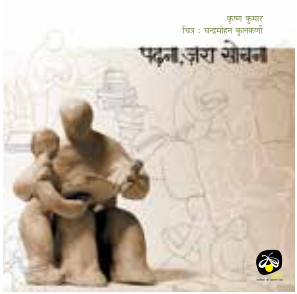

कृष्ण कुमार
चित्र : चन्द्रमोहन कुलकर्णी
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 200 रुपए
ISBN: 978-93-912184-7-8

प्रोफेसर कृष्ण कुमार हिन्दी में शिक्षा की सबसे मौलिक किताबों के लिए मन में पहले-पहले आ जाने वाला नाम है। उनके लेखों की भाषा इतनी सर्जनात्मक होती है कि उसे एक बार सिर्फ भाषा के लिए पढ़ा जा सकता है। शब्द चयन तथा फिर एक वाक्य की तराश में वे अनूठे हैं। वे अकसर ही एक साधारण से वाक्य को मारक बना देते हैं। वे मसलों को उनकी जड़ से पकड़ते हैं। इस किताब में पढ़ने के इर्द गिर्द के सारे मसलों पर बातचीत है। पढ़ना, अर्थ निर्माण से लेकर अच्छे बालसाहित्य जैसे सात निबन्ध इस किताब में हैं। इस किताब की भूमिका भी अपने आप में एक और लेख है। उसका पहला ही वाक्य किताब में पहला कदम रखते ही आपको झिंझोड़कर रख देता है - बिना पढ़े-लिखे लोगों को अनपढ़ कहकर हम पढ़े लिखे उन लोगों के लिए कोई शब्द नहीं छोड़ते जो पढ़ते नहीं हैं।

राज समाज और शिक्षा और *चूड़ी बाज़ार में लड़की* जैसी किताबों की श्रृंखला में यह एक और विचारोत्तेजक किताब है। इस किताब के लिए पढ़ने पर आधारित शिल्प चित्रकार चन्द्रमोहन कुलकर्णी ने बनाए हैं। जो इस किताब को एक नया आयाम देते हैं। उन्हें देखना पाठक को एक अतिरिक्त सुकून से भर देता है।

चार चटोरे

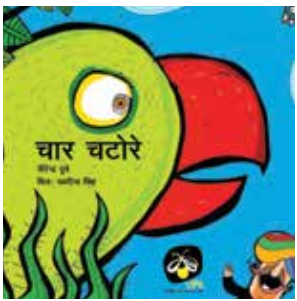

वीरेन्द्र दुबे
चित्र : नबरीना सिंह
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 130 रुपए
ISBN: 978-93-912182-6-3
टाटा ट्रस्ट्स की बच्चों की उत्कृष्ट पुस्तकों की पराग ऑनर लिस्ट में चयनित

छोटी-छोटी 22 कविताएँ। चुटीली, चटपटी, और रोज़मर्रा के जीवन से ली गई। शायद ही ऐसी कोई कविता होगी जिसमें कोई चुटकी न हो। यह हिन्दी कविता का एकदम नज़रन्दाज़ इलाका है। बच्चे न सिर्फ इसे बल्कि इसके पार जाकर अपनी कविताएँ रचेंगे। गुनगुनाएँगे। इन कविताओं की एक विशेषता इनकी सरलता भी है। भाषा के चालू अर्थों के आधार पर तथा उनसे परे जाकर इनमें कई खेल हैं। कहीं-कहीं प्रचलित खेलगीतों की एकाध पंक्तियों पर पैर रखकर एक कविता रच दी गई है। सारी कविताएँ जुबान पर चढ़ जाने वाली। इस किताब के चित्र भी अनूठे हैं। उनमें भी रेखाओं के, आकार के तथा रंगों के खेल हैं।

इकतारा बोले

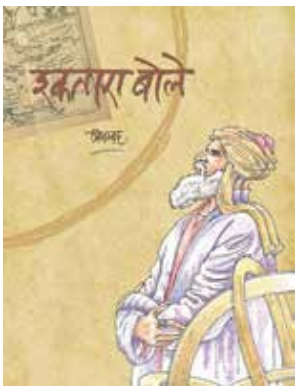

प्रियम्वद
चित्र व सज्जा : दिलीप चिंचालकर
साइज़ : 9 x 7 इंच
मूल्य : 150 रुपए
ISBN: 978-93-843752-0-1

दुनिया के दस महान यात्रियों की ऐसी कहानियाँ कि पढ़ने वाले के रोंगटे खड़े हो जाएँ। वीरान समुद्र में जहाज़ की पालों पर अपनी जान बाँधकर निकल पड़ने वाले जाँबाज़ों की कहानियाँ। मौसम आते थे जाते थे - तूफानों के बीच उनकी आँखों में एक पार के देश का सपना चमकता रहता था। इस किताब में दो धाराएँ हैं। यात्रियों की किताबों की सामग्री और लेखक की टिप्पणी। यात्रियों ने क्या देखा और उस देखने की सीमाएँ क्या थीं...इन दोनों के अलावा किताब में कई चित्र हैं जो उस ज़माने की झलक देते हैं। नक्शों के फोटो हैं जो कभी इन यात्रियों का अकेला सहारा हो जाते थे।

इतिहास के जानकार और सुप्रसिद्ध कथाकार प्रियम्वद ने इसे लिखा है और इसकी सज्जा-कल्पना सुप्रसिद्ध चित्रकार, लेखक, डिज़ाइनर दिलीप चिंचालकर की है।

बिक्सू

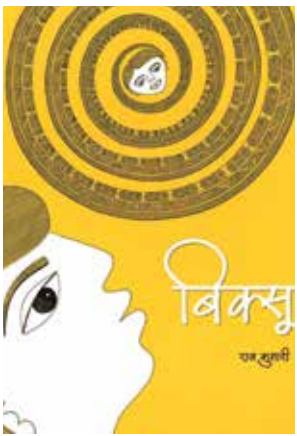

वरुण ग्रोवर

चित्र : राज कुमारी

साइज़ : 8.5 x 11 इंच

मूल्य : 600 रुपए

ISBN: 978-93-912181-0-2

टाटा ट्रस्ट्स की बच्चों की उत्कृष्ट पुस्तकों की पराग ऑनर लिस्ट में चयनित

बारह साल की उमर में बिक्सू को एक मिशनरी बोर्डिंग स्कूल में चले जाना पड़ा। गाँव, परिवार, दोस्तों की एक जानी-पहचानी दुनिया पीछे छूट गई। बोर्डिंग स्कूल की दुनिया अलग है। नए दोस्त हैं, नियम हैं, रिवाज़ हैं। विचित्र-विचित्र अनुभव हैं। गुड़मुड़िया सर हैं तो कहीं फादर जोन्हास हैं। कुएँ हैं और उनमें चोरी-छिपे नहाना है। रोज़ कुछ नया होता है। पाँच साल के इस शानदार समय की रंग-बिरंगी कहानी। एक डायरी। एक झरोखा। बिक्सू के भीतर से अपने भीतर तक। पुल बनाता। सच और कहानी का पुल।

चित्रकार राज कुमारी ने इसकी कल्पना की। इसे रूप दिया। मधुबनी में उतारा। एक ऐसी किताब बनाई कि सबको अपनी किताब मिले। पर्सनल। यह चित्रों में इसकी भाषा से भी आया है। पढ़ोगे तो लगेगा कि कोई बहुत ही करीबी दोस्त अपनी सबसे भीतरी कहानी, अपनी सबसे भीतरी भाषा में कह रहा है। यह इतना ताज़ा है कि कहीं-कहीं तो भाव ही चले आए हैं। उन्हें अभी भाषा में खुलना है। जो आप खोलोगे...पढ़कर...सोचकर।

राज कुमारी के चित्र तथा वरुण ग्रोवर के सम्वादों की बेहतरीन जुगलबन्दी।

घुड़सवार

उदयन वायपेयी
चित्र : तापोशी घोषाल
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 200 रुपए
ISBN: 978-93-912183-2-4
टाटा ट्रस्ट्स की बच्चों की उत्कृष्ट पुस्तकों की पराग ऑनर लिस्ट में चयनित

इस किताब में तीन कहानियाँ हैं। और पाँच छोटे रसीले लेख- देखना, सुनना, स्वाद, गंध और स्पर्श। इस किताब में लम्बा राजा है जो आसमान के पार देख सकता है। घुड़सवार है जिसका घोड़ा आवाज़ से तेज़ दौड़ता है। कोई उसे आवाज़ दे तो घुड़सवार के उत्तर से पहले घुड़सवार खुद पहुँच जाता है। एक भालू है जो शहद तोड़ने की नाकाम कोशिश करता है और चाहता है कि बिलौटा बन जाए। और वह बिलौटा बन जाता है। और...इस तरह ये कहानियाँ कल्पना के जोड़ से यथार्थ के दामन को बढ़ा देने की कहानियाँ हैं। इससे जीवन अपनी पूरी सघनता के साथ सामने आता है। इस संग्रह के कथ्य का ही नहीं बल्कि भाषा का अनुभव भी बेमिसाल है। आप एक वाक्य पढ़कर दूसरे पर जा रहे होंगे कि एक दफे लौटेंगे। कभी कहन के लिए। कभी अर्थ को ठहराने। कभी सिर्फ उस बात का रस एक बार और लेने। यह लौटना सिर्फ भाषा में नहीं होगा। असल में तो कुछ भी दुबारा नहीं होता। हर चीज़ दुनिया में एक बार ही होती है। इस संग्रह की ध्वनि कुछ इसी तरह की है। इसे पढ़कर ही सुना जा सकता है। तापोशी घोषाल के चित्र इस तरह हैं कि जैसे रचनाकार ने खुद बनाए हों। कुछ शब्द और कुछ चित्र में। कहानी के साथ आकर चित्र उसे अधूरा बना दे तो जानिए चित्र ने अपनी जगह पा ली।

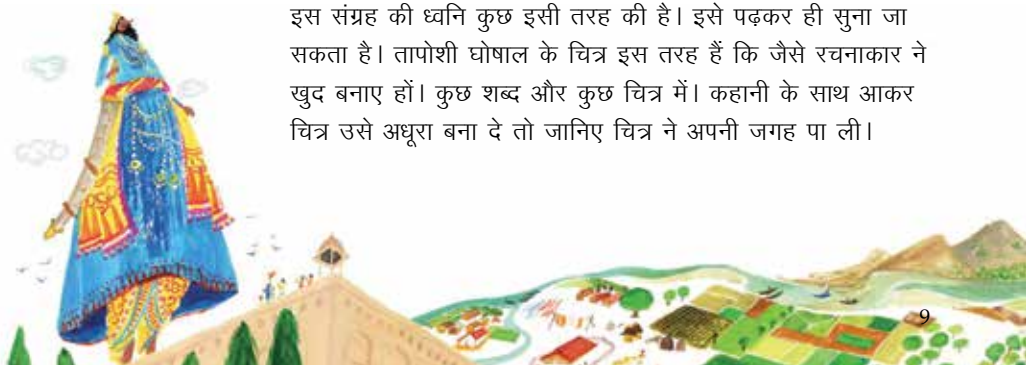

रानू मैं क्या जानूँ?

असगर वजाहत

चित्र : अतनु राय

साइज़ : 7.5 x 7.5 इंच

मूल्य : 90 रुपए

ISBN: 978-93-912184-9-2

टाटा ट्रस्ट्स की बच्चों की उत्कृष्ट पुस्तकों की पराग ऑनर लिस्ट में चयनित

असगर वजाहत लेखक कम जादूगर ज़्यादा हैं। बोलचाल की आम भाषा में पाठक को गिरफ्तार कर लेने का ऐसा हुनर कम दिखता है। उन्हें चुटीलेपन, किफायत, दोटूकपन, ताज़गी, हाज़िरजबावी - आप किस-किस के लिए न याद करेंगे। बच्चों के लिए यह उनकी पहली किताब है। पहली बार बच्चे को भी कायल हो जाने का एक मौका है।

यह किताब सम्वाद शैली में है। इन सम्वादों को पढ़कर समझा जा सकता है कि पेचीदा बातों को बच्चों के साथ कैसे साझा किया जा सकता है।

अतनु राय के चित्र देखते ही उस चुटकी की आवाज़ आएगी जो शब्दों में चुप थी।

मगरमच्छों का बसेरा

जसबीर भुल्लर
चित्र : अतनु राय
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 180 रुपए
ISBN: 978-93-912183-4-8

जसबीर भुल्लर पंजाबी के जाने-माने लेखक हैं। उन्हें किस्सा कहने का हुनर आता है। यह किताब दो मगरमच्छों की कहानी है। दोनों एक नदी में रहते थे जब तक कि वहाँ एक भयानक बाढ़ न आ गई। बाढ़ ने उन्हें भटकने के लिए मजबूर कर दिया। नदी के अथाह पानी में उनके लिए सब था। कहीं जाने को पानी की एक नाव सदा खड़ी रहती थी। खाने के लिए मनचाहे भोजन। किरली कभी मस्ती में पूँछ पानी पर मारती तो नदी में एक शानदार छपाक होती। और नदी का चेहरा सफेद हो जाता। बाढ़ के बाद मगरमच्छ ज़मीन पर आ गए। पानी की तंगहाली ने उन्हें तोड़ कर रख दिया। ...एक पूरी कहानी में कहानी और तथ्य का जो तालमेल कथाकार ने हासिल किया है वह अनूठा है। जैसे वे मगरमच्छों के साथ वहाँ थे। और सब देख रहे थे। यह लम्बी कहानी आप दो टुकड़ों में पढ़ ही नहीं सकते। वह आपको नहीं छोड़ेगी।

अतनु राय के चित्र किरली मगरमच्छ से आपका परिचय कराएँगे। उस जंगल को दिखाएँगे जहाँ यह कहानी बनी। नदी को। शेर को। हिरण को। इस कहानी को पढ़ लेने के बाद एक बात ज़रूर पूँछेंगे। क्या आपके पास जसबीर भुल्लर की कोई और किताब भी है?

टिटहरी का बच्चा

प्रद्यामणी, सिमरन, विद्याभारती, संजली, सुनैना, अमर, सोनम, देशमणी, आशिका
चित्र : भार्गव कुलकर्णी
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 150 रुपए
ISBN: 978-93-912181-7-1
टाटा ट्रस्ट्स की बच्चों की उत्कृष्ट पुस्तकों की पराग ऑनर लिस्ट में चयनित

ये अनसुनी कहानियाँ हैं। सुन सकते थे। मगर नहीं सुनीं। ऐसी। इनके लेखक भी अनसुने हैं। अनदेखे। कोई पन्नी बीनता है। कोई जंगल में अचार, महुए...। इनमें से किसी का घर उनकी मदद के बिना नहीं चल सकता। आप उनके प्रति आए लिजलिजे दयाभाव की केंचुली उतार सकें...तो उनसे मिलिए। बराबरी से। तब देखेंगे उनकी ज़िन्दगी के ठाठ। ज़िन्दगी के प्रति उनका प्रेम और नज़रिया। कि आप बरसों बरस कुछ न करें तो भी आपको रोटी-पानी की चिन्ता नहीं...जो इस सुरक्षा के दम्भ को हटा कर मिल सकें तो मिलें। देखें कि ज़िन्दगी वहाँ किस कदर फूली हुई है। झुक-उठ रही, झूल रही, ज़िन्दगी की छरहरी डालियाँ देखें।

इस किताब के चित्र युवा पेंटर भार्गव कुलकर्णी ने बनाए हैं। ये चित्र न सिर्फ उस दुनिया को समझने में हमारी मदद करेंगे। बल्कि इन चित्रों में हम भी पहचाने जाएँगे। हमारी दुनिया की तस्वीर भी इन चित्रों में है। ये चित्र गवाही के चित्र सरीखे हैं।

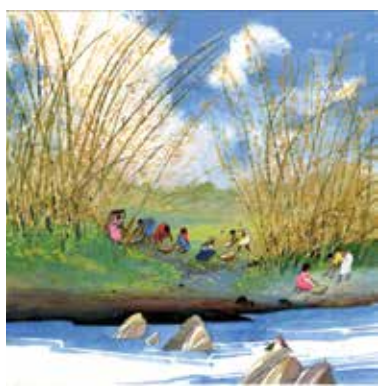

जब मैं मोती को घर लाई

कहानी व चित्र: प्रोइती रॉय
साइज़ : 7.5 x 7.5 इंच
मूल्य : 90 रुपए
ISBN: 978-81-950639-5-6
टाटा ट्रस्ट्स की बच्चों की उत्कृष्ट पुस्तकों की पराग ऑनर लिस्ट में चयनित

प्रोइती रॉय एक विलक्षण चित्रकार हैं। वे आपके सामने साफ झूठ बोलेंगी कि मैं लिखती नहीं हूँ और बच निकलेंगी। उनकी पोल तब खुलती है जब आप उनके चित्र देखते हैं। वे बहुत सफाई से चित्र बनाते हुए शब्दों की जगह एकदम खत्म-सी कर देती हैं। किसी झूठ का सच इतने सुन्दर रूप में सामने आए तो दुनिया और कितनी खूबसूरत हो जाएगी...जैसे यहाँ एक छोटी बच्ची है जो अपनी माँ को ठीक से नहीं बता पा रही है कि वो जो छोटा-सा पिल्ला है न मोती...उसमें जाकर मेरी जान अटक गई है। ...जैसे आपको प्रोइती के चित्रों में शब्द दिखे हैं न, वैसे ही माँ को बच्ची के चेहरे से सब पता चलता है। एक शानदार कहानी...प्रेम से रंगी इस दुनिया की।

वो नारंगी घर

कहानी व चित्रः नाहिद काज़मी
साइज़ : 10 x 10 इंच
मूल्य : 150 रुपए
ISBN: 978-81-950639-8-7

ईरान...तुम्हें चूमने का मन करता है। पता है क्यों? तुम अपने बच्चों के लिए कितनी सुन्दर किताबें बनाते हो...काश कि ये बात सच हो जाए कि इंसान के बहुत सारे जन्म होते हैं तो एक पूरा बचपन ईरान में ही बिता दूँ।

शुक्रिया नाहिद काज़मी...इतनी सुन्दर किताब के लिए। कहानी तो कहानी...हम तो आपके चित्रों के रंग में खोकर रह गए। कुछ पुराने कभी पुराने नहीं होते। जैसे ये नारंगी घर। एक कवि कहते हैं कि दुनिया रोज़ बनती है। पर हाँ, दुनिया रोज़ पुरानी नहीं होती।

नारंगी घर की कहानी सबके लिए है। बच्चे पढ़ें तो बच्चों के लिए और उनके साथ बड़े पढ़ें तो दोनों के लिए है। एक नदी का देखना किसके लिए होता है? बच्चे अपने हिस्से का देखते हैं और बड़े बड़ों का।

फिर मिलेंगे

अहमद रज़ा अहमदी
चित्र : नाहिद काज़मी
साइज़ : 10 x 10 इंच
मूल्य : 150 रुपए
ISBN: 978-93-912183-1-7

इसी ईरान से एक और तोहफा है - फिर मिलेंगे। ईरान के सबसे सुरीले कवियों में से एक अहमद रज़ा अहमदी की किताब। चित्र तो फिर से नाहिद काज़मी के हैं।

ज़रा इस किताब के पहले वाक्य पर गौर कीजिए...जब तेज़ हवा चलती है तो पेड़ों के फूल चले जाते हैं। जब फूल चले जाते हैं तो क्या फूल शब्द भी चला जाता है?

शब्दों के इस कमाल के स्वभाव के बारे में आपने सोचा है? एक कवि ने कहा है कि एक फूल शब्द में खिला तो फिर खिला ही रहा। फिर से एक ऐसी किताब जो बच्चों के लिए तो है ही। सबके लिए भी है। एक बेमिसाल चित्रकथा।

किस्सू हाथी

कहानी व चित्र: मानिक्ज़ा मुसील
साइज़ : 11 x 11इंच
मूल्य : 170 रुपए
ISBN: 978-93-912180-0-3

मानिक्ज़ा मुसील कहने को स्लोवानिया में रहती हैं। पर वे अपनी अद्भुत चित्रकारी और कहानी कहने की कला की बदौलत हर पाठक के मन में, आँखों में रहती हैं। वे अपने चित्रों में रंग और कूची का ही इस्तेमाल नहीं करतीं। सुइयों, धागों, कतरनों...वे हरेक को चित्रों में एक रोल दे देती हैं। और तब आप सोचते हैं कि दुनिया में सुइयाँ और धागे और कतरनें सिर्फ मुसील के चित्रों के लिए ईजाद हुई थीं। हमने उनसे कुछ और काम भी ले लिए। उनकी किताब वैसे ही खुलती है जैसे स्कूल में दोस्त खुलते हैं। एक दिन कुछ और। दूसरे दिन कुछ और। जैसे किनारों के बीच कोई नदी खुलती है। उनकी किताब के कागज़ वापिस जाकर पेड़ बन जाते हैं। उनका धागा सेमल बन कर खिल जाता है।

एक बड़ा अच्छा दोस्त

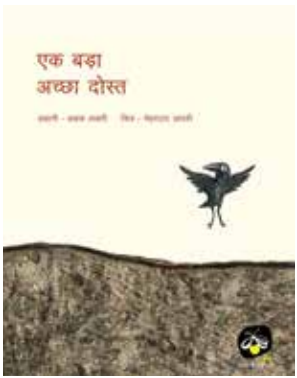

बाबक साबरी
चित्र : मेहरदाद ज़ायरी
साइज़ : 8 x 10 इंच
मूल्य : 125 रुपए
ISBN: 978-81-950639-0-1

यह किताब काबुलीवाले के पिस्तों-बादामों की महक की तरह है। आई है ईरान से। बाबक साबरी की कहानी और मेहरदाद ज़ायरी के चित्रों के साथ। हर समय दोस्ती का समय होता है। एक छोटा-सा परिन्दा एक हाथी का दोस्त हो जाता है।

अम्मी परिन्दे से उसकी बेटी कहती है - अम्मी देखो, हमारी परछाइयाँ तक एक साइज़ की हैं... एकदम सेम टू सेम। इस बात पर दुनिया की कोई भी अम्मी क्या कहेगी?

कौवी और हाथी की दोस्ती की कहानी।

चित्रकार कहते हैं - मुझे बार-बार विस्थापित होना पड़ा। अपना घर छोड़ना पड़ा। नए दोस्त बनाने पड़े। मेरी अम्मी हमेशा फिकर करती रहती थीं कि मैं एक नई जगह, नए देश में कैसे निभा पाऊँगा। बस मेरे उजड़ने और बसने की एक छोटी-सी याद की तरह है यह कहानी..

हाँजी नाजी

स्वयं प्रकाश
चित्र : अतनु राय
साइज़ : 7.5 x 7.5 इंच
मूल्य : 170 रुपए
ISBN: 978-93-912181-5-7

कथाकार स्वयंप्रकाश कुछ भी कर सकते हैं। वे एक ही कहानी में हँसा और रुलाकर आँसू निकालने वाला लिखते हैं। ज़रा सँभलकर क्योंकि ये सब हँस-हँस कर पेट दुखा देनेवाली कहानियाँ हैं। लेकिन इनकी तासीर कुछ ग्लूकोज़ की तरह है। जीभ पर रखेंगे तो घुल जाएगा। और हँसी आएगी। मगर हो सकता है कि किस्सा खून में मिलकर दिल दुखा दे। बात ऐसी निकलेगी तो उस्ताद चैप्लिन क्यों न याद आएँ...।

तीस बेजोड़ कहानियाँ। हास्य रस की धारा। हाँ, सुनी होंगी आपने, पर इस अन्दाज़ में तो सिर्फ स्वयंप्रकाश जी ही सुना सकते हैं। अन्दाज़े बयाँ को जो कम समझते हों उन्हें हमारे पूर्वज ग़ालिब साब ने कहा भी तो था...हैं और भी दुनिया में सुखनवर बहुत अच्छे...।

हाँजी बोलते थे तो उनका मुँह कैसा बन जाता था। किस खाट पर बैठते थे, उनकी हेयरस्टाइल, उनकी टोपी। उनकी दाढ़ी, तैश की पसलियाँ, और ठुड्डी...सब अतनु राय के चित्रों में है।

सप्पू के दोस्त

स्वयं प्रकाश
चित्र : एलन शॉ
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 200 रुपए
ISBN: 978-93-912181-8-8
टाटा ट्रस्ट्स की बच्चों की उत्कृष्ट पुस्तकों की पराग ऑनर लिस्ट में चयनित

सप्पू के कई दोस्त हैं। एक फुटबॉल खेलता है। असमय पिता चले जाते हैं तो उनकी जगह सब्ज़ी का ठेला लगाता है। न उससे फुटबॉल छूटता, न सप्पू की दोस्ती। और वो तीन दोस्त जो कुत्ते के खो जाने पर दिन-रात उसे खोजते फिरते हैं। ग्यारह कहानियाँ हैं। दोस्ती के रंग की। साथ-साथ फिल्म देखने की। साथ घूमने-फिरने की। साथ-साथ मज़ाक उड़ाने की। और साथ ही साथ अफसोस मनाने की। इन कहानियों को पढ़कर आपके बचपन के चुक्कु, आपके बचपन के राधेश्याम याद आते रहेंगे। और आप बचपन में सप्पू जैसे ही तो थे। तो ये किताब दोस्तों से ही आपको नहीं मिलाएगी अपने आपसे भी मिलाएगी। और आपके बचपन की जाने कितनी कहानियाँ, कितने दोस्त सब याद आते चले जाएँगे।

इन कहानियों में दुनिया के हर वर्ग, धर्म के बच्चे हैं। लोग हैं। बाज़ार, घर, स्कूल, ट्रेन, परदेस सब है। स्वयंप्रकाश जी को इन्हीं कहानियों के पहले गुच्छे के लिए बाल साहित्य का सर्वोच्च साहित्य अकादमी अवार्ड मिला था।

इन कहानियों के चित्र मशहूर चित्रकार एलन शॉ ने बनाए हैं। बर्लिन में बैठकर एलन सप्पू के दोस्तों को देख सकते हैं, उनके चित्र बना सकते हैं। उनसे वे मिल सकते हैं...तो आप क्यों नहीं?

चाँद की रोटी | चींटी चढ़ी पहाड़

चित्रः प्रोइती रॉय
साइज़ : 6 x 6 इंच
मूल्य : 65 रुपए
ISBN: 978-93-912180-1-0

चित्रः प्रोइती रॉय
साइज़ : 6 x 6 इंच
मूल्य : 65 रुपए
ISBN: 978-93-912180-2-7
टाटा ट्रस्ट्स की बच्चों की उत्कृष्ट पुस्तकों की पराग ऑनर लिस्ट में चयनित

ये दो किताबें उन लोरियों की तरह हैं जो आपको नहीं सुनाई गईं। सुनाने से बच गईं। इनमें लोरियों की तरह फिसलता हुआ छन्द है। भाषा मिसरी की तरह पारदर्शी है। दो बार पढ़ोगे तो याद हो जाएँगीं। कहने के कमाल हैं। अब चाँद के नदी में तैरने पर ही देखो कवि ने क्या कहा है -

चाँद की रोटी
पानी में आई।
मछली फिर भी
खा न पाई।।

इसमें जितना कहा गया है उससे ज़्यादा छूटा हुआ है। इस छूटी हुई जगह में ही भाषा के, कल्पना के खेल बच्चे खेलेंगे। और कोई इतना बड़ा कभी नहीं हो पाता कि उसे भाषा के खेल ऊबाऊ लगें। भाषा सीख रहे हर व्यक्ति के लिए। और जीना सीख रहे हर व्यक्ति के लिए।

एक सवाल भी देखिए -

अम्मी कहती हैं कि बैठा है।
पर राशिद इस बात पर अड़ा है।
कि कौआ खड़ा है।।

प्रोइती रॉय ने इन किताबों की लोरियों सरीखी कविताओं को झूलों, पालनों सरीखे चित्र दिए हैं।

पेपर चोर

वरुण ग्रोवर
चित्र : चन्द्रमोहन कुलकर्णी
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 190 रुपए
ISBN: 978-93-912184-8-5
टाटा ट्रस्ट्स की बच्चों की उत्कृष्ट पुस्तकों की पराग ऑनर लिस्ट में चयनित

वरुण ग्रोवर की चमकीली भाषा ने युवाओं को कायल कर रखा है। इस किताब के बाद मैं इस लाइन में बच्चे भी जोड़ दूँगा। सात कहानियाँ। रहस्य, रोमांच, खो जाना, सपने उनकी भाषा सबके लिए बराबरी से जादू पैदा करती है। वे कहीं-कहीं इतना कम कहते हैं कि बात जैसे भाषा की नोंक पर चली आती है। वहाँ और किसी चीज़ के लिए कोई जगह नहीं रहती। वे कहानी इस तरह सुनाते हैं जैसे खुद भी उसे सुन रहे हों। इसलिए लगातार एक पाठक आपको मिलता रहता है। कमाल यह है कि वे ब्यौरों को निष्कर्षात्मक नहीं बना देते। वे सरल जिज्ञासा की पूर्ति करते रहते हैं। कि पाठक अचानक किसी बड़े रहस्य से रूबरू हो..वे रहस्य को कहानी भर बचाए बचाए नहीं घूमते। वे उसे खुलने देते हैं। रहस्य खुलकर आगे आने वाली बात के लिए एक जगह बनाता रहता है।

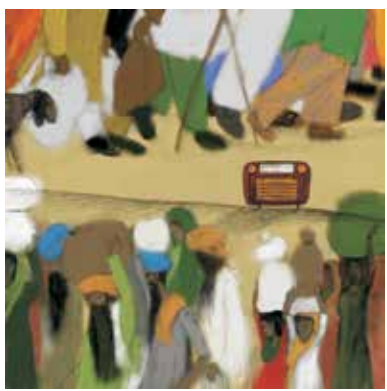

"सुनो बच्चो...।" इस भाषा में बात करने वालों के लिए ये कहानियाँ आइना दिखाती हैं।

खाई दाल | पीठ पर बस्ता दो तरफा किताब

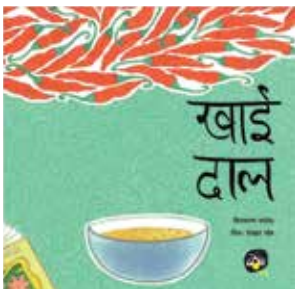

शिवचरण सरोहा /
नागेश पाण्डेय 'संजय'
चित्र : देबब्रत घोष
साइज़ : 7.5 x 7.5 इंच
मूल्य : 50 रुपए
ISBN: 978-93-912180-7-2

ये चित्रकथा उन 6-7 साल तक के बच्चों के लिए ज़्यादा है जिन्हें पेंसिल से लिखने से ज्यादा मज़ा पेंसिल छीलने में आता है।

इस उमर के बच्चों को वे कविताएँ बहुत पसन्द आती देखी गई हैं जिनमें कोई कहानी चल रही हो...

जैसे, इस चित्रकथा में उस एक बच्चे की कहानी है जिसके दाल के कौर में मिर्च आ गई है। एक तरफ से देखोगे तो एक कहानी शुरू होगी दूसरी तरफ एक और कहानी है। बस्ते की। पीठ पर एक बस्ता है...बस्ते में क्या है? ...यानी एक किताब में दो चित्रकथाएँ...

बकरी के साथ

छह-सात साल तक के बच्चों को ये किताब खूब भाएगी। इसमें एक लड़की और एक बकरी की बातचीत है। चित्र देखकर आपको यकीन हो जाएगा कि बकरियाँ हमारी जुबान में बातें करती हैं या हम बकरियों की जुबान में बातें करते हैं। वॉटर कलर का इतना दिलकश इस्तेमाल कम दिखता है।

श्याम सुशील
चित्र : भार्गव कुलकर्णी
साइज़ : 7.5 x 7.5 इंच
मूल्य : 40 रुपए
ISBN: 978-81-950639-1-8

अनोखा स्थापती

कहानी और चित्रः नचिकेत पटवर्धन
साइज़ : 7.5 x 10 इंच
कीमत : 100 रुपए
ISBN: 978-93-912184-1-6

यह कहानी एक स्थापती की है। उसकी कला के माद्दे की। ज़िद की। राजा की ताकत के सामने वह हर बार एक दाँव चलता है। और जीतता है। सत्ता और कला के नज़रिए की कहानी है। उस समय की है जब भारत में स्थापती होते थे। और उनके साथ एक हुनरमन्द टीम होती थी। शिल्पकारों की। बढ़ई की। मिस्त्रियों की। इन सबकी मदद से स्थापती भवन निर्माण करते थे।

कहानी यह है कि एक स्थापती एक नायाब महल बनाता है। और राजा चकित हो जाता है। वह सोचता है कि ऐसा दूसरा महल नहीं बनना चाहिए। ...और फिर राजा अपनी चाल चलता है। स्थापती उसे नाकाम करता है। एक और पहले से शानदार महल बनाता है। राजा फिर...। कहानी कुछ शब्दों में है। कुछ चित्रों में है। चित्र भी नायाब। हिन्दी और अँग्रेज़ी दोनों भाषाओं में ये कहानी पढ़ी जा सकती है।

कैसा कैसा खाना

प्रभात
चित्र : एलन शॉ
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
कीमत : 120 रुपए
ISBN: 978-93-912183-3-1
टाटा ट्रस्ट्स की बच्चों की उत्कृष्ट पुस्तकों की पराग ऑनर लिस्ट में चयनित

खाना शब्द एक है पर कितने तरह से इस्तेमाल होता है। इसमें नुक्ते और जोड़ लो तो कमाल हो जाए। लेखक ने इसी एक शब्द के अर्थों की रंगतों से कहानी बुनी है। इस कहानी में पता चलता है कि शब्द अपने आप में कितना कम अर्थ रखता है। और सन्दर्भ से ही अधिकतर अर्थ आता है।

"आपका कुत्ता क्या खाता है?"

"जी, काट खाता है।"

खाने के इस तरह के विनोदी भावों से बनी एक शानदार चित्रकथा। चित्रकार एलन शॉ ने इसे जैसे जान दे दी। उनके चित्रों के पर्सपेक्टिव के बारे में जितना कहा जाए कम है। वे दृश्य को उपस्थित करने के खेल के उस्ताद हैं।

छोटे बच्चों को यह किताब आनन्द से भर देगी। भाषा सीखने का सफर भाषा से खेलने का सफर बन जाना चाहिए। इस किताब में वह अवसर है।

चमनलाल के पायजामे

अनिल सिंह

चित्र : तापोशी घोषाल

साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच

कीमत : 150 रुपए

ISBN: 978-93-912182-5-6

टाटा ट्रस्ट्स की बच्चों की उत्कृष्ट पुस्तकों की पराग ऑनर लिस्ट में चयनित

इसमें छह कहानियाँ हैं। जीवन के सौ रंग हैं। लेखक के बचपन के अनुभव हैं। बच्चों के लिए शायद ही इस करीने से जीवन को दिखाने वाली कहानियाँ हिन्दी में लिखी गई होंगी। आँखों देखी। दोस्ती, बाँध बनने से बन्दरों का मर जाना, और फिर लोगों का भूलकर आगे बढ़ जाना। होली है जिसकी लपटों में ताकतवर और कमज़ोर साफ-साफ दिखाई देते हैं। एक परकोटे में कोई चीज़ चमकती है और उसे हासिल करने की योजना में जुटे दोस्तों की कहानी। ...इन सब कहानियों की गवाही देते चित्र। जल रंगों का इतना सांगीतिक इस्तेमाल कि देखने वाला मोह के न रह जाए तो क्या करे...।

मिट्टी की गाड़ी

प्रियम्वद
चित्र : सुजाशा दासगुप्ता, अतनु राय, तापोशी घोषाल, नीलेश गहलोत
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 130 रुपए
ISBN: 978-93-912183-9-3

आपने आखिरी बार तितली कब देखी? तितलियाँ हवा के फूल हैं। आपकी साँस हवा की तरह फूले...तितलियों-सी...इस किताब में छह कहानियाँ फूली हैं। जिस दिन धरती पर ऑक्सीजन नहीं होगी, तब हम कहानियों से साँसें लेंगे। हमारी कहानियाँ बनेंगीं। इन कहानियों में किरदार हैं। दस से ज़्यादा। परिन्दों के जाने से उदास झील है। झील के बारे में बताता एक गाइड है, एक गिलहरी के बच्चे का शोक है, मरीज़ से मिली मिट्टी की गाड़ी में भरे सिक्के सँभाले रखने वाला डॉक्टर है। एक बुनाईवाला है और कहानी सुनाने वाला नौकर है। पढ़कर लगेगा ये सब आपमें थोड़े-थोड़े कहीं हैं। ये जोड़ कहानियाँ किस खूबी से लगा देती हैं। कि कहानी सुनानेवाले से प्रेम करता हूँ कि जैसे खुद से प्रेम करता हूँ। झील के साथ उदास होता हूँ। गिलहरी के साथ थोड़ा-सा मर जाता हूँ। ये सब प्रेम की कहानियाँ हैं। अपने आसपास से प्रेम की। अपने भीतर की उन सब रंगतों से प्रेम की जो अकसर आपकी पहचान तले छिपी रहती हैं।

चार चित्रकारों ने इन कहानियों की गवाही दी है। सबका हुलिया बनवाया है। ताकि जीवन की शिनाख्त आसान हो।

मसाई मारा

कमला भसीन, बीना काक
चित्र और सज्जा : सुजाशा दासगुप्ता
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 175 रुपए
ISBN: 978-93-912181-6-4
टाटा ट्रस्ट्स की बच्चों की उत्कृष्ट पुस्तकों की पराग ऑनर लिस्ट में चयनित

मसाईमारा दुनिया की मशहूर सेंचुरी है। केन्या में। इस किताब में शेरों, चीतों, तेंदुओं, जिराफों, जेब्रों...सबकी कहानियाँ और रोमांचक फोटो हैं। एक आज़ाद दुनिया के ख्वाब को पूरा करने में जुटे दो बेहतरीन इंसानों ने इसे रचा है। इस किताब में जंगल ही जंगल दिखता है। पर यह इसका ऊपरी पाठ है। इसके भीतर हमारी अपनी दुनिया के सवाल हैं। हमारी अपनी दुनिया का दोगलापन है। भेदभाव हैं। और इस जंगल में बेफिकर घूमती दो महिलाएँ हैं। कान्हा में एक महिला गार्ड से इंटरव्यू में मैंने पूछा कि क्या उसे जंगल में डर नहीं लगता? उसने कहा, "लगता है जब आबादी में लौटती हूँ। गाँव लौटती हूँ।" यह किताब ऐसे कितने ही वाकयों को आपके मन में खींच लाएगी। कमला भसीन लगभग चालीस सालों से दुनिया में अमन के लिए काम कर रही हैं। समता के बिना अमन कहाँ? तो समता के लिए काम किया। और बीना काक पिछले कई वर्षों से वन्य जीवन के प्रेम में पड़ी हैं। उसकी परवाह और हिफाज़त में।

मसाईमारा के फोटो पढ़िए और शब्द देखिए। और थोड़ी देर के लिए एक आज़ाद दुनिया का सपना देखिए। एक बसन्त-सा आएगा। सर्दियों के भारी-भरकम स्वेटर उतारकर जैसे हलका लगता है। खुला-खुला। नए ताज़ेपन की चमक-सा।

...इस किताब की सज्जा पर ये जो आपकी नज़र ठहर रही है उसका सारा चुम्बक सुजाशा दासगुप्ता की डिज़ाइन से आया है।

गोदाम / **Godown**

विनोद कुमार शुक्ल
चित्र : तापोशी घोषाल
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 60/80 रुपए
ISBN: 978-81-946928-4-3
978-81-9705-303-0
टाटा ट्रस्ट्स की बच्चों की उत्कृष्ट पुस्तकों की पराग ऑनर लिस्ट में चयनित

यह कहानी खतम होते-होते हमारे भीतर पेड़ों से इश्क का एक चुपचाप बनाती है। यही चाप हम सुनते हैं और कहानी को याद करते हैं कि हमने अभी-अभी क्या पढ़ लिया। एक-एक सम्वाद जैसे पेड़ का एक-एक पत्ता करीने से बनता है। एक सम्वाद सुनिए, ''मकान मालिक ने मुझसे पूछा कि मकान तो बहुत खाली हैं। नई कॉलोनी बन रही है।'' मैं जो कहना नहीं चाहता था मुँह से आखिर निकल गया, ''जी मैं पेड़ वाला घर ढूँढ रहा हूँ।'' ''रहने के लिए पेड़ वाला घर क्यों?'' आश्चर्य से उन्होंने कहा। उनके आश्चर्य से मुझे थोड़ी शर्मिंदगी हुई कि यह आश्चर्य का कोई कारण कैसे है।

बिना पेड़ों के घर में हम किसी सामान में बदल कहीं किसी गोदाम में तो नहीं हैं... दस्तक देकर यह हम में से हरेक से पूछती है। बाल साहित्य में अपनी तरह की असाधारण कहानी।

...और तापोशी घोषाल के चित्र इस अनुभव को और सघन करते हैं। हम कहानी पढ़कर कटे पेड़ को देखने से बचते हैं। मगर वे उसी पेड़ को घसीटकर सामने लाती हैं और हमें शर्मिंदा करती हैं... और फिर ढाँढस बँधाती हैं कि यह चित्र का पेड़ है। वे हरे पेड़ के एक हिस्से में एक सूखा पेड़ रचती हैं और जैसे पूछती हैं कि हमें किस दिशा जाना है।

एक दिन पत्थर भी नहीं बचेगा...

विनोद कुमार शुक्ल

चित्र : तापोशी घोषाल, देबब्रत घोष, एलन शॉ, अवधेश बाजपेयी, सिमरन कौर, मनीषा क्षत्रिए, कीर्थना श्रीनिवासन, सैफी जॉर्ज, श्री. बा.

साइज़ : 4.5 x 9 इंच

मूल्य : 150 रुपए

विनोद कुमार शुक्ल की ताज़ा सोलह कविताओं का गुच्छा। 'जहाँ गए सपने में, जागकर वहीं रह गए...' इसी गुच्छे की एक कविता की पंक्ति के हवाले से कहें तो कहेंगे कि विनोदजी की कविताएँ सपने में इस दुनिया से बाहर नहीं ले जाती हैं। वे इसी दुनिया में सपने दिखाती हैं। इसी दुनिया के सपने दिखाती हैं। जैसे हमें कुर्सी से उठाकर कोई कहे कि ये सेमल की दाईं तरफ जाने वाली शाख से बनी है और इस मई इसमें फूल आएँगे... और आपको अनुभव हो कि आप सेमल पर बहुत ऊपर बैठे हैं। और पेड़ से उतरने के लिए एक नसेनी की ज़रूरत पड़ेगी।

अक्स कविताएँ और हाइकू

कवि चित्रकार तेजी ग्रोवर के कुछ खुद के लिखे और कुछ अनूदित सोलह हाइकू। जापान के महान कवियों के लिखे हाइकू। हिन्दी में तेजी उन्हें इस करीने से सहेजती हैं कि लगता है कि वे हिन्दी में ही लिखे गए हैं।

तेजी ग्रोवर

चित्र : तापोशी घोषाल, कीर्थना श्रीनिवासन, कृति कोठारी मोदी, सेफी जॉर्ज, मिलन कुमार, सुभाष बेजवाड़ा, श्री.बा.

साइज़ : 4.5 x 9 इंच

मूल्य : 150 रुपए

भूतों की बारात

चित्र एवं कहानी : बरखा लोहिया
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 120 रुपए
ISBN: *978-81-946928-9-8*

यह उत्तराखण्ड की लोककथा पर आधारित कहानी है। एक लड़का भूतनी से शादी कर लेता है। उन दोनों के बच्चे भी होते हैं। भूतनी गूँगी नहीं है, पर कुछ बोलती नहीं है। इसलिए नहीं बोलने का कोई बड़ा कारण ही होगा। पर कुछ ऐसा होता है कि एक दिन वह बोल उठती है।

बरखा लोहिया के बनाए चित्र ऐसे है कि आप उत्तराखण्ड की कहानी उत्तराखण्ड के लोगों और वहाँ के घरों को देखते हुए पढ़ेंगे।

आँख खुली और सपना गिर गया

शशि सबलोक
चित्र : उमा देवी केथा
साइज़ : 8.5 x 8.5
मूल्य : 100
ISBN: *978-81-946928-7-4*

यह माँ बेटी के रिश्ते की कहानी है। रिश्ते इतने गहरे हैं कि उनकी जड़ें उनके सपनों तक चली गई हैं। जागते हैं तो वे जागे हुए मिलते हैं। और सोते हैं तो सपनों में मिलते हैं। इस कहानी के सम्वाद खासतौर पर चुटीले और मीठे हैं। जैसे यह बात कहने के लिए भाषा ताज़ा बनाई गई हो।

उमा देवी केथा के चित्र कहानी के एकदम नज़दीक के हैं। जैसे, ये उनकी ही कहानी हो। उनके चित्र स्वप्निल हैं। उनबातों को चित्र में कहा है जो भाषा में कहे न जा पाते।

तारिक का सूरज

शशि सबलोक
चित्र : तविशा सिंह
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 110 रुपए
***ISBN:** 978-93-912182-3-2*
टाटा ट्रस्ट्स की बच्चों की उत्कृष्ट पुस्तकों की पराग ऑनर लिस्ट में चयनित

तारिक को रात में खेलना पसन्द था। उसने उजाले के लिए अपना सूरज बना लिया। तारिक का सूरज सिर्फ तारिक के हिस्से का उजाला नहीं देता। सबके हिस्से के उजाले में तारिक के सूरज का उजाला भी है। हरेक की अपनी रोशनी होती है और अगर ऐसा हो पाए तो सबके लिए वह रोशनी उपलब्ध होती है।

तविशा के चित्र जल रंगों के स्वभाव को बचाकर बनाए चित्र हैं। इन जल रंगों में चित्रकार की कूची को जहाँ जाना था वह है और कुछ वह भी है जहाँ जल के साथ रंग जाना चाहते थे।

क्या तुम हो मेरी दादी?

चित्र एवं कहानीः सानिका देशपाण्डे
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 130 रुपए
***ISBN:** 978-81-946928-8-1*
टाटा ट्रस्ट्स की बच्चों की उत्कृष्ट पुस्तकों की पराग ऑनर लिस्ट में चयनित

अवनि को पता नहीं है कि उसकी दादी नहीं रहीं। बस वह उन्हें दिख नहीं रही हैं। लोगों का आना-जाना बढ़ गया है। घर में क्या-क्या तो नहीं हो रहा है। मगर वह इन सब चीज़ों में अपनी दादी को ढूँढ रही है। उसे दादी की याद दोगुनी आती है... ऐसे समय में दादी होतीं तो वह बतातीं कि बात आखिर क्या है? पर दादी ही तो नहीं हैं। दादी के नहीं होने की बहुत मार्मिक कहानी...

इसके चित्र खुद लेखक सानिका देशपाण्डे ने बनाए हैं। उनके चित्र नहीं होने से भरे हैं। कहीं रंग हैं और आकार हैं और कहीं रंग और आकार खो गए हैं। नहीं होना और हर दिखती चीज़ में दादी का होना कितना खूबसूरत है... ये चित्र बताते हैं।

भाई तू ऐसी कविता क्यों करता है

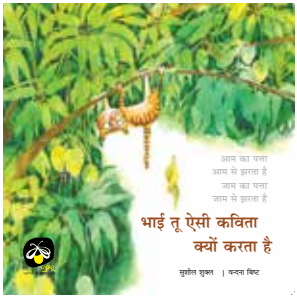

सुशील शुक्ल

चित्र : वन्दना बिष्ट

साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच

मूल्य : 150 रुपए

ISBN: 978-81-946928-6-7

टाटा ट्रस्ट्स की बच्चों की उत्कृष्ट पुस्तकों की पराग ऑनर लिस्ट में चयनित

ये छोटी-छोटी कविताएँ मायनों की ज़मीन की बहुत सारी जगह घेरती है, किस्से बादल के/ पतंग से सुनते हैं/ हम सपने बुनते हैं/ तो तारे सुनते हैं। किसी एक कविता के आधार पर कुछ कहो तो दूसरी के बारे में अनकहा रह जाता है। मसलन, इस कविता के बारे में जो कहेंगे वो सिर्फ इसी के बारे में होगा- अम्मी कहती है कि बैठा है, पर राशिद इस बात पर अड़ा है कि कौआ खड़ा है।

वन्दना बिष्ट ने इसमें पूरे पेज के बीस चित्र बनाए हैं। सब के सब अलग रंगत के। चित्रों में कविता का अर्थों की झिलमिलाहट का स्वभाव बरकरार रखा गया है।

हवा मिठाई

अरुण कमल

चित्र : भार्गव कुलकर्णी

साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच

मूल्य : 160 रुपए

ISBN: *978-81-946928-3-6*

टाटा ट्रस्ट्स की बच्चों की उत्कृष्ट पुस्तकों की पराग ऑनर लिस्ट में चयनित

हवा मिठाई नामचीन कवि अरुण कमल के निबन्धों का संग्रह है। ये निबन्ध जीने के लिए सबसे ज़रूरी चीज़ों प्रकाश, हवा, जल, आग, मिट्टी, आकाश, ध्वनि आदि पर हैं। सारे निबन्ध कवि संवेदना और गहराई से लिखे गए हैं। आप पढ़ेंगे तो पाएँगे कि ये निबन्ध कविता के कच्चे माल की तरह हैं। कविता बनना छोड़कर निबन्ध बनने लौट आए... ऐसा नहीं है बल्कि कविता की दिशा में चली जा रही भाषा और कथ्य के निबन्ध हैं।

विलक्षण चित्रकार भार्गव कुलकर्णी ने इस संग्रह के चित्र बनाए हैं। सिर्फ जलरंगों से उन्होंने पाँचों तत्वों को साकार किया है। कभी जल जल है, कभी आग, कभी मिट्टी और कभी आकाश...

जसबीर भुल्लर
चित्र : चन्द्रमोहन कुलकर्णी
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 215 रुपए
ISBN: 978-81-946928-5-0

कहानियाँ तो जसबीर भुल्लर के बचपन की हैं। एक देश के दो टुकड़े हो जाने के दौर की। मगर कोई कहानी किसी एक व्यक्ति की कहानी नहीं होती है। वह उस समय के उस शहर की कहानी हो जाती है। और कई बार तो पूरे देश की। और दुनिया की। वरना इन्हें पढ़कर आज सत्तर साल बाद पाठकों की आँखें नम न होतीं। वे पढ़ते-पढ़ते ज़रा-सा थम न जाते।

...जैसे कि वह वक्त थम गया था। लेखक के लिए। जब वो सिर्फ सात आठ साल के थे। यह खबर आगे जाकर इतनी सालेगी किसे पता था। ''एक और देश बनने वाला है।'' वो लिखते हैं कि मैंने सुना तो लगा कि एक और देश क्यों बननेवाला है मुझे पता नहीं था। बस इतना पता था कि जब कोई नया देश बनने वाला हो तो कुल्फी और खट्टी-मिट्ठी गोलियाँ मिलनी बन्द हो जाती हैं। और यह कोई अच्छी बात नहीं थी।

उस्ताद चित्रकार के चित्र गवाही देते हैं कि वे 1947 के साल में अमृतसर के उसी मोहल्ले में थे। वे लेखक के सबसे करीबी दोस्त थे। वे पूरा एलबम खोलकर रख देते हैं कि देख लो। इस तरह चित्रकार ने उस समय के अमृतसर के उस मोहल्ले को बचाया। किसी को बचाने के लिए गवाही देना चन्द्रमोहनजी को बखूबी आता है।

गर्मियों में एक बार

कहानी और चित्र: के. जी. सुब्रमण्यन
साइज़ : 9 x 8.5 इंच
मूल्य : 90 रुपए
***ISBN:** 978-81-945992-6-5*

के. जी. सुब्रमण्यन की यह किताब प्यासे कौए की पुरानी कहानी से सम्वाद करती कहानी है। उस कहानी में कँकर डाल कर तल का पानी ऊपर लाने वाला कौआ, इस कौए के परदादे का परदादा रहा होगा। इस प्यासे कौए को भी वो उपाय याद था। पर यह भी पता था कि कोई एक ही युक्ति हर बार काम नहीं आती। नई समस्या का हल नया पैदा करना होता है। के.जी. के चित्रों के कौओं की मुद्राएँ देखने लायक हैं।

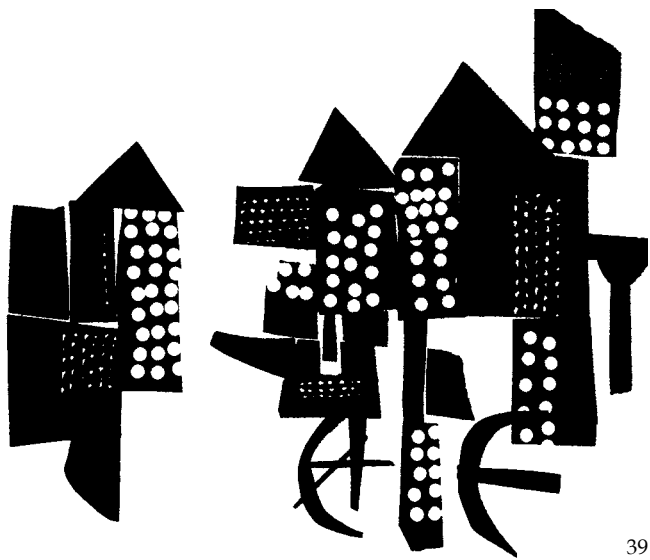

बिल्ली के रात दिन

के. जी. सुब्रमण्यन एक मँजे हुए कलाकार थे। कम रेखाओं में भरी पूरी दुनिया जागृत करने वाले। इस किताब में बिल्ली का गहरा अवलोकन है। बिल्ली के सपने हैं। जैसे सिर्फ बिल्ली ने नहीं उन्होंने भी बिल्ली को सपने में देखा है। सफेद और काला सिर्फ सफेद और काला होता नहीं है। के.जी. के श्वेत श्याम चित्रों में बिल्ली की कल्पना ऐसी है जिसमें तुम्हें हर वो रंगत दिखेगी जो तुम देखना चाहते हो।

कहानी और
चित्रः के. जी. सुब्रमण्यन
साइज़ : 9 x 8.5 इंच
मूल्य : 80 रुपए
ISBN: *978-81-945992-7-2*

राजा और आम इंसान

कहानी और चित्र: के. जी. सुब्रमण्यन
साइज़ : 9 x 8.5 इंच
मूल्य : 125 रुपए
***ISBN:** 978-81-945992-8-9*

के. जी. सुब्रमण्यन की कहानियाँ एक साथ कल्पना और विचार और रचना की तिकड़ी रचती हैं। यह एक राजा और आम इंसान की कहानी है। एक कहानी जो जगह-जगह सत्ताओं और उनसे पीड़ित लोगों की बुनियादी बातें सामने लाती है। वह राजा का राजापन और आम इंसान का आमपन इतनी सरलता से बताती है कि... ज़रा पढ़िए... एक बहुत पुराना देश था। और उस देश का एक राजा भी था। पर राजा कौन होता है? थोड़े ऊँचे कद का इंसान बस। और उसका एक सिंहासन था। पर सिंहासन होता क्या है? सिंहासन एक कुर्सी होती है। थोड़ी ऊँची कुर्सी बस।

रॉबी

कहानी और चित्र: के. जी. सुब्रमण्यन
साइज़ : 9 x 8.5 इंच
मूल्य : 90 रुपए
ISBN: 978-81-945992-5-8

के. जी. सुब्रमण्यन की इस कहानी में रॉबी है। पापा उसे बाबा बुलाते हैं, माँ गुलगुला। बहन बाबी बुलाती है और चाची उल्लू। रॉबी सोचता है, वह इसके अलावा भी तो बहुत कुछ हो सकता है। इस बहुत कुछ में कई मज़ेदार नाम शामिल हैं। पिता ने और माँ और तमाम लोगों ने रॉबी में जो पाया वे उसी नाम से उसे बुलाना चाहते हैं। पर रॉबी अपने बारे में क्या सोचता होगा? वह अपने तक पहुँचने के लिए किस नाम से खुद को पुकारता होगा?

शेर की नींद

कहानी और चित्रः मानिक्ज़ा मुसील
साइज़ : 11 x 11 इंच
मूल्य : 200 रुपए
ISBN: *978-81-945992-4-1*

शेर को नींद आ रही है। वह सोना चाहता है। पर वह जहाँ भी जाता है, वहाँ कोई न कोई शोर है। नींद न आने की वजह शोर है या कुछ और है? यह कहानी नींद आ जाने की सबसे बुनियादी बात खोजती फिरती है। शेर की नींद ढूँढकर पाठक एक चैन पाता है। इसी चैन से हमारी असल दुनिया के शेर चैन की साँस ले सकेंगे और चैन की नींद सो सकेंगे।

मानिक्ज़ा मुसील ने इस किताब के चित्र कपड़े, तागे आदि की कतरनों से बनाए हैं। कि कैसे हमारी दुनिया में बिखरी चीज़ों को ठीक से जोड़ा जा सकता है। एक धागे का टुकड़ा बचाकर शेर के एक बाल को बचाया जा सकता है। कहानियाँ उतनी कहानियाँ नहीं होती हैं जितनी हम उन्हें समझ लेते हैं। कौन होगा जिसे इस किताब को देख चिन्दियों से, कतरनों से कुछ बुनने का मन नहीं कर जाएगा?

एक चोर की चौदह रातें

अरुण कमल

चित्र : अतनु राय

साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच

मूल्य : 205 रुपए

ISBN: 978-81-945992-1-0

टाटा ट्रस्ट्स की बच्चों की उत्कृष्ट पुस्तकों की पराग ऑनर लिस्ट में चयनित

दुनिया की महान लेखिका सिमोन द बोउआर ने अपनी मशहूर किताब 'द सेकण्ड सेक्स' में कहा है कि स्त्री जन्म नहीं लेती है वह समाज की खास परवरिश में तैयार की जाती है। यही बात हम चोर के बारे में भी कह सकते हैं। चोर को भूख लगती है। मगर आमतौर पर उसका हिस्सा किसी और के पास होता है। उसे रहना होता है मगर आमतौर पर उसकी जगह किसी और ने हथियाई होती है... उसे जीना होता है मगर... और वह चोरी से जीता है... यह किताब एक चोर के भीतर की किताब है। उसके मन की। सब चोरों की नहीं। एक चोर के मन की... इसे पढ़ते जाएँगे और उसके प्रेम में पड़ते जाएँगे। वह चोर है मगर वह इतना भोला है कि वह आपका दिल चुरा लेगा। चोर के बारे में आपकी सारी बनी बनाई रटी-रटाई बातों को कूड़ा बना देगा। आप कितना कम जानते हैं दुनिया के बारे में... चोरों के बारे में... इस दुनिया को प्रेम की जगह में बदल देने के लिए हमें कवि अरुण कमल जैसे न्याय को इतना साफ देखने वाले चाहिए।

इस किताब के चित्र अतनु राय के हैं। वे इतने उस्ताद चित्रकार हैं कि कभी-कभी सिर्फ इतना कह देने भर से काम बन सकता है कि इन्हें अतनु राय ने बनाया है।

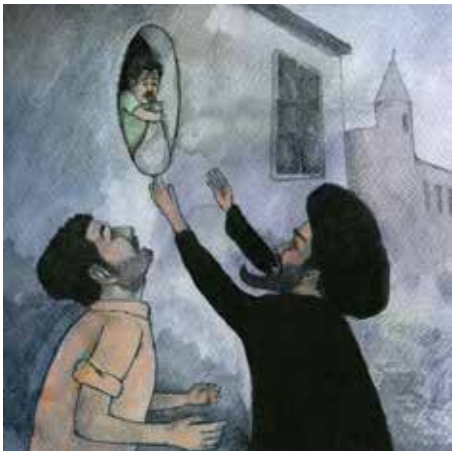

मन में खुशी पैदा करने वाले रंग

तेजी ग्रोवर
चित्र : तापोशी घोषाल
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 200 रुपए
ISBN: *978-81-945992-0-3*

इन्द्रधनुष जब किसी ने सबसे पहले पहचाना होगा तो उसमें कितनी ताज़गी होगी। एक रंगों के गुच्छे का पहला ताज़ा शब्द। उस ताज़गी को वापिस लाकर कहूँ तो यह किताब विधाओं का इन्द्रधनुष है। किताब में कविता, कहानी, संस्मरण, हाइकू और यात्राएँ हैं। लेकिन सारे रास्ते जीवन की तरफ आते हैं। गिरे पत्तों के रंग से कोई पेड़ का चित्र बनाए तो कैसा हो? इसमें सतपुड़ा में खिलते साल के फूल हैं और जाने कहाँ जा रहीं चींटियों की खबर है। धूप और बैलगाड़ी नाम के दो गाँवों की कहानी है। जो असल में कविता है। कवि चित्रकार की चिट्ठी पढ़ो तो लगता है कि वे सिर्फ चिट्ठी लिखें... जैसे कि उनकी कविताएँ पढ़कर लगता है...

तापोशी घोषाल इस बात को बखूबी समझती हैं और इस किताब को वहाँ ले जाकर दिखाती हैं जहाँ से ये किताब आई होगी... सतपुड़ा, पेड़, चींटियाँ, धूप और बैलगाड़ी... सबके सब चित्रों में सजीव हो जाते हैं।

नीला दरवाज़ा

पुनर्लेखनः मंगलेश डबराल
चित्र : कविता सिंह काले
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 250 रुपए
***ISBN:** 978-81-945992-2-7*

इस नीले दरवाज़े के अन्दर आपको दूर देश की लोककथाएँ मिलेंगी। इनमें पेड़ बात करते हैं और घर जाते बच्चों को पक्षी रास्ता दिखाते हैं। लोककथाओं में किसी घर का पता यह भी हो सकता है कि उसके सामने एक सनोबर का पेड़ है, जिस पर बैठकर हर सुबह दो पक्षी गीत गाते हैं। और रात में उसकी डालियों के बीच से एक चमकीला तारा दिखाई देता है। इस संग्रह में आठ लोककथाएँ हैं, जिनका पुनर्लेखन सुपरिचित कवि मँगलेश डबराल ने किया है।

चित्रकार कविता सिंह काले के चित्र देखकर यह पढ़ने की ज़रूरत नहीं पड़ती है कि आप किस देश की लोककथा को पढ़ने जा रहे हैं। नीला दरवाज़ा उनसे अच्छी तरह खुला है।

नींद किस चिड़िया का नाम है?

कविः राजेश जोशी
चित्र : भार्गव कुलकर्णी
साइज : 7.5 x 10 इंच
मूल्य : 160 रुपए
***ISBN:** 978-81-945992-3-4*

नदियों से बातें करना चाहता हूँ इस समय / पर टेलिफोन पर यह मुमकिन नहीं / उन दरख्तों का भी मेरे पास कोई नम्बर नहीं / जो अकसर रास्तों में मिल जाते हैं / परिन्दों के पास कोई मोबाइल होगा / इसकी कोई उम्मीद नहीं... पर कविताएँ नदियों, दरख्तों और परिन्दों की भाषा का इशारा देती हैं। ये कविताएँ चिड़ियों से, पेड़ों से बातें करने की भाषा भी रचती हैं। हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि राजेश जोशी की कविताओं का यह संग्रह किशोरों के लिए ही नहीं सबके लिए बेमिसाल संग्रह है। भाषा की बरत हो या कहन या बात सब हमें एक विलक्षण अनुभव की तरफ ले जाते हैं। वे देखते हैं तो लगता है कि अपने घर के ही पेड़ को कितना कम देखा।

चित्रकार भार्गव कुलकर्णी के जल रंग से बने चित्र इन कविताओं में इस तरह पिरोए हुए हैं कि लगता है कि ये कविताएँ और चित्र एक साथ बने हैं।

ग्यारह रुपए का फाउण्टेन पेन

अमित दत्ता
चित्र : तापोशी घोषाल
साइज़ : 7.25 x 9.25 इंच
मूल्य : 175 रुपए
ISBN: *978-81-950639-3-2*

बाहर बहुत छोटा है और मन का संसार बहुत विराट। बाहर जो थोड़ा कुछ है वह भी मन के संसार से है। बाहर नीम का पेड़ दिखता है तो मन में पेड़ों का संसार हिलोर उठता है। नीम का पेड़ जो दिख रहा है वह तो महज़ आज का है। फिल्मकार अमित दत्ता की कहानियाँ 'आगे क्या होगा' के रोमांच भर पर नहीं टिकी हैं। पाठक कहानी में जहाँ है वहीं उसे आनन्द और रोमांच है। कथा में पाठक को अर्थों के कई-कई रास्ते हासिल होते हैं। उसमें कुछ बेजान नहीं है। इनमें पात्र काल के पार चले जाते हैं। वे एक साथ दो जगहों पर होते हैं। ये कहानियाँ यकीन दिलाने की जगह यकीन हिला देती हैं। और इस तरह भी ये कहानियाँ कहानियाँ हैं।

जो तलाश में निकलना चाहते हैं वे इन कहानियों में डूब जाएँगे। तापोशी घोषाल के चित्रों ने इन कहानियों को उनकी ज़मीन दी है। उनके चित्रों में वही तलाश की उदासी कायम है जो कहानियों की रीढ़ में है।

पहली उड़ान

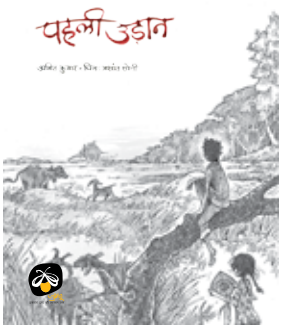

अमित कुमार
चित्र : प्रशान्त सोनी
साइज : 7.25 x 9.25 इंच
मूल्य : 190 रुपए
ISBN: *978-81-946928-2-9*
टाटा ट्रस्ट्स की बच्चों की उत्कृष्ट पुस्तकों की पराग ऑनर लिस्ट में चयनित

जंगल की इन कहानियों को पढ़ते हुए अकसर आपके रोंगटे खड़े हो जाएँगे। वे आपको उस घटना के इतने पास ले जाती हैं कि आपके सिर पर लगातार एक खतरा मँडराता रहता है। मगर यही नज़दीकी हमारे आसपास फैले इस जादुई संसार के प्रेम में भी हमें डाल देती है। कहानियों में हाथी से गिरे आदमी को बचाने के लिए हम मन में प्रार्थना करते हैं और सच के आदमी को बचाते हैं। इन कहानियों में भालू के बच्चे को उठाने गए लोगों से भालू की माँ की भिड़न्त है तो करैत से लेकर बाघ, तेंदुए, हाथी, पक्षियों की शानदार दुनिया है। इस रोमांच के सफर में भाषा उतनी ही आती है जितना कुछ बताने उसे आना ही पड़ता है।

प्रशान्त सोनी के चित्रों को देखेंगे तो लगेगा कि चित्रकार लेखक के साथ-साथ हर उस जगह था। इसलिए तो वे बता पाते हैं कि बाघ वाली घटना में मैदान में घास कितनी बड़ी थी और उस घास में कौन--सा कीड़ा साँस दबाए बैठा था।

नींद पहले किस आँख में आती है?

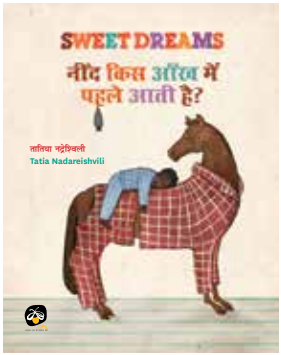

तातिया नद्रेश्विली
चित्र : तातिया नद्रेश्विली
साइज़ : 9 x 11 इंच
मूल्य : 160 रुपए
ISBN: *978-81-946928-0-5*

छोटे बच्चों के लिए एक स्वप्निल चित्रकथा। हिन्दी और अँग्रेज़ी दोनों में इसकी कहानी है। कहानी कुछेक शब्दों की ही है। ज़्यादातर कहानी चित्रों में है।

कवि अरुण कमल कहते हैं कि नींद मनुष्य पर मनुष्य का विश्वास है। इसलिए नींद आने के लिए बचपन में माँ और पिता लोरियाँ सुनाते हैं। शरीर पर एक स्पर्श की थाप देते रहते हैं कि नींद के साथ चले जाओ। हम तुम्हारे साथ हैं। छोटे बच्चों से लेकर बुज़ुर्गों तक को यह किताब मज़ा देगी। इसलिए भी कि यह चित्रों में थामी गई है। जैसे, सामने खड़ी एक साइकिल सबके देखने के लिए है। तातिया नद्रेश्विली की मूल जॉरिजियाई भाषा की इस किताब के चित्र अद्भुत हैं। कवर पर उन्होंने बच्चे को घोड़े पर सोता हुआ दिखाया है। घोड़े बेचकर सोना एक तरफ और नींद के घोड़े पर सवार हो जाना एक तरफ।

मेरा बायसन

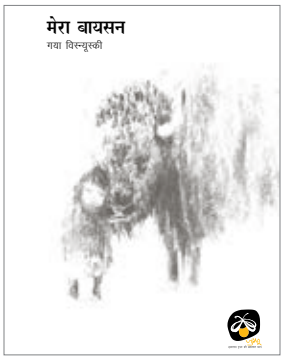

गया विस्न्यूस्की
चित्र : गया विस्न्यूस्की
साइज : 7.50 x 10.50 इंच
मूल्य : 185 रुपए
ISBN: *978-81-946928-1-2*

यह कहानी है एक बायसन और एक छोटी बच्ची के प्रेम की। यह किताब कुछ इस तरह बनी है कि इसे कोई भी आनन्द के साथ पढ़ सकता है। यह एक तरह से विदागीत है। हमारा जीवन विदाइयों से भरा है।

चित्रकार ने सारी कहानी चित्रों के माध्यम से ही कह दी है। शानदार वादियों के चित्र हैं। बायसन और बर्फ और वादियाँ। और इन वादियों में हर साल बायसन की प्रतीक्षा करती एक नन्ही बच्ची। पहली बार उसे इस बायसन से माँ ने मिलवाया था। ... हाथी और बायसन हमारी दुनिया के दो सबसे शक्तिशाली जीव हैं। हाथी हम सबका बहुत लाड़ला है। बायसन के लाड़ की यह शायद पहली पहली कहानी है। इतने सुरीले चित्र हमारी दुनिया में बहुत कम हैं। मूल फ्रांसीसी में लिखी इस किताब के चित्र भी गया विस्न्यूस्की के ही हैं।

एक कहानी

विनोद कुमार शुक्ल
चित्र : अतनु राय
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 185 रुपए
ISBN: *978-81-950639-2-5*

विख्यात रचनाकार विनोद कुमार शुक्ल के इस कहानी संग्रह में सात कहानियाँ हैं। वे कुछ कहते हैं तो भाषा में एक नई सम्भावना भर जाती है। कहन की रंगतें पैदा हो जाती हैं। नये-नये देखने के रास्ते बन जाते हैं। एक नाव हमने बनाई। सूरज ने उसकी परछाई बनाई। विनोदजी इस नाव की परछाई में बैठने की सम्भावना खोलते हैं और इंसान की परछाइयों को डूबने से बचाते हैं। कि किसी चीज़ की परछाई तक को बचाया जाना चाहिए। ज़मीन में जैसे एक बीज होते होते एक बड़े पेड़ में बदल जाता है। इसी तरह विनोदजी की कहानियाँ एक छोटी-सी बात से शुरू होती हैं और देखते ही देखते एक आकाश बना लेती हैं। यह एक और किताब है जो बच्चों और बड़ों के साहित्य के भेद को खतम कर देती है। यह किताब किशोर उम्र के पाठकों के साथ-साथ सबके लिए है।

चित्रकार अतनु राय ने इस किताब के चित्र बनाए हैं। चित्रों में वही जादू दिखता है जो विनोदजी की कहानियों में आम है।

तुम भी आना

नवीन सागर

चित्र : एलन शॉ

साइज : 8.50 x 11 इंच

मूल्य : 290 रुपए

ISBN: *978-81-945992-9-6*

टाटा ट्रस्ट्स की बच्चों की उत्कृष्ट पुस्तकों की पराग ऑनर लिस्ट में चयनित

नवीन सागर उन विलक्षण कवियों में से हैं जो बच्चों के लिए भाषा के खेल रचते हैं। उनकी भाषा में बच्चों की चपलता तथा तोड़-फोड़ सब है। उनकी कविताएँ बहुत कुछ गति पर भी टिकी हैं। उन्हें आराम से नहीं पढ़ सकते हैं। वे पढ़ने वाले को अपनी गति में खींच लेती हैं। रात का ऐसा वर्णन बच्चों के हिस्से कहाँ आता है - सोए पेड़, पत्तियाँ सोईं, फूल सो गए सारे। ऊँघ रही बत्तियाँ, पड़े हैं जहाँ-तहाँ अँधयारे...। ऐसी नायाब कविताओं के गुच्छे हिन्दी में गिने-चुने ही होंगे। इस किताब में जल रंगों का जादू भी है। जल रंग ऐसे हैं जैसे कि जल होता है और जैसे कि रंग होते हैं। चित्रकार जैसे दोनों की चाल जानते हैं। वे चुपचाप उनके साथ चले हैं। चित्रों ने कविता से मिली गति, चपलता, खेल सब कुछ सहेज लिया है। एलन शॉ और नवीन सागर की यह जुगलबन्दी काश कि होती ही रही आती।

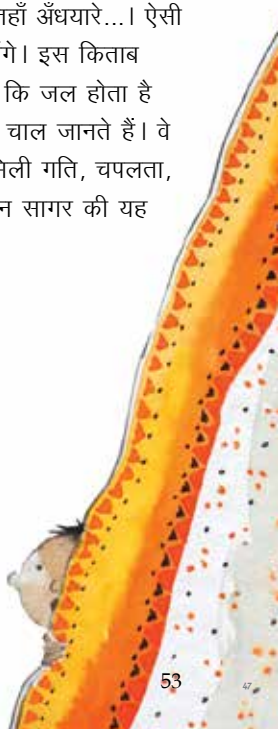

केरल के केले

प्रयाग शुक्ल
चित्र : देबब्रत घोष
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 125 रुपए
ISBN: *978-81-950639-4-9*

प्रयाग शुक्ल सरलता के कवि हैं। हाथी के हाथीपन की बयानी हैरत में डाल देती है। धम्मक धम्मक आता हाथी, धम्मक धम्मक जाता हाथी। हाथी इतना बड़ा है कि उसका आना और जाना एक झटके में नहीं हो जाता। वह आता है तो थोड़ी देर आता रहता है। वह जाता है तो जाता रहता है। वह आता है तो ज़मीन में एक धमक पैदा होती है। जब हिन्दी की बाल कविताएँ तुकबन्दी पर इतनी टिकी होती हैं कि उनके शब्दों की उलटफेर से उनके अर्थों पर कोई फर्क ही नहीं पड़ता तब यह कविता बहुत उम्मीद भरती है कि इसमें हाथी की जगह कोई और प्राणी नहीं आ सकता है। ऐसी सरलता की कहानियाँ प्रयागजी की बाल कविताओं में आम है। और यही खास बात है। चित्रकार देबब्रत घोष ने इसके उतने ही सरल चित्र बनाए हैं। ये चित्र कविताओं के बाहर कोई नई चीज़ बताने की जगह कविताओं में ही खोए लगते हैं। जैसे, सुनी हुई बात को एक बार और सुनकर रस लेना चाहते हैं।

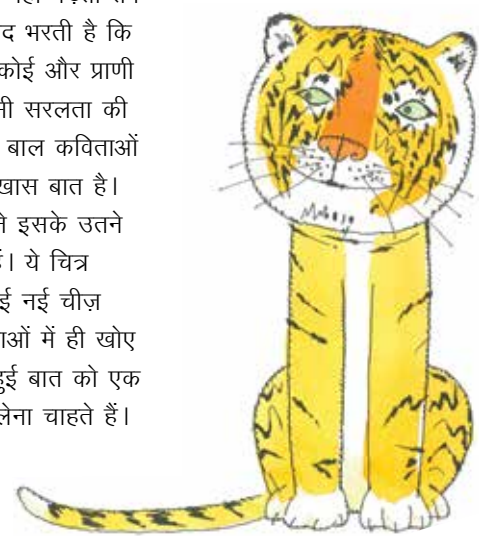

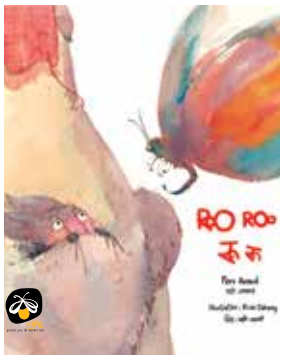

पारो आनन्द
चित्र : ऋषि सहानी
साइज : 11 x 11 इंच
मूल्य : 170 रुपए
ISBN: *978-93-912180-9-6*

पारो आनन्द की यह चित्रकथा हिन्दी और अँग्रेज़ी दोनों में है। सबसे छोटे बच्चों के लिए अकेलापन जैसी समस्या से यह शानदार कहानी शुरू होती है।

बच्चे जाने कितनी मुश्किलों से अकेले-अकेले चुपचाप जूझते रहते हैं। ऐसी कहानियाँ उनके लिए एक साथ पैदा करती हैं। रू रू कँगारू का बच्चा है। वह माँ की थैली में रहता है। अकेला। उसे रोज़-रोज़ नए दोस्त मिलते हैं और वह माँ से उन्हें थैली में आने को मनाता रहता है। फिर एक दिन कुछ बहुत दिलचस्प होता है।

ऋषि सहानी ने अपने चित्रों से कँगारू तथा हाथी, शुतुरमुर्ग, साँप, कीड़ों जैसे तमाम जीवों के अद्भुत चित्र बनाए हैं। हमारे जैसा कोई और भी है... बहुत साथ देता है। कँगारू की कहानी कँगारू की होते हुए भी इसीलिए हमारी कहानी होती है कि वह एक ऐसा व्यक्ति पैदा करती है जो हमारी तरह है। जिसे दोस्त चाहिए।

दिल में बच्चा है जी...

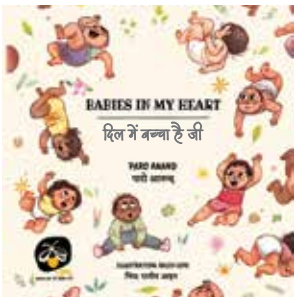

पारो आनन्द
चित्र : राजीव आइप
साइज़ : 8.5 x 9.5 इंच
मूल्य : 120 रुपए
ISBN: 978-93-912180-8-9

हिन्दी-अँग्रेज़ी में कही यह चित्रकथा मूल रूप से सबसे छोटे बच्चों के लिए है।

एक बच्चे का आना दुनिया की कितनी कमाल घटना है। कैसे एक बच्चे के आने से परिवार बनते हैं। तरह-तरह के।

यह कहानी सबसे छोटे बच्चों के लिए है और दुनिया के सबसे बड़े, अक्लमन्द लोगों के लिए भी है। वसुधैव कुटुम्बकम यानी समूची धरती एक परिवार है। यह किताब बताती है कि इस धरती पर कितने तरह के परिवार हो सकते हैं।

इसके चित्र राजीव आइप ने बनाए हैं। उनके चित्र बहुत उदार हैं। उनमें एक इत्मीनान है। फ़ुरसत है। धीरज है। एक बच्चा पूरे चित्र में बहुत छोटी जगह है मगर यह पता चलता है कि बाकी पूरा दृश्य उस बच्चे के इर्दगिर्द घूम रहा है। पूरे दृश्य में एक बच्चापन है।

उनके चित्रों के किरदार इतने विशेष होते हैं कि वे आपको आम जीवन में मिल जाते हैं। उनके किरदारों के कपड़ों में छोटी छोटी छींटों तक का पता चलता है। कोई पेंट पूरा खुला पहनता है कि मोड़कर...

बीस कचौड़ी पूड़ी तीस

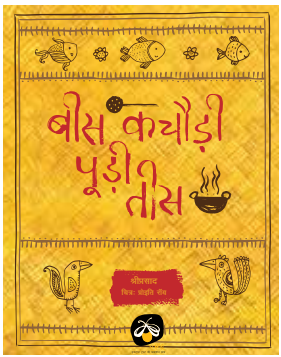

श्रीप्रसाद
चित्र : प्रोइति रॉय
साइज : 7.25 x 9.25 इंच
मूल्य : 140 रुपए
ISBN: *978-81-950639-9-4*

बाल कविताओं का अनूठा संग्रह।

श्रीप्रसादजी हिन्दी के बेजोड़ कवि हैं। बच्चों के लिए उन्होंने अद्‌भुत कविताएँ लिखी हैं। इस संग्रह में उनकी कुछ चुनिन्दा कविताएँ हैं।

उनकी कविताओं में अकसर कोई कहानी चलती है। वे कविता में भी कहानी की भाषा बनाए रखते हैं। कविताओं में वे अकसर एक सरल वाक्य का ढाँचा बनाए रखते हैं - एक हमारे दादा जी हैं। एक हमारी दादी। दोनों ही पहना करते हैं बिलकुल भूरी खादी। हिलते हुए हाथी पर जब वे कविता लिखते हैं तो वे भाषा को भी हिला देते हैं...शब्द को हिला देते हैं...हल्लम हल्लम हौदा, हाथी चल्लम चल्लम...।

पौधा तो जामुन का ही था, लेकिन आए आम...जैसी कविता दुनिया में बेहद कम हैं। श्रीप्रसाद जी की कविताओं के इस तिलिस्म को प्रोइति रॉय ने बनाए रखा है। उनके रंग जादुई हैं। इस किताब के चित्र में हमें कविताओं के किरदारों से मिलने का एक मौका है। जैसे, बड़ी बुआ, दादी, दादा, पुलिसवाला से लेकर बिल्ली और चूहा तक से मिलने का मौका है।

जंगल के बीच ट्रेन खड़ी थी

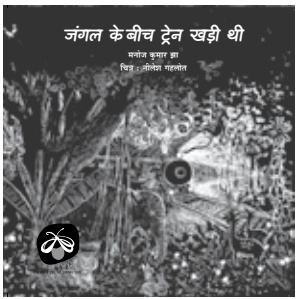

मनोज कुमार झा
चित्र : नीलेश गहलोत
साइज़ : 6 x 6 इंच
मूल्य : 90 रुपए
ISBN: *978-93-928731-2-6*

कवि मनोज कुमार झा का नायाब बाल कविता संग्रह।

खेत मालिक का है और न परधान का...

इन कविताओं में लोक साहित्य की गंध है। दो टूक बात।

सत्ताइस कविताओं का गुच्छा है। छत पर बकरी आने के सामान्य दृश्य से लेकर - एक नदी फूली कुप्पी पड़ी थी - तक का विस्तार है। सभी कविताएँ एक-दो दफे में पाठकों को याद हो जाएँगी। नीलेश गेहलोत के रेखांकन भी कम बोलते हैं। छोटी-सी जगह में रहते हैं। इन छोटी कविताओं के पड़ोसी की तरह।

पानी उतरा टीन पर

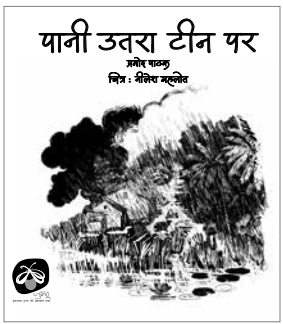

प्रमोद पाठक
चित्र : नीलेश गहलोत
साइज : 6 x 6 इंच
मूल्य : 40 रुपए
***ISBN:** 978-93-912184-3-0*

सुनते थे कि पानी गिरता है। मगर कवि ने देखा पानी उतर रहा है। इसीलिए तो वह पहले आसमान से टीन पर आया, फिर टीन से पत्तियों पर, फूलों पर, फिर ज़मीन पर आया। टीन पर पानी उतरने के संगीत की याद भी इस कविता में है। जैसे, पत्तियों पर पानी के गिरने के दृश्य की थरथराहट है। देखने वाला बारिश को इतना थमकर देख रहा है कि वह उसे उतरते हुए देख पा रहा है।

नीलेश गेहलोत के श्वेत श्याम चित्र भी कविताओं की तरह लगते हैं। जैसे, दृश्यों की कोई लिपि हो।

अम्मा

सुशील शुक्ल
चित्र : कविता सिंह काले
साइज़ : 6 x 6 इंच
मूल्य : 60 रुपए
ISBN: *978-93-928730-2-7*

चित्रकार कविता सिंह काले की इस चित्रकथा से मार्कवेज़ की एक कहानी की याद आती रहती है। इस किताब में बस एक छोटा-सा सम्वाद है। सारी कथा चित्रों में चलती है। जैसे, हम मेले गए हों। शायद अकेले हैं। और उसे देखते घूम रहे हैं। भाषा सुनाई देने वाली नहीं है। दिखाई देने वाली है।

इसलिए एक जगह चित्रकार ने एक अनोखा दृश्य रचा है। इसमें बच्चा बहुत बड़ा हो गया है। शायद मन में वह इतना बड़ा होना चाहता है कि मेले में खोई अपनी माँ को देख सके। मेले में खोई माँ को माँ से खोया बच्चा ढूँढ रहा है। उसे लगता है कि माँ के साथ-साथ उसके ठीक आसपास एक खाली जगह लोगों को दिख रही होगी। जहाँ वह खोने से पहले चल रहा था। एक ऐसी किताब जो बच्चों को और बड़ों को मोहित कर छोड़ेगी।

टाउल टापुल

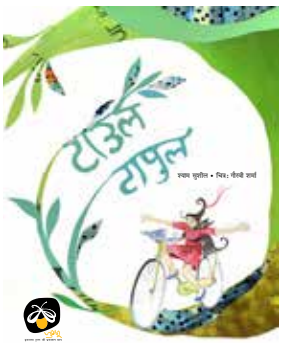

श्याम सुशील
चित्र : गौरवी शर्मा
साइज : 7.25 x 9.25 इंच
मूल्य : 110 रुपए
***ISBN:** 978-81-950639-7-0*

सूरज उतरा पानी में, आता नहीं था तैरना, डूब गया नादानी में...

इस कविता को सुनकर पढ़ने वाले के चेहरे पर एक मुस्कान तैर जाती है। इस किताब में इस तरह की दसियों मुस्कानें हैं। परात में पानी, पानी में आकाश, आकाश में तारे, तारे कितने पास।

इस परात के अर्थ लगाते हम कई बार - एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा...तक भी पहुँचते हैं और एक दुरस्ते पर आ जाते हैं। कविता की भाषा हमें अर्थों के चौराहे पर खड़ा न करे तो और क्या करे?

चित्रकार गौरवी शर्मा ने इन कविताओं के लिए दृश्यों का संसार रचा है। इन चित्रों के रंग बहुत ताज़े हैं। जैसे कि वे बस पहली बार देखे जा रहे हैं। उन पर देखने की धूल अभी चढ़नी है। और वे बस अनदेखे संसार से आ आ ही रहे हैं।

कुएँ में बिल्ली / Kitty in the Well

मंजरी चक्रवर्ती
चित्र : मंजरी चक्रवर्ती
साइज़ : 6 x 6 इंच
मूल्य : 50 रुपए
ISBN: 978-93-912185-8-4
978-93-912187-4-4

ड्रैगनफ्लाई पर झपट्टा मारा और बिल्ली एक कुएँ में जा गिरी। बिल्ली को कुएँ से बाहर लाना है। सब अपनी कोशिश कर रहे हैं। तभी एक लड़का आता है। वह कुएँ में उतरता है। बिल्ली को पता था कि कुएँ से बाहर कैसे आना है। वह अपने आप कुएँ के बाहर आ गई। यह पूरी किताब एक सुन्दर दृश्य है। इसमें बिल्ली गिरती है और वापिस भी आ जाती है। इस मुख्य घटना के आसपास जो होता है वह कहानी की मुख्य घटना हो जाती है। कि बिल्ली को बचाकर हम उस एक चीज़ को बचाते हैं जिसे 'भरोसा' कहते हैं। इस कथा में बिल्ली ने अपने को बचा लिया था। बाकी लोग उसी एक चीज़ को बचा रहे थे।

चित्रकार और लेखक मंजरी चक्रवर्ती ने इस आम-सी लगने वाली, आशा भरी कहानी को सादगी से इस किताब में ढाला है।

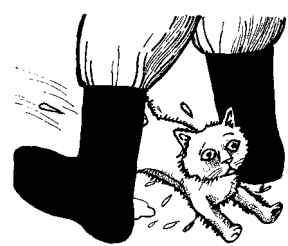

Philosophy for Children / *सोचना, पढ़ना और लिखना*

सुंदर सरुकाय
चित्र : प्रिया कुरीयन
साइज़ : 6 x 6 इंच
मूल्य : 200 रुपए
ISBN: *978-93-912182-7-0*
978-93-928739-6-6

प्रो. सुन्दर सरुक्कई अपने चिन्तनशील लेखन के लिए जाने जाते हैं। सोचना, समझना, पढ़ना-लिखना आदि तमाम विषयों पर विचार करती सामग्री बच्चों के लिए बहुत कम है। अकसर इस तरह की सामग्री सरलीकरण का शिकार हो जाती है।

इस किताब की ताकत यही है कि इसकी सामग्री भरी पूरी है। यह किताब निष्कर्षणात्मक नहीं है। इसमें किसी विषय पर विचार की एक यात्रा है। इसमें लेखक अकसर पाठक को देखने को आज़ाद छोड़ता है। पाठक अपने अनुभवों के सहारे इस किताब को खोलता जाता है।

चित्रकार प्रिया कुरियन ने इस किताब की तासीर को बरकरार रखकर चित्रांकन किया है। शब्दों के एक सवाल की जुगलबन्दी करता चित्रों का एक सवाल है। खासकर किशोर उम्र के पाठकों के लिए एक ज़रूरी किताब।

जिसके पास चली गई मेरी ज़मीन

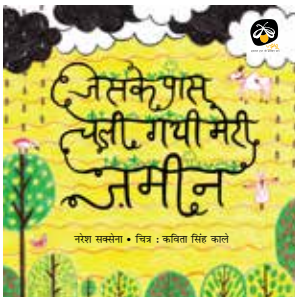

नरेश सक्सेना
चित्र : कविता सिंह काले
साइज़ : 6 x 6 इंच
मूल्य : 50 रुपए
***ISBN** : 978-93-928731-0-2*

बच्चे भी हमारी ही दुनिया में रहते हैं। इसलिए उन्हें हमारे सारे मसलों को जानने का हक है। शरीक होने का हक है। इस दुनिया में रोज़ बेदखली बढ़ रही है। लोग मारे-मारे फिर रहे हैं।

यह किताब एक कविता पर आधारित चित्रकथा है। दूर से देखेंगे तो यह कविता एक किसान की आवाज़ लगेगी। लेकिन इसके भीतर का संसार अलग है। आमतौर पर कविताओं में यही तासीर दिखती है।

जिसके पास चली गई मेरी ज़मीन। उसी के पास अब मेरी बारिश भी चली गई...

सुनते हैं तो जैसे एक कील धँस जाती है मन में। हम उस इंसान के एकदम पास आकर खड़े हो जाते हैं, जिसकी आवाज़ इस कविता में है।

कविता सिंह काले के लोकचित्रों की परम्परा के चित्रों से कविता का अनुभव और गहरा गया है।

गमले में जंगल / The Jungle in a Pot

विनोद कुमार शुक्ल
चित्र : चन्द्रमोहन कुलकर्णी
साइज़ : 6 x 6 इंच
मूल्य : 60/75 रुपए
ISBN: *978-93-928730-4-1*
978-81-9705-307-8

विनोद कुमार शुक्ल भाषा में महीन काम के लिए जाने जाते हैं। वे मुश्किल से मुश्किल बातों को बहुत आसानी से कह देते हैं। और इस तरह भाषा का दामन बड़ा करते हैं। उसमें कहे जाने के लिए और सुने जाने के लिए एक बात और टाँक देते हैं।

हमें पर्यावरण बचाना है, पेड़ बचाना है जैसे चलताऊ नारों से एक कवि का काम नहीं चलता। इसमें कहन और विचार की ताज़गी है। बाहर पेड़ हैं, नदी है, जीव जन्तु हैं और दूसरे लोग हैं। सब कुछ तो बाहर ही है। तो बाहर को बचाया जाए। यह किताब एक अदुभुत कविता को करीने से पेश करती है।

चन्द्रमोहन कुलकर्णी के चित्र इस तरह हैं कि लगता है दोनों रचनाकारों ने साथ बैठकर रचना के दो रास्ते लिए हैं।

टके थे दस

लोककथा
चित्र : अतनु राय
साइज : 4 x 5 इंच
मूल्य : 50 रुपए
ISBN: 978-81-950639-6-3

यह लोकगीत एक दो दफे पढ़ते ही याद हो जाने वाला है। भाषा सीखने को मज़ेदार बनाने के लिए एकदम मुफीद है। इस गीत में दस टके हैं और उन्हें दस कामों में खर्च किए जाने का खेल है। लोकगीतों में भाषा इतनी सरल होती है कि वह भव्य हो जाती है। टके थे दस।

सेठजी की छूट गई बस।
टका पकड़ाई का दीन्हा।
टका पकड़ाई का दीन्हा जी।

पकड़ाई शब्द जैसी रौनक वाला दूसरा शब्द सोचिए। यह गीत ऐसे कुछ और शानदार शब्दों को भी सामने लाता है। भाषा में खेल रचने को उकसाता है। इस खेल को आगे बढ़ाकर कोई कह सकता है -

टके थे बीस। टके थे बीस।
सेठजी जाते विदेस।
टका उड़वाई का दीन्हा...

टके से हमें एक कालजयी नाटक की याद भी आती है-

अँधेर नगरी चौपट राजा
टके सेर भाजी टके सेर खाजा

ताँबे का टका कभी दो पैसे के बराबर होता था। इस किताब के चित्र बहुत चुटीले हैं। उन्हें मशहूर चित्रकार अतनु राय ने बनाया है।

पेड़ों की अम्मा

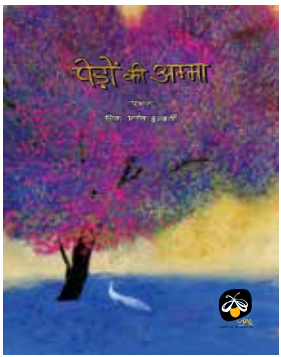

प्रभात
चित्र : भार्गव कुलकर्णी
साइज़ : 7.6772 x 9.6457 इंच
मूल्य : 215 रुपए
***ISBN:** 978-93-928734-2-3*

कवि प्रभात की कविताओं का यह गुच्छा ज़रा बड़ी कविताओं का है। वो छोटे बच्चे भी इन कविताओं का लुत्फ उठा सकते हैं जो पढ़ना सीख गए हैं। ये कविताएँ कविताएँ हैं। कविताएँ हैं मतलब इनमें ताज़ा भाषा है, ताज़ा कहन है, दृश्यों की ताज़गी है, बात और नज़रिए की ताज़गी है। एक टिटहरी बोल रही है, भोर की राहें खोल रही है। टिटहरी का बोलना आम बात है। लेकिन कविता के एक छोटे से टुकड़े ने उसमें कितने ही नए मायने भर दिए हैं। उसे खास बना दिया है। पहली पंक्ति उतनी ही आम रही जैसा कि टिटहरी का बोलना है। दूसरी पंक्ति ने उस पहली पंक्ति को नए अर्थों से भर दिया। भोर की राह खोलने का क्या मतलब है?

क्या टिटहरी जहाँ बोल रही है वहाँ से आवाज़ का एक पुल बन रहा है सुनने वाले के कानों तक! ऐसी कितनी ही उधेड़बुनें कविताएँ हमारे भीतर छोड़ जाती हैं।

इस संग्रह के चित्र भार्गव कुलकर्णी ने बनाए हैं। ये चित्र कविताओं का एक इर्दगिर्द बनाते हैं। पानियों की गाड़ियों में वे एक कल्पना सामने लाने की कोशिश करते हैं कि पानियों की गाड़ियाँ कैसी दिखती होंगी। जलंरगों के शानदार नमूने।

स्याणा

अनिरुद्ध उमट
चित्र : तविशा सिंह
साइज़ : 6 x 6 इंच
मूल्य : 60 रुपए
ISBN: 978-93-928735-2-2

कतारिए व्यापारियों का माल ऊँटों पर लादे निकले हैं। रास्ते में एक ऊँट रूठ जाता है। बैठ जाता है। अड़ जाता है। लाख कोशिश खाड़ैती करता है पर बात नहीं बनती तो नहीं ही बनती। कतारियों की और ऊँट की और ऊँट की और कतारियों की यह नायाब कहानी है।

इस किताब की भाषा ऐसी है कि कहानी से परे उसकी अपनी चमक है। कहानी पढ़ते हुए बार-बार भाषा पर लौटना नहीं होता है। यह कविता में अकसर होता है। यह कहानी हिन्दी बाल साहित्य के लिए एक तोहफा है।

तविशा सिंह ने इसके चित्र बनाए हैं। चित्र कम कम हैं। वे भाषा की भव्यता में सफेद फूलों की तरह चुपचाप टँके लगते हैं। जैसे, खाड़ैती और रूठे ऊँट के साथ आसमान में चाँद हो।

तीसरा दोस्त

विनोद कुमार शुक्ल
चित्र : अतनु राय
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 50 रुपए
ISBN: 978-93-928731-7-1

दो दोस्त हैं। उनकी दोस्ती ऐसी है कि एक की माँ दूसरे की माँ से कहती है, ''मुझे आपका बेटा मेरे बेटे की तरह लगने लगा है।'' वे कभी साथ न होते तो घर वाले पूछते कि उनका झगड़ा हो गया? एक बार जब एक दोस्त अपने दोस्त से नहीं मिलता है तो विनोदजी के लेखन का कमाल देखिए - उसी की चप्पल पहनकर मैं उसे ढूँढने निकला। मैं अपने मन से और चप्पल के मन से चल रहा था कि चप्पल मुझे वहाँ पहुँचा देगी जहाँ वह जाता है।

इसी समय कहानी में तीसरे दोस्त का राज़ खुलता है। एक नायाब कहानी। इसके बहुत ही प्रेमिल चित्र अतनु राय ने बनाए हैं। दो दोस्तों के साथ के चित्र, उनकी मुद्राएँ उतनी ही लोच से भरी हैं जितनी लचीली उनकी दोस्ती है। भाषा भी वाक्यों में झूल-झूल जाती है। पूर्ण विराम उतना सीधा नहीं रहता जितना वाक्य के बाद वह आमतौर पर रहता है।

गुलज़ार
चित्र : एलन शॉ
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 175 रुपए
ISBN: 978-93-928732-8-7

गुलज़ार साब ने लकड़ी की काठी से लेकर 'जंगल जंगल बात चली है' जैसी शानदार कविताएँ लिखी हैं। इस किताब में वही रंगत, वही खेल, वही ताज़गी, वही चाल और एक आज़ाद भाषा है। 'एक बिजली की नोंक लगी ऊनी बादल को, उधड़ के तागा-तागा बादल बरस गया' ...एक पूरा दृश्य वे दस-बारह शब्दों में रच देते हैं।

इस किताब में जहाँ गुलज़ार के शब्दों का उजाला है वहीं एलन शॉ के चित्रों में जल रंगों से भरे बादल हैं। 27 बेहतरीन कविताएँ और उनके साथ बेहतरीन चित्र। बच्चों और बड़ों के बीच एक शानदार पुल बनाने वाली किताब।

घोड़ा और अन्य कहानियाँ

विनोद कुमार शुक्ल
चित्र : अतनु राय
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 175 रुपए
ISBN: 978-93-928730-1-0

पहाड़ खड़ा रहता है और हम उसे देखने घूमते फिरते हैं। नदी बहती रहती है और हम उसे एक जगह बैठकर निहारते हैं। विनोदजी की कहानियाँ नदी की तरह की कहानियाँ हैं। वे बहती रहती हैं और पाठक उन्हें इत्मीनान से बैठकर देखते रहते हैं। वे पास का गाँव दिखाने पास के गाँव नहीं जाते। वे उस चाँद और सूरज को दिखाते हैं जिसे पास के गाँव के लोगों ने देखा होगा। वे पास के गाँव के लोगों को चाँद पर और सूरज पर ले जाकर मिलवाते हैं।

बच्चों के लिए इतनी सघन कहानियाँ शायद ही पहले लिखी गई होंगी। वे बच्चों का नाप देकर नहीं सिलाई गई हैं। ये कपड़ों की नहीं कपास की कहानियाँ हैं। सबके काम आने वाली। उनमें एक बहुत झीना हास्य है। भाषा का स्वर महीन है। उसे सुनने जाना होता है। विनोदजी सबसे आम शब्द काम में लेते हैं। एक छोटे-से वाक्य के दरवाज़े पर एक आम से अर्थ की कुण्डी पड़ी रहती है। उसे खटकाना पड़ता है। तब भीतर एक दिलचस्प संसार दिख उठता है।

इस किताब में तापोशी घोषाल, अतनु राय, एलन शॉ, चन्द्रमोहन कुलकर्णी, प्रिया कुरियन जैसे उस्तादों के चित्र हैं। वे एक समानान्तर दुनिया रचते हैं। और जगह और किरदारों की गवाही देते हैं।

दुनिया मेरी

गुलज़ार
चित्र : दुनिया फ्रीडा शॉ, एलन शॉ
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 160 रुपए
ISBN: 978-93-928733-4-8

समय पोस्ट सीरिज़ की यह दूसरी किताब है। गुलज़ार और एलन और दुनिया की तिगलबन्दी की। छोटी-सी दुनिया मेरी इतनी बड़ी है, आँख की कटोरियों में आके खड़ी है...

पिता और बेटी के रिश्ते की एक शानदार कविता। पिता और बेटी के रिश्ते का जोड़ जैसे माँ से बनता है। वैसे ही चित्रों और कविता का जोड़ यह किताब है। गुलज़ार साब की एक और नायाब किताब।

'तिराहे के नीम से बाएँ' में पता शब्दों से ज़्यादा दृश्य में है। चित्र में है। वैसे ही इस किताब में कविता तो है पर कविता का पता चित्रों में है। कविता में पढ़ने की मिठास है। छोटे बच्चों और उनके प्रेम में पड़े सब बड़ों के लिए एक बहुत ही प्रेमिल तोहफा।

ज़मीं हमको घुमाती है

गुलज़ार
चित्र : एलन शॉ
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 130 रुपए
ISBN: 978-93-928733-6-2

ज़मीं हमको घुमाती है (कविता)

समय पोस्ट की एक और बेमिसाल किताब।

ज़मीं को जादू आता है, वगरना बाँस फीके सख्त और गन्नों में रस क्यों हैं? एक लम्बी कविता पर आधारित चित्रकथा।

वही जादू, वही ताज़ा बयानी, वही खेल, भाषा का तिलिस्म और सादगी और हाज़िर जवाबी। और बातों को कहने का गुलज़ाराना अन्दाज़ -

अनारों, बेरों और आमों में, सेबों में

सभी मीठों में भी मीठे अलग हैं...जो पत्ते खाओ तो फीके हैं और फल मीठे लगते हैं....

ज़मीं का यह जादू असल में ज़मीं भर का जादू नहीं है। यह जादू हमारे ठीक आसपास बिखरे जीवन के जादू को सामने लाता है। हमारी पहचान कराता है।

एलन शॉ की उस्तादी इस किताब में अपनी ऊँचाई पर है।

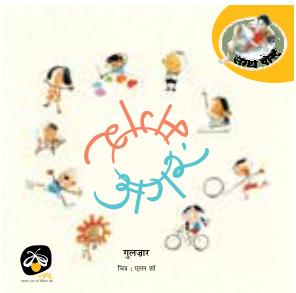

गुलज़ार
चित्र : एलन शॉ
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 325 रुपए
ISBN: 978-93-928732-6-3

गुलज़ार और एलन शॉ की जुगलबन्दी से बनी समय पोस्ट सीरिज़ की एक और किताब। दुनिया को हसीन बनाने वाला अगर एक शब्द चुना जाए तो शायद वह होगा - सवाल।

यह किताब सवालों की किताब है। इसमें बच्चों के सवाल हैं और गुलज़ार साब के जवाब हैं। बहुत चुटीले। और उतने ही चुटीले चित्र। सुनीता के सवाल - क्या आपको कभी अपने टीचर से डाँट पड़ी है? पर गुलज़ार साब कहते हैं - जी, खाने में वही सबसे ज़्यादा खाई है। या सूरज पश्चिम से क्यों नहीं निकलता?

उसे पूरब की आदत पड़ गई है।

पचासों सवाल और सैंकड़ों बेहद दिलकश चित्रों का गुच्छा।

आओ भाई खिल्लू

प्रभात
चित्र : भार्गव कुलकर्णी
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 150 रुपए
ISBN: 978-93-928732-0-1

कवि प्रभात जैसी शानदार कविताएँ बच्चों के लिए कम ही लिखी गई हैं। वे भरी-पूरी कविताएँ लिखते हैं। इस संग्रह में 47 कविताएँ हैं। एक से बढ़कर एक। सम्भवतया छोटे बच्चों के लिए हिन्दी का यह सबसे सुनहरा संग्रह है -

ईख खेत की बोली, अपने पास वाली ईख से

मेरे ऊपर क्यों गिरती हो, खड़ी रहो न ठीक से

ईख के खेतों का सबसे आम मगर दर्ज़ न किया गया दृश्य बच्चों के लिए और कहाँ रचा गया है? प्रभात की कविताओं में लोक जीवन की महक लगातार बनी रहती है। उनकी कविताएँ उस बड़े की तरह हैं जो बच्चों को खेल में डालकर गुम हो जाता है। बच्चों को खेल सौंपकर। कि वे उसे आगे बढ़ाएँ और उसे मुकम्मल कर दें।

भँवरा बाँस के घर में
तितली घास के घर में
आदमी रहता है
उनके पास के घर में।

उनके साहित्य में इंसान यह अदब जानता है और सीखता है कि पृथ्वी पर कैसे रहना है। आम जीवन के ऐसे दृश्य अन्यत्र दुर्लभ हैं।

चित्रकार भार्गव ने अपने जलरंगों से इन कविताओं का एक शानदार पड़ोस बनाया है। कविताएँ चित्रों के इस कदर साथ हैं कि लगता है जैसे दोनों एक साथ एक ही क्षण रचे गए हैं।

जुगनू भाई

बाल स्वरूप राही
चित्र : हिमाँशु
साइज़ : 6 x 6 इंच
मूल्य : 50 रुपए
ISBN: 978-93-928737-2-0

यह छोटी-सी किताब शहद की तरह मीठी है।

जुगनू से कोई सवाल पूछता है - जुगनू भाई, जुगनू भाई कहाँ चले?

जहाँ अँधेरा छाया हम तो वहीं चले।
जुगनू भाई, अँधियारे में क्यों जाते?
भूली भटकी तितली को घर पहुँचाते...

क्या जुगनू से ऐसी बातचीत हम कर सकते हैं? यह सवाल आते ही लगता है कि जुगनू हमारे भीतर हमारे मन की कोई बात भी तो हो सकती है। कोई छोटी-सी अच्छी बात जो रोशनी पैदा करती है। हिम्मत भरती है। या कोई हमारा दोस्त है। जिसमें हमें जुगनू दिखता है।

इस किताब के चित्र हिमांशु ने बनाए हैं। उन्होंने कविता के कई-कई अर्थों को बचाए रखकर चित्र बनाए हैं। चित्रों के जुगनू एक साथ बाहर उड़ने वाले और हमारे और हमारे दोस्तों के भीतर चमकने वाले जुगनू हैं।

अकेली चींटी

चन्दन यादव
चित्र : श्रीनिवास बालकृष्ण
साइज़ : 6 x 6 इंच
मूल्य : 35 रुपए
ISBN: 978-93-928736-0-7

एक चींटी अपनी कतार से अलग चलकर देखती है। वह देखती है कि देखने को और जाने को कितनी सारी चीज़ें छूटी हुई हैं। एक शानदार चित्रकथा। बहुत छोटे बच्चों के लिए खासतौर पर और बड़ों के लिए ज़्यादा खासतौर पर यह कहानी है। यह कहानी उस चींटी की भी है जो हमारे भीतर साँस की तरह चलती रहती है। जाने किसका पीछा करती हुई।

इसके शानदार चित्र श्रीनिवास ने बनाए हैं। उनके चित्रों से यह किताब देखने लायक भी बन गई है।

वह पेड़ पर चलती है/ **The Saw**

एक पेड़ सिर्फ पेड़ नहीं है। एक पेड़ थोड़ा-थोड़ा हवा है। एक पेड़ थोड़ा-थोड़ा सूरज है। एक पेड़ थोड़ा-थोड़ा रंग है। एक पेड़ थोड़ा थोड़ा आकाश है। एक पेड़ थोड़ा-थोड़ा जल है। तो जब एक पेड़
कटता है तो थोड़ा-थोड़ा आकाश, थोड़ी थोड़ी हवा, थोड़ा-थोड़ा जल....सब कट जाता है। यह किताब इसी सिलसिले में है।

एलन शॉ ने जल रंगों से जल और रंग में ठहरे आकाश और मिट्टी और हवा को दिखाया है। यह किताब चित्रकार की उतनी ही है जितनी कवि की।

सुशील शुक्ल
चित्र : एलन शॉ
साइज़ : 6 x 6 इंच
मूल्य : 50/70 रुपए
ISBN: *978-93-928735-8-4*
978-81-9703-279-0

ईलम डील

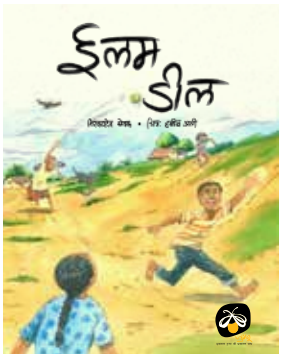

निरंकारदेव सेवक
चित्र : हबीब अली
साइज़ : 7.25 x 9.25 इंच
मूल्य : 160 रुपए
ISBN: *978-93-928734-4-7*

हिन्दी भाषी कौन होगा जिसने निरंकारदेव सेवक की कविताएँ न पढ़ी होंगी। वे हिन्दी में बच्चों के सबसे अहम कवि हैं। इस कविता संग्रह में उनकी चुनिन्दा 35 कविताएँ हैं। इतनी सरलता से एक भरी-पूरी कविता लिखने का शायद ही ऐसा कोई उदाहरण होगा।

अगर मगर दो भाई थे, लड़ते खूब लड़ाई थे, अगर मगर से छोटा था, मगर मगर से खोटा था।

...पैसे पास होते तो चार चने लाते, चार में से एक चना तोते को खिलाते

...शायद ही ऐसी कोई रचना हो जिसने एक ऐसे व्यक्ति की कल्पना की हो।

शानदार कविताओं के संग्रह के उतने ही शानदार चित्र हबीब अली ने बनाए हैं। उनके कम्पोज़ीशन, रंग योजना तथा बारीक विवरण पाठक को काफी देर इन चित्रों को निहारने के मौके बनाते हैं।

किताबों में बिल्ली ने बच्चे दिए हैं

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना
चित्र : देबब्रत घोष
साइज़ : 7.25 x 9.25 इंच
मूल्य : 130 रुपए
ISBN: 978-93-928733-3-1

इब्नबतूता पहन के जूता, निकल पड़े तूफान में
थोड़ी हवा नाक में घुस गई, घुस गई थोड़ी कान में

बच्चों के लिए शायद ही इस तासीर की दूसरी कविता होगी। बच्चों के लिए तूफानों में निकलने की कविता कौन लिखता है? तूफान भी आम नहीं। ऐसा कि पाँव उखाड़ दे। आपके जूते को उड़ा कर जापान ले जाए। और आप दोबारा एक और तूफान से भिड़ने दूसरा जूता बनवाने मोची की दूकान पर खड़े हो जाएँ।

आज से नौ सौ साल पहले के मोरक्को के जुनूनी यात्री को दोबारा ज़िन्दा कर दिया, इस कविता ने। और बच्चों की कविताई में भी जान फूँक दी। सिर्फ यही नहीं इस संग्रह की लगभग हर कविता इसी मिजाज़ की है। महँगू ने महँगाई में, पैसे फूँके टाई में... दो टूक बात और मक्खन-सा छन्द।

किताबों में बिल्ली ने बच्चे दिए हैं, ये बच्चे बड़े होके अफसर बनेंगे....

चित्रकार देबब्रत घोष के चित्रों को देखकर पहली यह बात मन में आती है कि कितने मन से बनाए गए हैं। कविताओं में उथलपुथल है और चित्रों में इत्मीनान है। हरा नहीं शान्त हरा है, नीला सबसे शान्त नीला है।

बाघ भी पढ़ते हैं

चन्दन यादव
चित्र : अमृता
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 100 रुपए
ISBN: 978-93-928736-4-5

कथाकार चन्दन यादव का यह पहला संग्रह है। उनकी भाषा का चुटीलापन, दोटूकपन कहानी को अतिरिक्त आभा देता है। उनकी कहानियों में पाठ का एक न एक तलघर महसूस होता रहता है। जहाँ कहानी के भीतर एक और कहानी नींव की तरह चलती रहती है। पाठक को आवाजाही का सुख मिलता है। ये कहानियाँ हिन्दी में कहानी का एक नया रास्ता बनाती हैं।

इन कहानियों को चित्रकार अमृता ने बहुत अपनेपन से बनाया है। इन कहानियों के उन्होंने खासतौर पर किरदार रचे हैं। ऊँट कहानी का ऊँट है, बिल्ली कहानी की बिल्ली है। इस तरह कहानी के सच को दुनियावी सच से बड़ा दिखाया है। एक जगह ऊँट का बयान है कि करनवीर ने चिल्ला-चिल्लाकर आसमान सिर पर उठा लिया है। इस बयान को चित्रकार ने मुहावरे की गिरवी से छुड़ाया है। चित्र में ऊँट पर बैठे बच्चे के फैले हाथ सचमुच आसमान उठाए दिखते हैं।

मिट्टी का इत्र

दिलीप चिंचालकर
चित्र : दिलीप चिंचालकर
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 250 रुपए
ISBN: 978-93-928737-8-2

कहने को ये इक्कीस रचनात्मक लेखों का संग्रह है। ये लेख हैं जो कहानियों की तरह हैं या कहें कि ये कहानियाँ हैं जो लेखों की तरह हैं। ये चींटी से लेकर, एक नज़रअन्दाज़ फूल, कुत्ते के पिल्लों से लेकर पत्थरों और महान गायक कुमार गन्धर्व, मिट्टी के इत्र और माँ और राजस्थान के ऊँटों तक फैली हैं। इनमें दो बयान हैं। एक बाहरी है और उससे ठीक लगा एक बयान भीतरी है। जब दिलीपजी कुत्ते का हुलिया बताते हैं, उसका लटका या प्रेमिल चेहरा बयान करते हैं तो हमें अपना देखा कुत्ता याद आता रहता है। लेकिन इसके ठीक बाद जैसे ही वे कुत्ते के मन का बयान करते हैं तो हमें कुत्ता याद नहीं आता। अपने भीतर अपना मन याद आता है। जैसे, एक पेड़ और एक चींटी और एक ऊँट और एक पत्थर और हमारा मन एक ही हो। यह किताब बहुत मन से लिखी किताब है। यह बहुत मन से चित्रित किताब भी है। दिलीपजी की यह किताब बताती है कि हरेक की अपनी खुशबू है। इत्र तो मिट्टी का इत्र है। इस पूरी किताब में हर्फ दर हर्फ हम खुद से पूछते रहते हैं- हम किस मिट्टी के बने हैं? और क्या हमें अपनी मिट्टी की खुशबू पता है, अपना इत्र पता है?

हाथी चल्लम चल्लम

श्रीप्रसाद
चित्र : प्रोइति रॉय
साइज़ : 6 x 6 इंच
मूल्य : 50 रुपए
ISBN: 978-93-928731-8-8

किस भाषा को ऐसी रचनाओं पर फक्र नहीं होगा! इस कविता में भाषा का और देखने का एक महीन खेल और कारीगरी है। हाथी को चलते देखिए। वह एक कदम चलता है तो सूँड से लेकर पूँछ तक चलने की एक लहर-सी उठती है। जैसे, पानी पर कोई 'चलना' लिखे और उसी समय एक लहर आ जाए तो 'चलना' अक्षरों में टूट जाएगा। ध्वनि के संसार में हाथी के चलने को चल्लम कहने में यही जादू है। हाथी हिलता है तो कुछ देर हिलता रहता है। हाथी चलता है तो कुछ देर चलता रहता है। हाथी का आना और जाना एक झटके में नहीं हो जाता। वह थोड़ी देर होता रहता है। कवि श्रीप्रसाद इस कालजयी कविता में इन सब बातों को पिरोकर एक नायाब खेल रचते हैं। इस कविता में बहुत कम शब्द हैं जो साबुत अक्षरों से बने हैं। इससे इस कविता में अनोखी मटक आ गई है।

चित्रकार प्रोइति रॉय ने शब्दों के इस कमाल के लिए पूरी जगह छोड़कर सादे चित्र रचे हैं। वे इस विशाल दृश्य की हर व्यक्ति की अपनी कल्पना को बची रहने देते हैं। और बचकर अपनी बात कहते हैं।

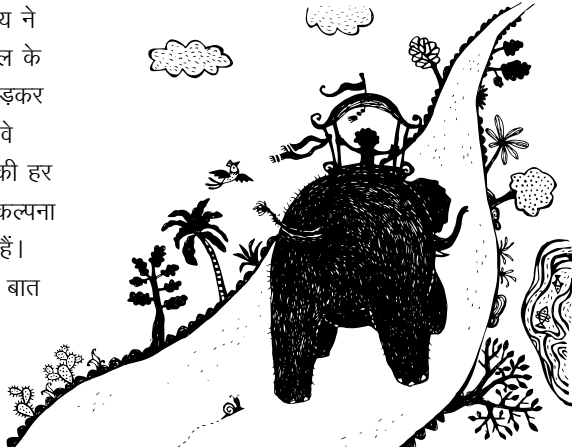

इश्क का माता

प्रियम्वद
चित्र : प्रशान्त सोनी
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 175 रुपए
ISBN: 978-93-928735-0-8

सुप्रसिद्ध कहानीकार प्रियम्वद का बच्चों के लिए लिखा दूसरा कहानी संग्रह है। इसके पहले 'मिट्टी की गाड़ी' ने बाल साहित्य में अपनी अलग जगह बनाई है। इस संग्रह में छह कहानियाँ हैं। आमतौर पर बच्चों के लिए लिखी गई कहानियों में समय और स्थान से लेखक बचते रहते हैं। प्रियम्वद अपनी रचनाओं में अपना समय सलीके से साझा करते हैं। किताब पढ़कर पाठक बाहर निकलेगा तो उसे कहानी के पात्र दिखेंगे। वे मुसीबतें दिखेंगी। और पाठक अपने आसपास की बेहतर गवाह बनेगी। इन कहानियों के पात्र आमतौर पर हाशिए के लोग हैं। उनके बारे में बच्चों से कभी बात नहीं की गई है।

इन कहानियों में कहानी है और आज का आसपास है। गालिब हैं और कबीर हैं और चिरौंधा जल्लाद और इन सबको जोड़ने वाली भाषा। किशोर उम्र के बच्चों के लिए खासतौर पर नायाब कहानी संग्रह।

इस संग्रह के शानदार चित्र प्रशान्त सोनी ने बनाए हैं। उनके किरदार खासतौर पर गौर करने लायक हैं।

बना बनाया देखा आकाश
बनते कहाँ दिखा आकाश

विनोद कुमार शुक्ल
चित्र : तापोशी घोषाल
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 200 रुपए
ISBN: *978-93-928737-0-6*

बना बनाया देखा आकाश, बनते कहाँ दिखा आकाश....बने बनाए सूरज, चाँद...

बच्चों से इस तरह विनोदजी सरीखा कोई बड़ा कवि ही बात कर सकता है। उनके समय के कैनवास को करोड़ों साल में फैलाया जा सकता है। वे सूरज से कह सकते हैं कि वह इतनी चुपचाप सुबह क्यों लाता है। वे हमें चींटी से, और शेरों से और सूरज, चाँद, पहाड़ और नदी से बात करने का सलीका देते हैं। वे पहाड़ से ऐसे बात करते हैं कि जैसे दो दस-बारह साल के दोस्त बात कर रहे हों। और इसी बातचीत से एक सुन्दर कविता ढलती है। कि पढ़ने वाले को लगातार लगता रहता है कि उसने ऐसा क्यों न सोचा...कि यह बात उसके ठीक पड़ोस में थी। फिर उसके हाथ उसे क्यों नहीं पकड़ सके।

ऐसी 49 कविताएँ इस गुच्छे में हैं। ये कविताएँ सूरज और मिट्टी और पहाड़ और नदी की कविताएँ हैं। तो ये कविताएँ किसके लिए हैं? ये कविताएँ उनके लिए हैं जिनके लिए सूरज और मिट्टी और पहाड़ और नदी हैं। ये कविताएँ उन सबके लिए हैं जो सपना देखते हैं, जो दुनिया में जादू और खेल से भरा जीवन देखते हैं। जो मुश्किलों की चप्पल फँसाए आशा के रास्ते चलते हैं। जो अपनी भाषा में बोलना चाहते हैं। अपनी कहन में। अपने स्वर में।

चित्रकार तापोशी घोषाल के चित्र न पतंग हैं, न डोर हैं। न ही वे पतंग उड़ाने वाले हैं। वे उँगलियों के हलके-से खिंचाव की तरह हैं जिसमें पतंग का धागा पतंग को हलका-सा पीछे खींचता है। इससे धागा हवा में हलका-सा तन जाता है। जाग जाता है। कि पतंग ज़्यादा उड़ान भर सके।

बना बनाया दीखा आकाश
बनते कहाँ दिखा आकाश
बना बनाया पहाड़, जंगल
तरह-तरह की चिड़िया
नदियाँ, समुद्र, जीव-जन्तु,
बनते कहाँ दिखा सूरज,
पत्थर, जंगल
बीज, बरसात
ऋतु, बसंत और
रंग-बिरंगे फूल
दिन, संध्या और रात
बना बनाया, है सब
यह बना है खयाल।

—

नरेन्द्र [illegible]

लाइटनिंग

प्रभात
चित्र : एलन शॉ
साइज़ : 14 x 19 इंच
मूल्य : 450/550 रुपए
ISBN: *978-93-912185-0-8*
978-81-9703-274-5

रणथम्भौर टाइगर रिज़र्व में कभी लाइटनिंग नाम की एक बाघिन रहती थी। क्या तो जलवा था उसका! कवि प्रभात की यह कहानी उसी की शान में लिखी गई है। इसमें सिर्फ लाइटनिंग नहीं है। ...रणथम्भौर है, वहाँ के पेड़ हैं, चिड़ियाँ हैं, वहाँ की हवाएँ हैं, वहाँ का सूरज है।

उगता सूरज-डूबता सूरज। वहाँ की रात है और रात का चाँद है और लाइटनिंग है। वह बोलती है तो पूरा जंगल बोल पड़ता है। सबको लगता है कि लाइटनिंग इस बार उनसे कुछ कह रही है।

चित्रकार एलन शॉ ने रणथम्भौर का चप्पा-चप्पा छाना है। अपने जल रंगों से। पाठक को पढ़ते हुए बार-बार लगेगा कि वह रणथम्भौर में है। यह किताब भी खुलती है तो एक पूरी बड़ी खिड़की की तरह खुलती है। पूरी सवा दो फुट चौड़ी खिड़की। देखना, सँभलकर पढ़ना। इतनी बड़ी खिड़की से तो बाघ भी भीतर आ सकता है।

हमारी दुनिया

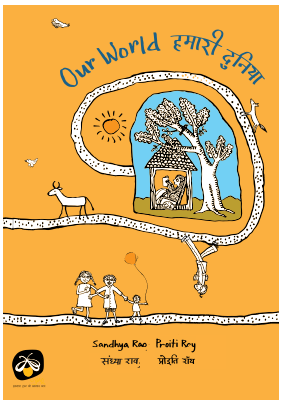

संध्या राव

चित्र : प्रोइति रॉय

साइज : 14 x 19 इंच

मूल्य : 375 रुपए

ISBN: *978-93-912185-6-0*

संध्या राव की कविता और प्रोइति रॉय के चित्रों की जुगलबन्दी से बनी है यह बिग बुक। यह हिन्दी-अँग्रेज़ी दोनों भाषाओं में है।

हमारी दुनिया कितनी खूबसूरत हो जाए अगर हम एक दूसरे के साथ आ जाएँ। हमारे हाथ दूसरे की तरफ मिलने के लिए उतावले रहें। मिलजुल के इसी सपने पर खड़ी है यह किताब। यह किताब प्रेम की है, दोस्ती की है, मिलजुल की है, अमन की है, साथ की है। इसे पढ़ने के बाद पाठक अपने पड़ोस को बदला हुआ पाएगा।

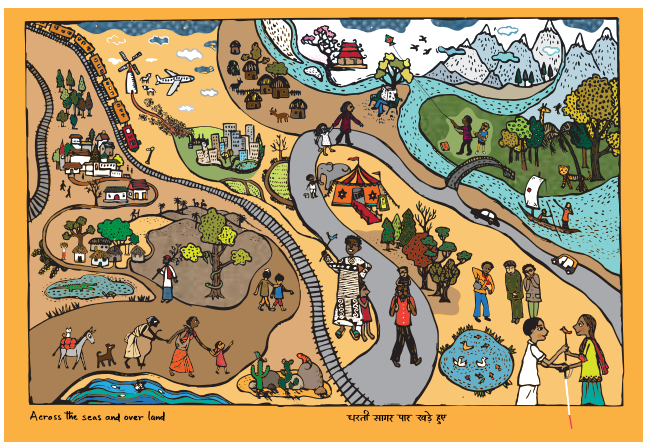

पेड़ नहीं बैठता

विनोद कुमार शुक्ल
चित्र : चन्द्रमोहन कुलकर्णी
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 100 रुपए
ISBN: *978-93-928738-2-9*

विनोद कुमार शुक्ल हिन्दी के सबसे बड़े रचनाकार हैं। उन्होंने बच्चों के लिए कुछ बेमिसाल किताबें लिखी हैं। उनकी हर रचना बताती है कि कैसे बच्चों के लिए लिखी हुई चीज़ें इतनी भरी-पूरी हो सकती हैं कि वे सबके लिए पढ़ने लायक हो सकती हैं। इस किताब में उनकी कुछ बेहतरीन कहानियाँ हैं। ये कहानियाँ कहानियों का दामन बड़ा करती हैं। उनका दायरा बढ़ाती हैं। साधारण वाकयों को कहकर वे असाधारण बनाती हैं।

चित्रकार चन्द्रमोहन कुलकर्णी ने इन कहानियों के लिए एक समानान्तर पाठ पैदा किया है। वे कहानियों के साथ, मगर एक दूरी बनाकर चलते हैं।

अण्टागफील का निकाह

गुलज़ार
चित्र : एलन शॉ
साइज : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 120 रुपए
ISBN: *978-93-928732-4-9*

यह भी गुलज़ार साब के गुलदस्ते का एक गुल है। अण्टागफील को उनके पड़ोसी किसी तरह ब्याह के लिए राज़ी करते हैं।

मगर अण्टागफील एक तो खोए रहते हैं, दूसरे भुलक्कड़ हैं, ऊपर से हकीम हैं। तो अण्टागफील जी के निकाह में क्या हुआ यही इस किताब का विषय है।

और एलन शॉ के चित्र उस निकाह में आपको शामिल कर लेंगे। वे छोटे से छोटे विवरणों के साथ हाज़िर हैं।

कुतुबमीनार का पेड़

प्रभात
चित्र : कविता सिंह काले
साइज़ : 8.5 x 10 इंच
मूल्य : 140 रुपए
ISBN: *978-93-928731-6-4*

छह शानदार कहानियाँ हैं इस संग्रह में। प्रभात हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि-कथाकार हैं। बच्चों के लिए लिखी गई कहानियों में कहानीपन कम है। वे अकसर सपाट पाई जाती हैं। इनमें से हरेक कहानी को आप याद करके सुना सकते हैं। सुनाने लायक कहानियों की कमी भी बाल साहित्य का एक कमज़ोर पक्ष है। इनके विषय साधारण और नाकुछ से हैं। और इसी से एक कहानी पैदा की गई है। बात से बात निकालने का हुनर प्रभात को हासिल है।

इस संग्रह में कविता सिंह काले के चित्र इस किताब को देखने लायक बनाते हैं। उनके चित्र विवरण से भरपूर हैं। वे आपको थोड़ी देर ठहराते हैं। उनके किरदारों के एक्सप्रेशन देखने लायक हैं। वे कहानी के मूड को सघन करते हैं।

आदमी जो हमेशा घड़ी पहनता था

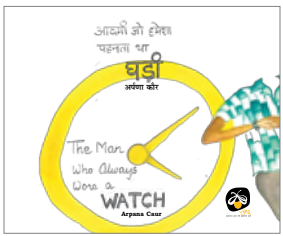

घड़ी इस तरह हमारे जीवन में (बच्चों के जीवन में भी) उतर आई है कि एक घड़ी की फुरसत नहीं है। थमकर देखना, सोचना, खेलना-कूदना...सब घड़ियाँ खो गई हैं। सुप्रसिद्ध चित्रकार अर्पणा कौर की समय पर एक शानदार किताब।

'पानी में पानी बहता रहता है' बच्चों के लिए भाषा का यह मुहावरा और कहाँ इस्तेमाल होता है...

कहानी और चित्रः अर्पणा कौर
साइज : 8.5 x 10 इंच
मूल्य : 400 रुपए
ISBN: *978-93-928738-1-2*

हाथियों की टोली

एक शानदार कविता। हाथी के चींटी जैसे मन की कविता। लेखक-फिल्मकार वरुण ग्रोवर की लिखी और चित्रकार गुंजन भारती के जीवन्त चित्र। कि कोई हाथी के एकदम पास आया है। किसी ने हाथी की त्वचा की एक-एक झुर्री देखी है।

वरुण ग्रोवर
चित्र : गुंजन भारती
साइज़ : 6 x 6 इंच
मूल्य : 45 रुपए
***ISBN:** 978-93-928730-7-2*

एक दो तीन

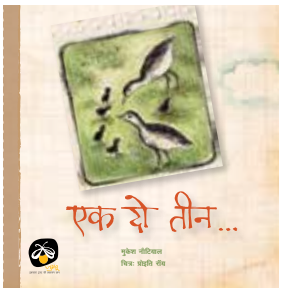

मुकेश नौटियाल
चित्र : प्रोइति रॉय
साइज : 6 x 6 इंच
मूल्य : 50 रुपए
ISBN: *978-93-928734-5-4*

क्या जलमुर्गियाँ गिनती जानती हैं? यह कहानी ऊपर-ऊपर तो यही कहती रहती है। मगर वह एक कोमल भीतरी संसार रचती है। एक जलमुर्गी की आवाज़ सुनती है। आवाज़, जिसमें वो अपने खोए बच्चे को पुकारती है।

मुकेश नौटियाल की कहानी और प्रोइति रॉय के चित्रों से बुनी बेमिसाल किताब। खासतौर पर पढ़ना सीख रहे बच्चों के काम की। और पढ़ना सीख चुके बड़ों के नाम कि गिनती आने का मतलब क्या है?

मैं कहाँ से हूँ?

कहानी और चित्रः प्रोइति रॉय

साइज़ : 6 x 6 इंच

मूल्य : 60 रुपए

ISBN: 978-93-928734-6-1

प्रोइति रॉय की अपनी पर्सनल कहानी। यह किताब इसी पर्सनालिटी से बनी है। कम-कम बोलती और दुनिया के बड़े मसले पर बात करती। एक धूल का कण जाने कितने हज़ार सालों की यात्रा कर हमारी हवा में आया है। इस सवाल का सबसे दिलचस्प जवाब तो उसके पास है? एक प्रेमिल किताब। हमारी दुनिया को और सुन्दर बनाने का सपना दिखाती किताब। सबके लिए। जो सपने देखना जानते हैं।

चिड़िया उड़

निधि सक्सेना
चित्र : तापोशी घोषाल
साइज : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 50 रुपए
ISBN: *978-93-928735-5-3*

फिल्मकार-लेखक निधि की अद्वितीय कहानी। हम सब की कहानी। हमारे भीतर के परिन्दे की कहानी। जिसके पंख किसी ने देखे ही नहीं। हमारे अपनेपन की कहानी। अपने मन को मारकर रहने के दुख की कहानी।

तापोशी घोषाल के चित्र ऐसे हैं कि हमें याद दिलाते रहते हैं कि चित्रों को उनकी कहानी में ही नहीं उनके रंगों में भी देखना चाहिए।

लेडी टार्जन! जमुना/Lady Tarzan! Jamuna takes a stand

लावण्या कार्तिक
चित्र : राजीव आइप
साइज़ : 7.5 x 9.25 इंच
मूल्य : 90 रुपए
ISBN: *978-93-928732-3-2*
978-93-928733-9-3

इस किताब को एक नज़र देखकर पूरी कहानी समझ आ जाती है। चित्र इस कहानी की ध्वनि पैदा कर देते हैं।

चित्र उस्ताद चित्रकार राजीव आइप के हैं। लेडी टार्ज़न जमुना की कहानी लिखी है लावण्या कार्तिक ने। एक व्यक्ति जिसने जंगल को महफूज़ रखने के लिए सब कुछ दाँव पर लगा दिया। तो यह कहानी संघर्ष की और प्रेम की कहानी है। एक सवाल हमसे पूछती है चुपचाप - कि क्या हम किसी चीज़ को प्रेम करते हैं? क्योंकि इस सवाल से एक उम्मीद पैदा होती है। कि तब हम किसी के लिए खड़े हो सकते हैं। साथ देने।

यह किताब हिन्दी व अँगेज़ी दोनों भाषाओं में है।

वह फोटो किसने खींची?/Who clicked that pic?

नन्दिता ड कूना
चित्र : प्रिया कुरियन
साइज : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 100 रुपए
ISBN: 978-93-928737-9-9
978-93-928733-0-0

होमाई व्यारावाला हिन्दुस्तान की बहुत प्रसिद्ध फोटोग्राफर रही हैं। उनकी निडरता और कलाकारी के दिलचस्प बयान इस किताब में हैं। यह किताब नन्दिता ड कूना ने लिखी है। और इसके बेमिसाल चित्र प्रिया कुरियन ने बनाए हैं। उनके चित्रों ने होमाई के मिजाज़ को बनाए रखा है। कई बार लगता है कि होमाई चित्रकार हैं और प्रिया कुरियन फोटोग्राफर। कला में जीवन की अदलबदल कितनी ही बार दिखती है। थिएटर सबसे पहले ख्याल में आता है।

यह किताब हिन्दी व अँगेज़ी दोनों भाषाओं में है।

रॉकस्टार एन ए साड़ी/Rockstar in a sari

पर्ल दी सिल्वा
चित्र : वसुन्धरा अरोरा
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 100 रुपए
ISBN: 978-93-928735-6-0
987-93-928739-2-8

हम जो सुनते आए हैं, जो देखते आए हैं, जो खाते आए हैं, जो पहनते आए हैं... हममें वो एक पक्की लकीर की तरह दर्ज होता जाता है। पता भी नहीं चलता कब वो लकीर सालों साल कितनी पक्की होती गई है। एक आदत की तरह। न्यूटन के बल के तीसरे नियम की तरह। और जब उस सुने, देखे, खाए, पहने से अलग होता है हमारी सारी इन्द्रियाँ उसे नकारने में लग जाती हैं। पर वो अलगपन अगर दमखम से अड़ा रहता है तो देर-सवेर (कभी झटके से भी) हमें उसकी भी आदत हो जाती है। पर दमखम से अड़ा रहना बड़े जिगर का काम है। उषा उत्थुप इस मामले में कमाल की शख्सियत हैं। अपनी आवाज़, पहनावे के अनूठेपन को पुरज़ोर तरीके से सामने रखा। वो गाती रहीं पूरे दमखम के साथ। एक रॉकस्टार की तरह।

युवा चित्रकार वसुन्धरा ने इसके इतने प्रेमिल चित्र बनाए हैं। पन्ना दर पन्ना आप उषा जी के गजरे की खुशबू लेते हुए उन्हें सुन पाएँगे। वसुन्धरा ने चुपके से रंगों और लकीरों में अपने अनूठेपन को भी दर्ज कर दिया है।

यह किताब हिन्दी व अँगेज़ी दोनों भाषाओं में है।

हकीम अण्टागफील

गुलज़ार
चित्र : एलन शॉ
साइज : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 100 रुपए
ISBN: *978-93-928733-8-6*

गुलज़ार साब ने बच्चों के लिए जिस सलीके से गीत लिखे हैं उतनी ही मज़ेदार नज़्में उन्होंने बच्चों के लिए लिखी हैं।

यह कविता अण्टागफील नाम के किरदार के एक और कारनामे के बारे में है। वे अपने में खोए रहते हैं। अण्टागफील हकीम हैं। उनकी भुलक्कड़ी क्या-क्या गुल खिलाती है यही इस किताब में है।

एलन शॉ के ऐसे जीवन्त चित्र हैं कि लगता है अण्टागफील सचमुच उनके पड़ोस में रहते हैं। और वे उन्हें करीब से जानते हैं। क्योंकि उनके चित्रों की तफ्सील इस कदर है कि वे बैठेंगे तो उनके हाथ किस तरह होंगे यह भी पता चलता है। वे चित्रों में उनकी हथेलियों की रेखाएँ तक के बारे में बताते हैं। छोटे बच्चों के लिए और उनके साथ रहने वाले सब बड़ों के लिए एक बेहद आनन्ददायी किताब।

पेड़ और परछाई

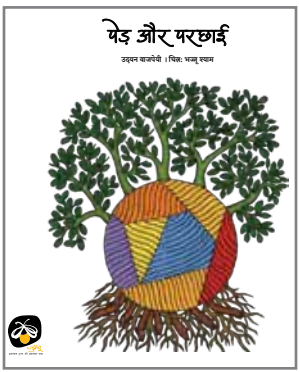

दो बेमिसाल कलाकारों की जुगलबन्दी है इस किताब में। प्रसिद्ध कवि-कथाकार उदयन वाजपेयी के छोटे-छोटे निबन्ध और चित्रकार भज्जू श्याम के चित्र। इन निबन्धों में कल्पना और रचना का आनन्द है। उदयनजी किसी चीज़ को परिभाषित नहीं करते बल्कि चीज़ों को खास तरह के देखने की आदत के उलट विचार करते हैं। एक तरह से उन्हें अपनी परिभाषा से मुक्त करते हैं। इस तरह मुक्ति की भाषा भी बनाते हैं।

भज्जू श्याम के चित्र बहुत सूझ भरे हैं। उन्हें थमकर देखने पर वे खुलते हैं।

उदयन वाजपेयी
चित्र : भज्जू श्याम
साइज़ : 10 x 10 इंच
मूल्य : 150 रुपए
***ISBN:** 978-93-928730-8-9*

शेप चिल्ली

सुशील शुक्ल

चित्र : प्रोइति रॉय

साइज : 6 x 6 इंच

मूल्य : 50 रुपए

ISBN: *978-93-928739-1-1*

यह कितनी बार होता है न हम किसी तस्वीर पर पेंसिल चला देते हैं। किसी के सिर पर सींग उगा देते हैं या किसी की मूँछ बना देते हैं। यह किताब भी इसी तरह की शरारत की किताब है। कुछ बनाने की कल्पना की शरारत।

तिकोनों, चौकोनों, वृत्तों यानी घेरों की अपनी दुनिया है। आकृतियों की दुनिया। इन्हीं आकृतियों से खेल खेल सकते हैं। ज़रा-सी लाइन जोड़कर एक बिन्दी लगाकर एक घोड़ा बन सकता है या एक मछली।

उस्ताद कलाकार प्रोइति रॉय ने इसे बुना है। आज़मा कर देखो। चित्र बनाना कितना आसान है न!

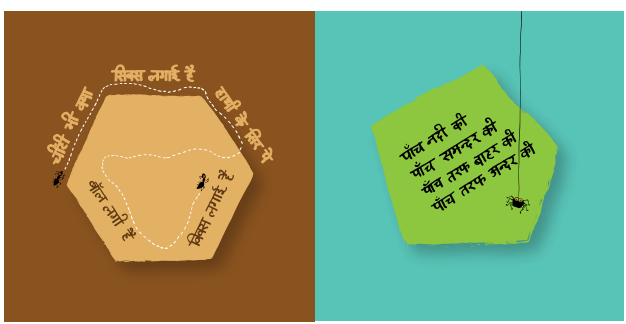

रेगिस्तान में बस

प्रभात
चित्र : ऋषि साहनी
साइज़ : 6 x 6 इंच
मूल्य : 375 रुपए
ISBN: *978-93-928737-9-9*

कवि प्रभात हिन्दी बाल साहित्य के कुछ सबसे उज्ज्वल नामों में से एक हैं। उनकी रचनाएँ बच्चों के दिल में सीधे उतर जाती हैं। वे भाषा के साथ इस तरह खेलते हैं जैसे हम नदी में उतरकर पानी से खेलते हैं। उनकी कविताओं के विवरण राजस्थान के जीवन की सबसे खूबसूरत और आदिम छवियाँ सामने लाता है। वे कई बार नाकुछ-सी चीज़ों से, साधारण- सी चीज़ों से एक शानदार कविता उतार लाते हैं। यह एक बड़े कवि की निशानी है कि वह - बिजली के तार से पूछ बैठे कि भई कहाँ जाते हो?

इस बेमिसाल संग्रह के चित्र बनाए हैं एक उस्ताद चित्रकार ऋषि साहनी ने। उनके जल रंग इतने जीवन्त हैं कि लगता है कि उनका पानी अभी भी बह रहा है। और अभी ये चित्र विस्तार ले रहे हैं। उनके रंग अनोखे हैं। वे आँखों को अपने में उतरने का न्यौता देते हैं। वे भीतर की तरफ खुलते हैं।

बेहद उदार रेखाएँ ऋषि के चित्रों की एक और खासियत है।

आपा की आपड़ी

गुलज़ार
चित्र : एलन शॉ
साइज : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 130 रुपए
ISBN: *978-93-928738-7-4*

'आपा की आपड़ी पानी में जा पड़ी'... यह वह भाषा है जो बच्चों को - 'पापा की पापड़ी पानी में जा पड़ी' बनाने के लिए प्रेरित करती है, उकसाती है। यह खेल बताता है कि इस कविता में सीधे अर्थ नहीं निकलेंगे। एक तरह से कविता की प्रकृति की समझ भी हममें भरती है। नॉनसेंस राइम्स हमारे देश में कभी-कभार ही लिखी गई हैं। सुकुमार राय को छोड़ दें तो फिर इस शानदार परम्परा में बहुत काम नहीं हुआ। गुलज़ार ही वह कवि हैं जो हिन्दी में इस विधा में काम करने का माद्दा और मन रखते हैं। 'चड्डी पहनके फूल खिला है' हो या 'लकड़ी की काठी' गीत हो या 'वीआईपी अंडरवियर बनियान' गीत हो।

इस विलक्षण किताब के चित्र एलन शॉ ने बनाए हैं। यह किताब गुलज़ार साब की चौदह किताबों की सीरिज - समय पोस्ट - की एक किताब है। एलन शॉ ने गुलज़ार साब की कविताओं की मज़ेदारी को और बढ़ा दिया है। उसमें थोड़ा ह्यूमर और पैदा कर दिया है।

कुछ आता न जाता

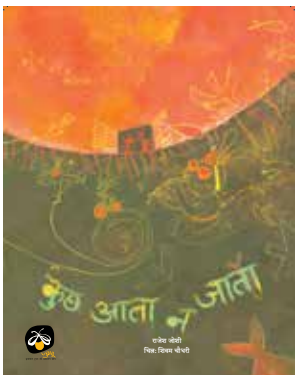

राजेश जोशी
चित्र : शिवम चौधरी
साइज़ : 8.5 x 11 इंच
मूल्य : 125 रुपए
ISBN: *978-93-928734-0-9*

'कौआ इतना काला है, कि उलट गया उजाला है।' काला कैसा है? कि जैसे उजाला उलट गया हो। ...एक बड़ा कवि ही यह कहने के लिए नई भाषा रच सकता है। कवि राजेश जोशी का अनूठा कविता संग्रह। इस संग्रह में ऐसी कई कविताएँ हैं जो बच्चों की ज़ुबान पर चढ़ जाएँगी।

युवा चित्रकार शिवम ने भी इन कविताओं के लिए ताज़े चित्र रचे हैं। उनके बयान में ताज़गी है और वे बताते रहते हैं कि चित्रों के रंग किसी बात को कहने भर के लिए नहीं होते। वे अपने आप में भी बहुत कुछ बोलते हैं।

मम्मी सुसु!

नेहा सिंह
चित्र : मीनल सिंह और एरिक एगेरुप
साइज : 10 x 9 इंच
मूल्य : 200 रुपए
ISBN: 978-93-928733-2-4

बच्चों की किताबों में बच्चों के सपने, उनकी दुनिया, उनकी प्रकृति और सबसे बड़ी बात उनकी दुनिया की मुश्किलें और उनके सवाल ज़रूर होने चाहिए। इस किताब में बड़ों की दुनिया पर बच्चों के बुनियादी सवाल हैं। एक आम-सी सुविधा - साफ सुथरे टॉयलेट न होना - हमारी दुनिया पर लानत भेजती किताब है। यह किताब बताती है कि कैसे सवाल पूछकर यह दुनिया खूबसूरत बन सकती है।

कैसे सवाल पूछने से एक रास्ता बनता है। खासकर लड़कियों को टॉयलेट न मिलने से कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। लानत है कि आज भी आधे से ज़्यादा स्कूलों में साफ सुथरे टॉयलेट लड़कियों के लिए उपलब्ध नहीं हैं। यह किताब जैसे यह एक सवाल है जो किताब की तरह आया है। और हाँ, कोई भी मसला जो लड़कियों का ही लगता है वह सबका होता है।

लेखक और कलाकार नेहा सिंह की लिखी और मीनल सिंह और एरिक एगेरुप की चित्रित एक शानदार किताब। बच्चों के साथ-साथ हरेक शिक्षक तथा पालक के लिए ज़रूरी किताब।

ऊपर के गाँव का रहस्य

नेहा बहुगुणा
चित्र : सुस्नता पॉल
साइज़ : 7.5 x 9.25 इंच
मूल्य : 200 रुपए
ISBN: *978-93-928736-1-4*

गोपू नौ साल की है। उसकी बातें सूझ से भरी हैं। वह हर बात में दिलचस्पी लेती है। इसीलिए जब उसे पता चलता है कि कभी उसके गाँव में शानदार रामलीला होती थी मगर वह बन्द हो गई। वह इसकी पड़ताल में निकलती है। और एक-एक कर सारे राज़ जान जाती है। उसे बहुत पापड़ बेलने पड़ते हैं। बहुत जासूसी करनी पड़ती है। मगर आखिरकार वह अपने गाँव में फिर से रामलीला शुरू करके ही दम लेती है। एक शानदार कहानी।

इसके चित्र सुस्नता पॉल ने बनाए हैं। ये चित्र आपको उत्तराखण्ड के एक गाँव और रामलीला के तमाम पात्रों से मुलाकात कराने वाले हैं। मिलेंगे तो आनन्द से भर जाएँगे। एक बार पढ़ना शुरू करेंगे तो किताब को खतम किए बिना रुक नहीं सकेंगे।

एक बटे बारह

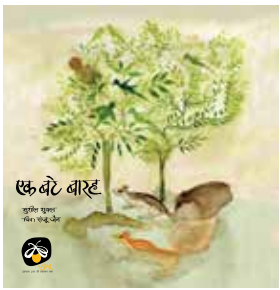

सुशील शुक्ल
चित्र : संजू जैन
साइज : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 200 रुपए
ISBN: *978-93-928732-2-5*

एक गाँव हुआ करता था जहाँ का जीवन ऐसा था कि किसी का काम किसी के बिना नहीं चलता था। वहाँ कोई त्यौहार कोई अकेला नहीं मना पाता था।

सबके जीवन की ज़िम्मेदारी जैसे सबके ऊपर थी। वहाँ के तो गाय भैंस तक एक साथ चरने जाते थे। और एक साथ लौटते थे। लेकिन वहाँ सब कुछ उजला उजला ही नहीं था।

वहाँ भी मुश्किलें थीं। वहाँ प्रेम था तो ईर्ष्या भी थी। किसानों के जीवन और शहर के कुछ किस्सों के एक साल की कहानी।

जनवरी से लेकर दिसम्बर तक की स्मृतियों की कहानी।

घास, मकड़ी, चींटी से लेकर इंसान, जानवर, नदी, पेड़, कुओं, खेतों की कहानी।

इस किताब के चित्र प्राकृतिक रंगों से बनाए गए हैं। इस किताब के जल रंगों में जल नर्मदा का है और रंग पेड़ पौधों के हैं। ये सरल से चित्र सकुचाते से चित्र हैं। अचानक आपकी आँख से नहीं खुलेंगे। उनके पास जाना पड़ेगा। थोड़ा समय बिताना पड़ेगा। तब खुलेंगे। चित्रकार संजू जैन के विलक्षण चित्रों की किताब।

जसिन्ता की डायरी

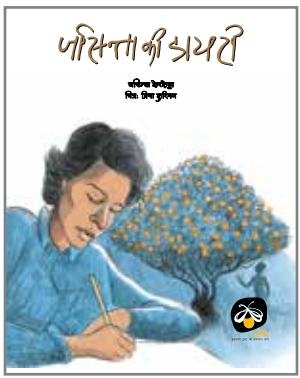

जसिन्ता केरकेट्टा
चित्र : प्रिया कुरियन
साइज़ : 7.85 x 9.75 इंच
मूल्य : 120 रुपए
ISBN: *978-93-928733-1-7*

जसिन्ता जिस लहज़ें में और जितनी संजीदगी से बड़ों से बात करती हैं वैसे ही बच्चों से बात करती हैं। उनकी यह डायरी बच्चों के साथ-साथ बड़ों के लिए पढ़ने लायक है। इसमें दुनिया के सपने, सवाल, प्रेम और हिंसा सब कुछ है। लेकिन ऐसी भाषा में जैसे कोई किसी अपने के बारे में बात कर रहा है। उनकी भाषा पारदर्शी है। उसमें दोटूकपन है। वह एक जीवन के बारे में बताती चलती है जिसने इस धरती को कोई चोट नहीं पहुँचाई है।

प्रिया कुरियन ने इस किताब के चित्र बनाए हैं। प्रिया कुरियन की उस्तादी का कौन कायल नहीं होगा!

कल से ही हो जाएँ शुरू!

कहानी व चित्रः एरिक बात्यू
साइज : 9 x 13 इंच
मूल्य : 230 रुपए
ISBN: *978-93-928737-9-9*

शेर और जिराफ को सवाना की खुशबू चाहिए। पेंग्विन और पोलर बियर को सूरज चाहिए। किसी को अफ्रीकी नदियाँ चाहिए। एकदम साफ बहती हुई। किसी को कुछ, किसी को कुछ। लेकिन बात क्या है... यह कहानी है एक चिड़ियाघर की। और उसके बहाने हमारी पूरी दुनिया की।

मिलो शानदार जानवरों से। उनके सपनों से। और उनसे मिलने आते डॉक्टरों से। उनके दोस्तों से।

यह किताब देखने लायक किताब है। इसके रंगों में तुम खोकर रह जाओगे। फ्रांस से आई है यह किताब।

बेहद सुहावनी। एरिक बात्यू ने इस किताब को बुना है। जतन से।

कहानी व चित्रः एरिक बात्यू

दो ही बरस के हो

गुलज़ार
चित्र : एलन शॉ
साइज : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 130 रुपए
ISBN: *978-81-970141-4-7*

दो बरस के बच्चे की स्कूल रपट आई है। दो बरस का बच्चा कितने सारे कामों में लगा रहता है! रपट बनाने वाले को पता होना चाहिए कि उसे किस बात के नम्बर देना है? एलन शॉ ने चित्रों में दो बरस के बच्चे की दुनिया उकेरी है। देखकर सोचना कि उसे किस बात के नम्बर देना चाहिए?

जब धूप भी हो और बारिश भी

गुलज़ार
चित्र : प्रिया कुरियन
साइज : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 110 रुपए
ISBN: *978-81-962258-0-3*

सुनते आए हैं कि जब धूप में बारिश हो तो गीदड़ का ब्याह होता है। कभी किसी से ना पूछा ना सोचा कि धूप में होती बारिश में ऐसा क्या है कि वह गीदड़ को शादी का सही समय लगता है? इस पर गुलज़ार ने सोचा और लिखा।

प्रिया कुरियन ने किताब के चित्र बनाए हैं। धूप में होती बारिश के रंग किताब के हर पन्ने पर हैं। गीदड़ के ब्याह में कितने लोग आए हैं? कौन-कौन आया है? जानना हो तो चित्र को देर तक देखते रहना पड़ेगा!

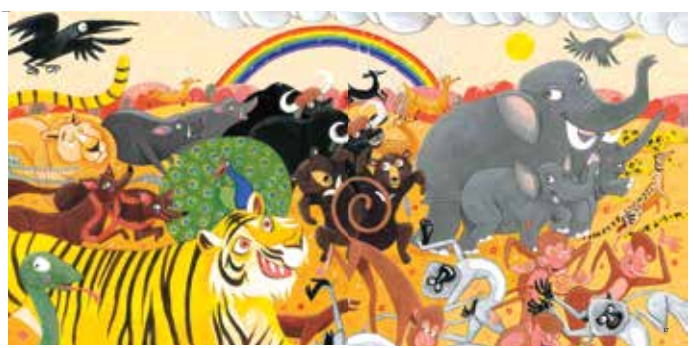

ऊटपटाँग

फटफटी आई फट गया पेट

गाड़ी का नम्बर थर्टी एट

ऊटपटाँग गुलज़ार की कविता की किताब है। यह कुछ नानसेंस है कुछ सेंस सेंस है। यह मिलजुल की किताब भी है। एक नन्ही लड़की दुनिया फ्रीडा शॉ के बेतरतीब चित्रों में अपने चित्र मिलाकर एलन शॉ ने उन्हें तरतीब दी है।

गुलज़ार
चित्र : दुनिया फ्रीडा शॉ, एलन शॉ
साइज : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 120 रुपए
ISBN: *978-81-962258-1-0*

ये कव्वे काले-काले!

गुलज़ार की यह नज्म कहती है कि कौए पहले कई रंगों के होते थे। अब तो सिर्फ काले कौए दिखते हैं। यह कैसे हुआ कि सब काले हो गए? काले रंग की किस खूबी ने कौओं का मन जीता कि वो काले हो गए?

इस किताब के लिए एलन शॉ ने कौओं की कई मुद्राएँ बनाई है। उन्होंने कौओं का आकार ही नहीं उनका चलना, बैठना, बोलना, सुनना भी बनाया है।

गुलज़ार
चित्र : एलन शॉ
साइज : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 100 रुपए
ISBN: *978-81-962258-5-8*

पूँछ

गुलज़ार

चित्र : एलन शॉ

साइज : 8.5 x 8.5 इंच

मूल्य : 130 रुपए

ISBN: 978-93-928733-8-6

इतराती है देख गिलहरी

गोल घुमा के पूँछ को

पहलवान उँगली से जैसे

बल देता है मूँछ को

गुलज़ार की यह नज्म पशुओं की पूँछों के बारे में है। शेर अपनी पूँछ शान से ऊपर उठाकर चलता है। लंगूर, घोड़ा, बिल्ली और गिलहरी अपनी अपनी पूँछ को कैसे बरतते होंगे?

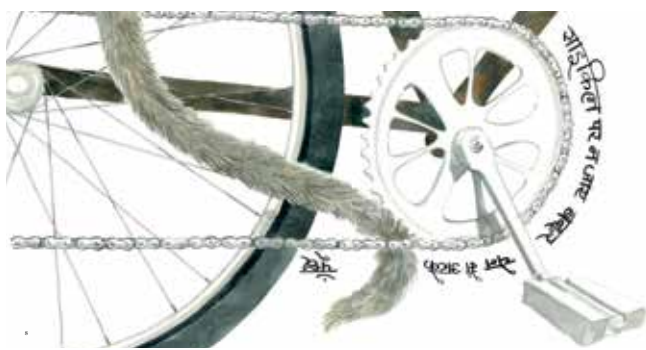

पहेलियाँ

गुलज़ार
चित्र : एलन शॉ
साइज : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 130 रुपए
ISBN: *978-81-1970141-6-1*

पहेलियाँ में गुलज़ार की लिखी पहेलियाँ है। इनके उत्तर की कुछ हिन्ट शब्दों से तो कुछ एलन शॉ के चित्रों से मिलती है।

घड़ी घड़ी

सेकेण्ड से लेकर साल तक समय नापने के पैमानों के कितने नाम हैं!

हर पैमाने का एक, अपने से छोटे कुछ पैमानों से बनता है, जैसे साल बारह महीनों से मिलकर बनता है। गुलज़ार ने इस बात से एक कविता बुनी है। घड़ी घड़ी इसी कविता की किताब है।

गुलज़ार
चित्र : एलन शॉ
साइज : 8.5 x 8.5 इंच
मूल्य : 110 रुपए
***ISBN**: 978-81-970141-3-0*

गुलज़ार साब की समय पोस्ट सीरीज़

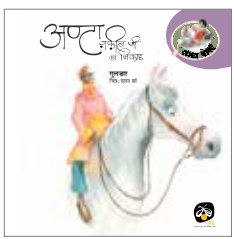

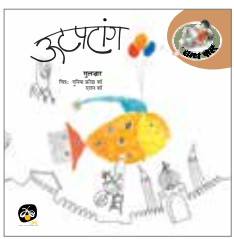

गुलज़ार

चित्र : एलन शॉ

साइज़ : 7 x 7 इंच

पूँछ

ISBN: 978-93-928733-8-6

ये कव्वे काले-काले!

ISBN: 978-81-962258-5-8

दो ही बरस के हो...

ISBN: 978-81-970141-4-7

गुलज़ार हमारे समय के नामचीन गीतकार और फिल्मकार है।

बच्चों की एक पीढ़ी उन्हें 'चड्डी पहन के फूल खिला है... के लिए जानती है।

बच्चों की एक और पीढ़ी उन्हें इब्न बतूता पहन के जूता...... के लिए याद करती है।

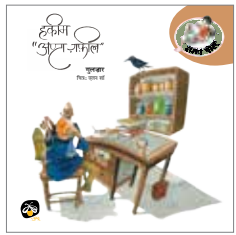

हकीम "अण्टा ग़फ़ील"
ISBN: 978-93-928733-8-6
ऊटपटांग
ISBN: 978-81-962258-1-0
पहेलियाँ
ISBN: 978-81-1970141-6-1
जब धूप भी हो और बारिश भी...
ISBN: 978-81-962258-0-3
घड़ी-घड़ी
ISBN: 978-81-970141-3-0
बोली रंगोली
ISBN: 978-93-928732-8-7
ज़मीं हमको घुमाती है
ISBN: 978-93-928733-6-2
दुनिया मेरी
ISBN: 978-93-928733-4-8
अगर मगर
ISBN: 978-93-928732-6-3
अण्टागफील का निकाह
ISBN: 978-93-928732-4-9
आपा की आपड़ी
ISBN: 978-93-928738-7-4

और बड़े आपको कोशिश, मौसम, ऑधी, लेकिन और माचिस जैसी फिल्मों के लिए और 'तुझसे नाराज़ नहीं ज़िन्दगी..... और 'मैंने तेरे लिए ही सात रंग के सपने चुने..... जैसे पच्चीसों सदाबहार नगमों के लिए।

और अब बच्चों के लिए गुलज़ार की लिखी कविता कहानियों पर इकतारा ने 14 किताबें विकसित की हैं। इन 14 किताबों के लिए एक नाम 'समय पोस्ट सीरीज' है।

हरी पतंग पे हरा पतंगा

वरुण ग्रोवर
चित्र : एलन शॉ
साइज़ : 6 x 6 इंच
मूल्य : 150 रुपए
ISBN: 978-81-9703-275-2

कथा शुरू ऐसे होती है .....एक है घोड़ा दो सवार हैं.... तीन लोक के चार द्वार हैं .....यह अपनी बरखा के लिए अपना बादल आप बनाने के सफर का किस्सा है।

भटक भटक के किस्से किस्से
जमा किए बादल के हिस्से

वरुण ग्रोवर ने इस लम्बी कविता में पुराने समय की खोजी यात्राएँ साकार होने लगती हैं। और वह यात्रा भी जो यात्रियों में अपने आसपास को समझने के लिए चलती है। इसमें एलन शॉ के चित्रों का वैविध्य बेमिसाल है। चित्रों में माया सभ्यता से लेकर अब तक के आम इंसान हैं। इस तरह किताब में दो कविताएँ हैं। दूसरी कहें कि पहली? कि पहले के भी पहले की कविता, एलन शॉ की है।

कहानियाँ जो शुरू नहीं हुईं

विनोद कुमार शुक्ल
चित्र : देबब्रत घोष
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
कीमत : 185 रुपए
ISBN: 978-81-9703-278-3

"बचपन में मैं पीपल के पत्ते की पिपहरी बनाकर उसको बजाने का आनन्द लिया करता था। इन दिनों पिपहरी बजाने जैसा वही आनन्द बच्चों के लिए लिखने में मिल रहा है।" हाल ही में विनोद कुमार शुक्ल ने बच्चों के लिए लिखने के बारे में यह बात कही है। आप बच्चों के लिए लिखकर सचमुच पिपहरी बजाने का मज़ा ले रहे हैं। भाषा और कहन की जो पिपहरी विनोदजी बजाते हैं हिन्दी का पूरा पाठक जगत उसका कायल है।

देबब्रत घोष के चित्रों में कहानी सुनाने वाली बड़ी चाची और कहानी सुनते बच्चे पड़ोस के बच्चे लगते हैं। लगभग सभी चित्रों में दो रंगों का जोड़ है। जैसे अनगिनत रंग पढ़ने वाले की कल्पना में उमड़ने के लिए छोड़ दिए हों।

जिरहुल

जसिन्ता केरकेट्टा
चित्र : कनुप्रिया कुलश्रेष्ठ
साइज़ : 7.5 x 7.5 इंच
मूल्य : 90 रुपए
ISBN: 978-81-9702-581-5

आपने कितने फूलों की बात सुनी है? कितनों के पास दो घड़ी रहे हैं? फूल हों कि कुछ और, हम कुछ के नाम ही जानते हैं। सिर्फ कुछ को जानने से सिर्फ कुछ ही 'खास' हो जाते हैं। जिरहुल, जटंगी, सोनरखी, सरई, कोईनार और सनई भी फूल हैं। क्या आपने इनके नाम सुने थे। ऐसे दस फूलों पर जसिन्ता केरकेट्टा ने कविताएँ लिखी हैं;

ऐसे दिखते हैं
पीले सनई फूल
जैसे पीली छोटी तितलियाँ
बैठी हों आकाश में सब कुछ भूल

आपने इन सब फूलों को अब तक नहीं देखा हो तो कोई बात नहीं। कनुप्रिया कुलश्रेष्ठ के बनाए इनके चित्र देखोगे तो पहचान लोगे, ''अरे, ये तो कोईनार के फूल हैं!''

सुनो कहानी 1

विभिन्न लेखक और चित्रकार
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
कीमत : 150 रुपए
ISBN: 978-81-9701-410-9

इसमें दस रचनाकारों की कहानियों में से चुनी एक-एक कहानी शामिल है। आठ चित्रकारों की रंगाई है। कहानियाँ जो छोटी हैं और खरी भी। इनमें बच्चों की सहज और वाजिब जिज्ञासा है। कल्पना है। ज़िद है। जूझ है। और प्रेम है।

"क्या इस स्कूल में पहले हाथी पढ़ते थे?"

"नहीं।"

"तो फिर इतना बड़ा गेट क्यों लगवाया?"

क्या कभी आपके मन में ऐसा कोई सवाल आया?

सुनो कहानी 2

यह किताब हमारे समय के ग्यारह रचनाकारों की छोटी कहानियों का गुच्छा है। ये पढ़ने के साथ सुनाने की कहानियाँ भी हैं। पढ़ने के आनन्द की कोई रेखा बनाएँ तो ये कहानियाँ बच्चों के लिए आनन्द के सिरे से सबके लिए आनन्द के सिरे तक जाती हैं।

विभिन्न लेखक और चित्रकार
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
कीमत : 120 रुपए
ISBN: 978-81-9702-045-2

खुशबू की चोरी

'खुशबू की चोरी' में शामिल कहानियाँ मूल रूप से बाँग्ला में लिखी गईं। इस किताब के ज़रिये हम हिन्दी में पढ़वा रहे हैं। इनकी कहन में हमने बाँग्ला के असर बचाकर रखे हैं। आपको लगेगा कि कोई बाँग्लाभाषी आपको हिन्दी में कहानियाँ सुना रहे हैं।

भाषा अलग होने से बचपन की रुचियाँ, अनुभव और कारनामे अलग नहीं हो जाते। प्यार, बूझ, डर, गुस्सा, होशियारी और कल्पना आदि भावों की ज़मीन सिर्फ भाषा ही नहीं है; ये व्यक्त ज़रूर भाषा में होते हैं। इस गुच्छे में भी इनके बारे में दिलचस्प कहानियाँ हैं।

विभिन्न लेखक
चित्र : ऋषि साहनी
साइज़ : 9.85 x 8 इंच
कीमत : 110 रुपए
ISBN: 978-81-9705-309-2

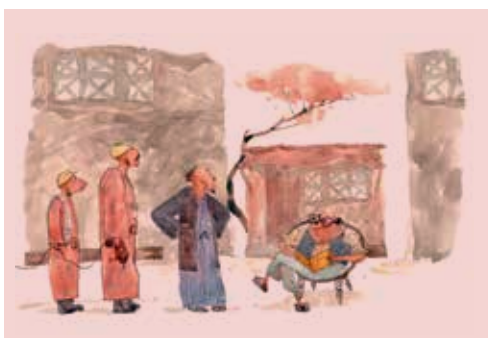

लूनर स्वॉइल

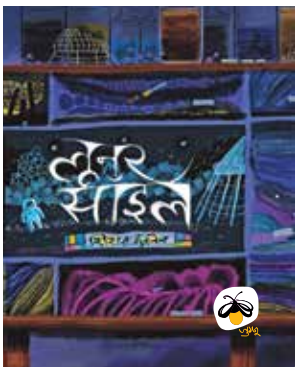

शिराज़ हुसैन की खासियत यह है कि उनको अपने अनुभव जगत का एक-एक दृश्य और आवाज़ ऐसे याद है जैसे कल ही की बात हो। लूनर स्वॉइल की कहानियों की बुनाई इन्हीं से हुई है। ये कहानियाँ पुरानी दिल्ली की बाशिन्दा हैं। इनका समय शिराज़ का बचपन है। इनमें ऐसा चुटीलापन और व्यंग्य है कि पढ़ते समय होंठों पर मुस्कराहट आए बिना नहीं रहती। शिराज़ गिटार बजाते हैं, फिल्में देखते हैं और चित्र भी बनाते हैं। इन रोशन चीज़ों के असर से उनका लेखन भी जगमगाता हुआ है।

शिराज़ हुसैन
चित्र : विभिन्न चित्रकार
साइज़ : 9.25 x 7.25 इंच
कीमत : 120 रुपए
ISBN: 978-81-9703-276-9

सात पत्तों वाला पेड़

सुशील शुक्ल
चित्र : तपोशी घोषाल
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
कीमत : 55 रुपए
ISBN: 978-81-9702-580-8

यह किताब पढ़ी तो लगा कि सुशील शुक्ल पेड़ों की भाषा जानते हैं। पेड़ की भाषा जानने वाले मिट्टी, हवा, रंग और पानी की भाषा भी जानते हैं। कि पेड़ की भाषा मिट्टी, हवा, रंग और पानी की भाषा से मिलकर ही तो बनती होगी। इस तरह बनी भाषा मिट्टी-सी कोमल, पानी-सी तरल और हवा-सी ताज़ी होगी। 'सात पत्तों वाला पेड़' की भाषा ऐसी ही है। अगर किसी को बताना हो कि हमने पेड़ में फूल और खुशबू के बनने को देखा है तो ऐसी ही भाषा में बताया जा सकेगा।

तापोशी घोषाल के बनाए सप्तपर्णी के फूल पर भँवरे मँडरा रहे हैं। इनके साथ ज़रा ठहरें तो इनकी गुनगुन भी सुनाई देने लगेगी।

एक था रामू

आप अपनी गली के कुत्तों को कितना जानते हैं? जिनको किसी ने नहीं पाला वो सभी के भरोसे हमारे साथ रहते हैं। 'एक था रामू' गली के एक कुत्ते की कहानी है; जो ज़रा-सी देखभाल से लेखक का आत्मीय बन गया। नीलेश गहलोत ने किताब के चित्र बनाये हैं। उन्होंने सिर्फ रामू नहीं बनाया, उसके दूसरे अनाम साथियों के चित्र भी बनाए। इनमें आप अपनी गली के कुत्ते को पहचान सकते हैं। रामू के ज़रिये से यह कहानी सब कुत्तों की बात करती है।

अशोक सेकसरिया
चित्र : नीलेश गहलोत
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
कीमत : 80 रुपए
ISBN: 978-81-9703-270-7

रामपुर की रामलीला

नील
चित्र : कविता सिंह काले
साइज़ : 6 x 6 इंच
कीमत : 40 रुपए
ISBN: 978-81-9702-041-4

हमारे शहर, कस्बे और गाँवों में रामलीला के आयोजनों की परम्परा रही है। ज़्यादातर मण्डलियों के पास इतने कम साधन होते हैं कि किसी न किसी चीज़ का टोटा बना रहता है। कभी तम्बू और कनात कम पड़ जाते हैं। तो कभी मुकुट और पोशाकें। कहीं पर राम और सीता भी कम पड़ जाते हैं! रामपुर में ऐन मौके पर 'रावण' कम पड़ गया।

ऐन मौके पर रावण की जुगाड़ करने से क्या हुआ? 'रामपुर की रामलीला' इसी की कहानी है। कविता सिंह काले के किरदार बड़ी-बड़ी आँखों वाले होते हैं। जैसे वो ये देखते हों कि उनको हम कितना ध्यान से देखते हैं। ध्यान से देखोगे तो आपको इन चित्रों में रामलीला की एक-एक तैयारी दिखेगी।

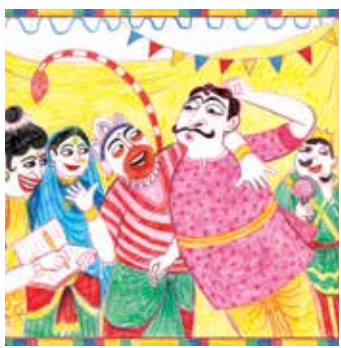

सफेद गुड़

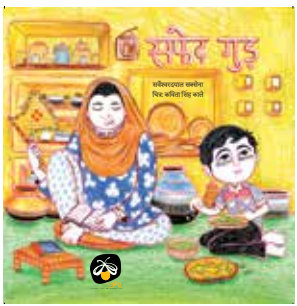

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना
चित्र : कविता सिंह काले
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
कीमत : 50 रुपए
ISBN: 978-81-9702-044-5

एक बच्चा 'सफेद गुड़' खाना चाहता है। उसकी माँ के पास पैसे नहीं हैं। इसलिये वह ईश्वर से माँगता है। पर बीच में दुनिया है। बच्चे की नैतिकता और स्वाभिमान है। 'सफेद गुड़' इन सब के बीच बच्चे की ऊहापोह की कहानी है। इस कहानी के लेखक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने बच्चों के लिए बहुत लिखा है। आपकी लिखी कविता 'इब्न बतूता पहन के जूता'.... सबने सुनी होगी!

कोई ईश्वर से कुछ माँगे और दिया हुआ भी न दिया जैसा हो; तो क्या कीजियेगा? 'सफेद गुड़' इसकी कहानी भी है।

भालू का नाखून

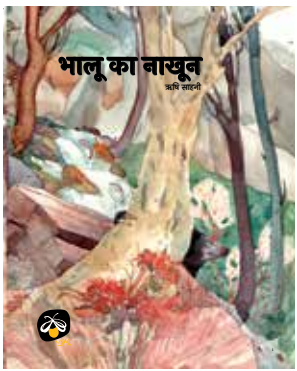

भालू का नाखून की कहानियों के लेखक ऋषि साहनी एक घुमक्कड़ और चित्रकार भी हैं। इस संकलन की कहानियाँ उनको पहाड़ों और दुर्गम रास्तों पर घूमते हुए मिली हैं। एक छोटा बौद्ध भिक्षु, एक पहाड़ी चरवाहा, एक पहाड़ी रास्ते का गाइड जैसे किरदार भी वहीं मिले हैं। ऐसी जगहें और किरदार आम तौर पर बच्चों के लिए लिखी कहानियों में कम नज़र आते हैं।

ऋषि साहनी के चित्र देखकर ख्याल आया कि वे जहाँ जाते हैं वहाँ के रंग और उनकी तासीर अपने साथ लिए आते हैं। उनके चित्रों में रंग ऐसे लगते जैसे वे धूप की तरह आकर चीज़ों पर गिर गए हों।

ऋषि साहनी
साइज़ : 9.75 x 7.85 इंच
कीमत : 130 रुपए
ISBN: 978-81-9702-583-9

बीर बहूटी

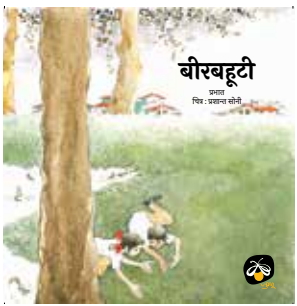

प्रभात
चित्र : प्रशान्त सोनी
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
कीमत : 80 रुपए
ISBN: 978-81-9702-049-0

यह उस समय की कहानी है जब पेन में स्याही भरी जाती थी। दो स्कूल जाते बच्चे बेला और साहिल दोस्त हैं। दोनों साथ स्कूल आते-जाते हैं। साथ खेलते हैं। एक के पेन की स्याही खतम हो जाये तो दूसरा भी अपने पेन की स्याही उड़ेल देता है ताकि स्याही भरवाने भी साथ जा सकें।

पर स्कूल जाते बच्चे जिनके सामने जीवन के कई साल पड़े हों, कब तक साथ रह सकते हैं? बीर बहूटी इसी की कहानी है। किताब के चित्र प्रशान्त सोनी ने बनाए हैं। प्रशान्त सघन विवरण वाले चित्र बनाते हैं। उनका बनाया बेला और साहिल का गाँव देखना, वहाँ के पेड़, नदी, परिन्दे और घास देखना।

आपको चित्रकार का 'देखना' दिखेगा।

पाँच सच्ची और रोमांचक कहानियाँ

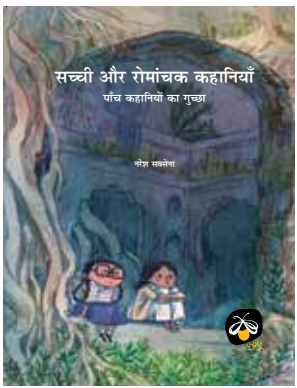

‘जगह बदलते ही चीज़ें किस तरह बदल जाती हैं। डिब्बे के भीतर, मुझसे सिर्फ चार-पाँच इंच दूर हवा गुनगुनी थी। बिस्तर था, कम्बल था और मैं बाहर सिर्फ पायजामा कुर्ता पहने रेल के दरवाज़े से लट का ठण्ड से सिहर रहा था। सिर्फ चार इंच की दूरी ने जीवन को मौत की ओर धकेल दिया था। और ये चार इंच पार करना असंभव था।’ .....

इस संकलन में नामचीन कवि नरेश सक्सेना की लिखी जिजीविषा, साहस और बूझ से भरी सच्ची और रोमांचक कहानियाँ हैं।

नरेश सक्सेना
चित्र : विभिन्न चित्रकार
साइज़ : 9.25 x 7.5 इंच
कीमत : 170 रुपए
ISBN: 978-81-9703-273-8

कुत्ते ने सोचा

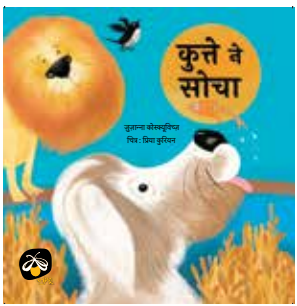

ज़ुज़न्ना कोसक्यूविकच्ज़
चित्र : प्रिया कुरियन
साइज़ : 7.5 x 7.5 इंच
कीमत : 40 रुपए
ISBN: 978-81-9702-586-0

यह एक पिल्ले की कहानी है जो अभी कम जानता था। उसने पहली बार चिड़िया देखी। फिर मछली, फिर शेर। पिल्ले ने चिड़िया से, मछली से और शेर से क्या पूछा होगा? उसे क्या जवाब मिले होंगे?

'कुत्ते ने सोचा' की लेखिका जुज़ान्ना कोस्क्यूवित्ज़ पौलेण्ड की हैं। वो विश्वविद्यालय में हिन्दी और भारतीय संस्कृति की पढ़ाई कर रही हैं। यह कहानी उन्होंने हिन्दी में ही लिखी है।

किताब के चित्र प्रिया कुरियन ने बनाए हैं। चित्र देखकर लगता है कि आप कहानी पढ़कर लिखी कहानी से लम्बी एक कहानी अपनी बना लेती हैं। जिसमें वो बात भी शामिल होती है जो लेखक ने नहीं लिखी। जैसे जिज्ञासु पिल्ला कैसा दिखता होगा? वह जिन जगहों पर गया वो कैसी होंगी? उसने कौन-सी चिड़िया देखी होगी? कहानी की जगह और समय वगैरह।

पेड़ पर बाघ

पार जाएगा सच्च
गच्चा खाएगा गच्च
कि निकल जाएगा बच्च

'पेड़ पर बाघ' नानसेंस राइमिंग की उस्ताद कवि अनुष्का रविशंकर की लिखी कविता है। इसमें एक बाघ है जिसे इंसानों ने पकड़ लिया है। पर इंसान बाघ का करेंगे क्या?

किताब के चित्र पुलक विश्वास ने बनाए हैं। वे पहले भारतीय कलाकार हैं जो 'टाइगर ऑन अ ट्री' के लिए ब्रतिस्लावा के 'बाएनिअल ऑफ इलस्ट्रेशंस' में 'बिब प्लाक' से सम्मानित किए गए हैं।

अनुष्का रविशंकर
चित्र : पुलक बिस्वास
साइज़ : 9.5 x 7 इंच
कीमत : 150 रुपए
ISBN: 978-81-9701-415-4

धुन्ना कै पड़िया

लोक के विलोप की भाषा में कहा जाता है "भैंस दूध देती है।" लोक की भाषा में भैंस क्या काम आती है, यह बाद की बात होती है। पहले भैंस का एक नाम होता है। उसकी आदत और स्वभाव को पास से देखा जाता है। उसी के बारे में बताया जाता है।

भैंस की बच्ची पड़िया कहाती है। 'धुन्ना की पड़िया' में लोक की भाषा 'अवधी' में प्रेरणा शुक्ला पड़िया की शरारतों के बारे में ऐसे बता रही हैं जैसे लोग अपने बच्चे की शरारतों के बारे में बताते हैं।

प्रेरणा शुक्ला
चित्र : अतनु राय
साइज़ : 6 x 6 इंच
कीमत : 40 रुपए
ISBN: 978-81-9702-042-1

पाँच पैरों वाली हाथी

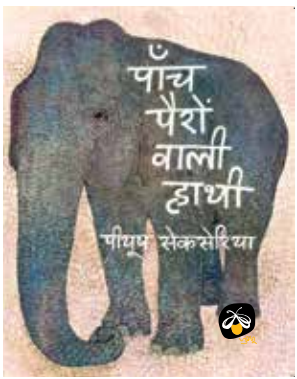

पीयूष सेकसेरिया
चित्र : विभिन्न चित्रकार
साइज़ : 9.25 x 7.25 इंच
कीमत : 175 रुपए
ISBN: 978-81-9703-271-4

ये लेखक के कुदरत से प्रेम की कहानियाँ हैं। पीयूष सेकसेरिया कहते हैं कि जंगल, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, कीट-पतंगों, नदी, पहाड़, रेत-मिट्टी और लोगों में कुछ ऐसा है कि मैं उन तक बार-बार लौटता हूँ। एक अजब सी खुशी है जो उनको देखने, सुनने, सूँघने, छूने से मिलती है।

'पाँच पैरों वाली हाथी' से उन्होंने इन खुशियों को सबके साथ बाँटा है। किताब की रचनाएँ कल्पनाओं से अधिक सरस और रोमांचक हैं।

नाम है उसका पाखी

उदयन वाजपेयी
चित्र : तपोशी घोषाल
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
कीमत : 300 रुपए
ISBN: 978-81-9703-272-1

किताब के लेखक उदयन वाजपेयी हिन्दी के नामचीन कवि हैं। आपके साक्षात्कार और निबन्ध अपने कन्टेन्ट और भाषा के लिए बार-बार पढ़े जाते हैं। आपने साहित्य और कला दोनों पर ही बच्चों के लिए लिखा है। उदयन वाजपेयी का लेखन बच्चों के लिए होकर सबके लिए हो पाता है।

'नाम है उसका पाखी' में एक नन्ही लड़की की अनोखी दुनिया है। उदयन वाजपेयी की रची इस दुनिया में रंग तापोशी घोषाल ने भरे हैं। उनके चित्र शब्दों को ही नहीं रंगों को भी एक नई यात्रा पर ले जाते हैं।

बन्तू बतोले की करामाती कुर्सी

बन्तू के घर एक कुर्सी है। वह कहानियाँ सुनाती है इसलिए करामाती तो है ही। पर एक कुर्सी को कहानियाँ सुनाने की ज़रूरत क्यों पड़ी? ये कहानियाँ उसे किसी से मिली हैं या कुर्सी ने खुद बुन ली हैं?

प्रसिध्द कवि राजेश जोशी का यह उपन्यास पाठकों को करामात की तह तक ले जाता है। रहस्य जानने की इस यात्रा के रास्ते दिलचस्प और अनूठे हैं।

राजेश जोशी
चित्र : भार्गव कुलकर्णी
साइज़ : 8.5 x 8.5 इंच
कीमत : 200 रुपए
ISBN: 978-81-9702-588-4

रज़ा के चित्र

उदयन वाजपेयी
चित्र : सैयद हैदर रज़ा
साइज़ : 13.5 x 13.5 इंच (बॉक्स)
दस पेंटिंग्स : 13.5 x 13.5 इंच
किताब : 9 x 9 इंच
मूल्य : 650 रुपए
ISBN: *978-93-91218-63-8*

हमने अपने कला और साहित्य के उस्तादों से बच्चों को ठीक से मिलवाया नहीं। कभी मिलवाया तो उनके पैर दिखाए। उनका काम और काम का चेहरा नहीं दिखाया।

उनसे दोस्ती की भाषा में यानी बराबरी से बात नहीं करवाई। इस बक्से में चित्रकार सैयद हैदर रज़ा से और उनकी बेमिसाल चित्रकारी से मुलाकात है। उनके दस चित्रों को देखने के लिए एक छोटी खिड़की खोली है कवि उदयन वाजपेयी ने। कि चित्रों को और रज़ा के झट से अमूर्त समझ लिए जाने वाले चित्रों को कैसे देखें। इस किताब में बात और कहन में वह लोच और गुंजाइश है कि चित्रों में प्रवेश का एक रास्ता यह भी है। दूसरे कई रास्तों के इशारे हैं। इस पुस्तिका के अलावा इस बक्से में रज़ा के चित्रों के दस प्रिंट हैं। बेहतरीन कागज़ पर छपे हुए। मूल चित्र को बरकरार रखकर, सहेजकर। चित्रों का इतना भरा-पूरा अनुभव बच्चों के हिस्से कम ही आया।

यह किताब बच्चों की जितनी है उतनी ही बड़ों के लिए है। उन सबके लिए भी है जो रज़ा और उनकी चित्रकारी के अनुभव में उतरना चाहते हैं।

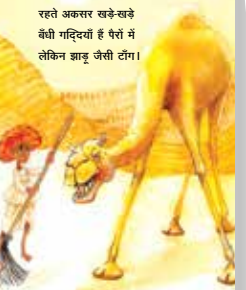

ऊँट
ऊँट बड़े तुम ऊँट-पटाँग!
गरदन लम्बी पूँछ ज़रा-सी
आँखें छोटी दाँत बड़े
ऊबड़-खाबड़ पीठ, ऊँघते
रहते अकसर खड़े-खड़े
बँधी गद्दियाँ हैं पैरों में
लेकिन झाड़ू जैसी टाँग।
कविता: बालस्वरूप राही
चित्र: सुजाशा दासगुप्ता
इकतारा
तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र
www.ektaraindia.in
फोन 0755-2446002/4939472 | 9109915118

नोंक-झोंक
दीदी! मुझे गुस्सा मत दिला
क्या कर लेगा?
मैं तुझे चुहिया बना दूँगा
मैं तेरी किताबें कुतर डालूँगी
मैं तुझे मधुमक्खी बना दूँगा
मैं तेरे गाल को गोलगप्पा बना दूँगी
मैं तुझे आसमान में फेंक दूँगा
मैं आसमान से तेरे ऊपर ही गिरूँगी
मैं घर में घुस जाऊँगा
डरपोक कहीं का....
कविता: श्याम सुशील
चित्र: तापोशी घोषाल
इकतारा
तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र
www.ektaraindia.in
फोन 0755-2446002/4939472 | 9109915118

बादल का घोड़ा
प्यास लगे
ज़्यादा
पानी है
थोड़ा
रुका नहीं
भाग गया
बादल का
घोड़ा
कविता: अनवारे इस्लाम
चित्र: सोनाली बिस्वास
इकतारा
तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र
www.ektaraindia.in
फोन 0755-2446002/4939472 | 9109915118

चोट लगी को...
चोट लगी चींटी को
हमने डाँटा टीटी को
धक्कम धकेल में
पत्तों की रेल में
पत्तों की रेल में
दद्दू की गैल में
दद्दू की गैल में
कद्दू की बेल में
को चोट लगी
कविता: सुशील शुक्ल
चित्र: तापोशी घोषाल
इकतारा
तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र
www.ektaraindia.in
फोन 0755-2446002/4939472 | 9109915118

चाय
गाय
कितनी भोली कितनी प्यारी
सब पशुओं में न्यारी गाय
सारा दूध हमें दे देती
आओ इसे पिला दें चाय
कविता: शेरजंग गर्ग
चित्र: प्रिया कुरियन
इकतारा
तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र
www.ektaraindia.in
फोन 0755-2446002/4939472 | 9109915118

तू-तू, मैं-मैं
जब मग भरता है
तो बूँदें कहती हैं
पहले मैं पहले मैं
और बूँदों की इसी
तू-तू, मैं-मैं से
मग भर जाता है
कविता: नम्रता
चित्र: तापोशी घोषाल
इकतारा
तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र
www.ektaraindia.in
फोन 0755-2446002/4939472 | 9109915118

पानी बोला पानी से
मिल गए हम आसानी से
कविता: चन्दन यादव
चित्र: तापोशी घोषाल
इकतारा
तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र
www.ektaraindia.in
फोन 0755-2446002/4939472 | 9109915118

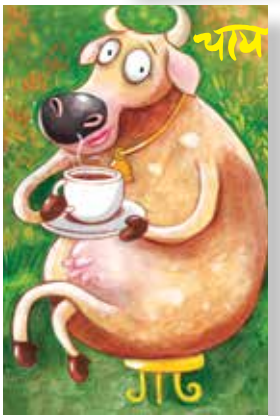

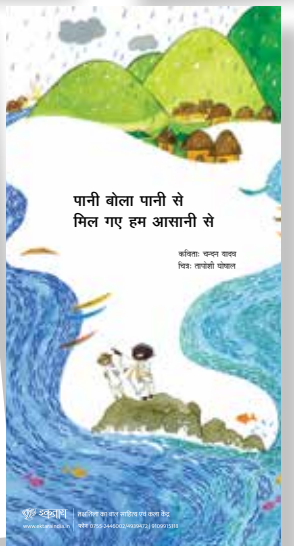

कविता-कहानी कार्ड

आपने पोस्टकार्ड देखा है? ये कविता कार्ड पोस्टकार्ड की तरह ही हैं। और शायद आपके नाम लिखे गए हैं। किसी ने आपके ही लिए कोई कविता लिखी है। किसी ने कोई कहानी।

बेहतरीन कविताओं और कहानियों का एक छोटा-सा संसार। अपने दोस्तों को चिट्ठी लिखकर भेजने के लिए।

50 कविताओं के 3 सेट

मूल्य : 270 रुपए प्रति कार्ड सेट

पापा
का
किचन
आपका गाना गाना
मेरा गाना टर्राना?
चूहों की आज़ादी के
बिलियाँ रैली निकाल
दो चिड़ियाँ

कविता-कहानी पोस्टर

थमकर सोचना। सुकून से। बार-बार देखना। समझना। विचार करना। और पढ़ी हुई किसी चीज़ के ख्याल में रहने से बात बनती है। कविताओं और कहानियों के ये पोस्टर इन सब चीज़ों के लिए ही हैं। दीवार पर लगे पोस्टरों पर बार-बार नज़र जाए...जब नज़र जाए तो खाली न आए। कभी किसी शब्द पर अटक जाए, तो कभी चित्र पर। और भाषा के मज़े लेने का एक सिलसिला बने। आपके घर में ऐसी कोई दीवार बने जो भाषा के सुरम्य संसार में एक दरीचा खोले।

साइज़: 18 x 18 इंच (55 पोस्टर) और 18 x 23 इंच (65 पोस्टर)

120 पोस्टर्स का सेट : 4440 रुपए

मूल्य : 40 रुपए प्रति पोस्टर

टूटी पेंसिल

घण्टियाँ

मम्मी
का
स्कूटर

धनेष
ग्रे हॉर्नबिल

दो कविता कैलेंडर

दोनों में 20-20 कविताएँ

साइज़ : 18 x 18 इंच और 18 x 23 इंच

दोनों का मूल्य : 475 रुपए

कहानी कैलेंडर

20 कहानियाँ

साइज़ : 18 x 23 इंच

मूल्य : 475 रुपए

कैलेंडर

कविताओं के अपने मौसम होते हैं। एक सरदी की कविता भरी गर्मी में तुम्हारे मन को ठण्डी ताज़ी हवा से भर सकती है। इस कैलेण्डर में चित्रों और कविताओं के ऐसे ही मौसम हैं। तुम मन चाहा मौसम पलट लो।

बीस-बीस पन्नों के इन दो कैलेण्डरों को दीवार पर टाँग दो। और घर की दीवार पर कविताओं की सुन्दर खिड़कियाँ खुल जाएँगीं। ऐसे ही एक कैलेण्डर कहानियों का है। बीस कहानियाँ रहती हैं उसमें। जब एक कहानी खतम हो जाए तो पलटकर दूसरी कहानी पढ़ लो।

सुनो, दीवारों के कान होते हैं।

सबकी कहानी होती है,
गीत सबके होते है।
सुनो, अपनी कहानी
अपने गीत चुनो...

प्लूटो

बच्चों का अपना ग्रह...

10 *साल तक के बच्चों के लिए...*

...जो बच्चों से अपने सारे अनुभव साझा करते हैं। चीज़ों को समझ आने देते हैं। और उन सब बड़ों के लिए भी जो आज भी सीखना चाहते हैं।

...जो चालाक लोमड़ी तथा गिल्लू गिलहरी की फटी-पुरानी कहानियों से बोर हो गए हैं। और बच्चों को ताज़ा सुनाना-पढ़ाना चाहते हैं। कुछ आज का। आज की भाषा में। जो मानते हैं कि बच्चे बुद्धू नहीं हैं।

	कुल मूल्य (पंजीकृत डाक सहित)
1 साल (6 अंक)	560.00
2 साल (12 अंक)	1100.00
3 साल (18 अंक)	1620.00

एक प्रति- 60.00 डाक खर्च अतिरिक्त

प्लूटो की सदस्यता www.ektaraindia.in से भी ली जा सकती है।

Pluto@ektaraindia.in

प्लूटो

प्लूटो सजिल्द
साल के छह अंकों का गुच्छा

प्लूटो सजिल्द

साइज़ 9 X 9 इंच

मूल्य 500 रुपए

शुरुआती पाठकों के लिए हिन्दी की अपनी तरह की पहली पत्रिका। शुरुआती पाठकों के लिए आमतौर पर तुकबन्दी आधारित कविताओं और साधारण कहानियों की पेशकश देखने को मिलती है। प्लूटो में पक्षी, जानवरों से लेकर अपने आसपास की प्रकृति, तमाम हलचलों पर सामग्री है। एक जिल्द में।

प्लूटो की पाँच साल की पाँच ज़िल्दें आ चुकी हैं।

ये साइकिल भी तुम्हारी साइकिल की ही तरह है। इसमें भी दो पहिए हैं। एक में अपने आसपास की हवा है। जिसमें हम साँस लेते हैं। उसमें धूल है, धुआँ है, और मोगरे की खुशबू भी है। दूसरे पहिए में चिड़िया के पंखों से टकराकर लौटी हवा है। इसमें उड़ानें हैं, सपने हैं।

यह तुम्हारी भाषा में बोलती है। तुम्हारी भाषा जानती है। इसमें तुम्हारे ठीक पास की अनदेखी दुनिया की कहानी है। जो बार-बार हमारे घर की घंटियाँ बजाती है मगर अनजान रहती है। ठीक वैसे जैसे जागने से पहले एक लड़का पेपर फेंक जाता है। चुपचाप। साइकिल जागी हुई तथा चुपचाप दोनों, दुनिया की पड़ताल करती है।

	कुल मूल्य (पंजीकृत डाक सहित)
1 साल (6 अंक)	905.00
2 साल (12 अंक)	1765.00
3 साल (18 अंक)	2580.00

एक प्रति- 125.00 डाक खर्च अतिरिक्त

प्लूटो की सदस्यता www.ektaraindia.in से भी ली जा सकती है। Pluto@ektaraindia.in

साइकिल
बच्चों का द्वैमासिक

साइकिल सजिल्द-1

साइज़ 8.5 × 10 इंच

मूल्य 750 रुपए

साइकिल सजिल्द 2 से 5

साइज़ 8.5 × 10 इंच

मूल्य 1000 रुपए

साइकिल सजिल्द

साइकिल के साल भर के अंकों का गुच्छा। कहानी, कविता, यात्रा वृत्तांत, पत्र, चित्रकथाएँ, माथापच्ची, कार्टून, पेंटिंग्स, इतिहास, वन्य जीवन, दर्शन, विज्ञान आदि विभिन्न विषयों की बेहतरीन सामग्री। सुप्रसिद्ध लेखकों और चित्रकारों की बेहतरीन जुगलबन्दी।

चित्रकथा

मोर डूँगरी / 04

जब मैं मोती को घर लाई / 13

वो नारंगी घर / 14

फिर मिलेंगे / 15

किस्सू हाथी / 16

एक बड़ा अच्छा दोस्त / 17

अनोखा स्थापती (हिन्दी-अँग्रेज़ी में) / 24

कैसा कैसा खाना / 25

भूतों की बारात / 32

आँख खुली और सपना गिर गया / 33

तारिक का सूरज / 34

क्या तुम हो मेरी दादी? / 35

शेर की नींद / 43

नींद पहले किस आँख में आती है? / 50

मेरा बायसन / 51

रू रू (हिन्दी-अँग्रेज़ी में) / 55

दिल में बच्चा है जी... (हिन्दी-अँग्रेज़ी में) / 56

अम्मा / 60

कुएँ में बिल्ली/
kitty in the well / 62

स्याणा / 68

अकेली चींटी / 77

अण्टागफील का निकाह / 90

आदमी जो हमेशा घड़ी पहनता था / 92

हाथियों की टोली / 93

एक दो तीन / 94

हकीम अण्टागफील / 100

मम्मी सुसु! / 106

कल से ही हो जाएँ शुरू! / 110

रामपुर की रामलीला / 129

कुत्ते ने सोचा / 134

कहानी

घुड़सवार / 09

सप्पू के दोस्त / 19

पेपर चोर / 21

चमनलाल के पायजामे / 26

मिट्टी की गाड़ी / 27

गोदाम /Godown 29

ग्यारह रुपए का फाउण्टेन पेन / 48

पहली उड़ान / 49

एक कहानी / 52

तीसरा दोस्त / 69

घोड़ा और अन्य कहानियाँ / 71

बाघ भी पढ़ते हैं / 81

इश्क का माता / 84

पेड़ नहीं बैठता / 89

कुतुबमीनार का पेड़ / 91

चिड़िया उड़ / 96

एक था रामू / 128

सफेद गुड़ / 130

बीर बहूटी / 132

कहानियाँ

लूनर स्वॉइल / 126

भालू का नाखून / 131

बाँग्ला कहानियाँ

खुशबू की चोरी-1 / 125

रोमाँचक कहानियाँ

पाँच सच्ची और रोमांचक कहानियाँ / 133

कहानी संग्रह

सुनो कहानी 1 / 123

सुनो कहानी 2 / 124

बच्चों लिखी कहानियाँ

टिटहरी का बच्चा / 12

लोककथाएँ

नीला दरवाज़ा / 46

कविता

चार चटोरे / 06

चाँद की रोटी / 20

चींटी चढ़ी पहाड़ / 20

खाई दाल / 22

पीठ पर बस्ता / 22

बकरी के साथ / 23

भाई तू ऐसी कविता क्यों करता है / 36

गर्मियों में एक बार / 39

बिल्ली के रात दिन / 40

राजा और आम इंसान / 41
रॉबी / 42
नींद किस चिड़िया का नाम है? / 47
तुम भी आना / 53
केरल के केले / 54
बीस कचौड़ी पूड़ी तीस / 57
जंगल के बीच ट्रेन खड़ी थी / 58
पानी उतरा टीन पर / 59
टाउल टापुल / 61
जिसके पास चली गई मेरी ज़मीन / 65
गमले में जंगल/ The Jungle in a Pot / 65
टके थे दस / 66
पेड़ों की अम्मा / 67
बोली रंगोली / 70
दुनिया मेरी / 72
ज़मीं हमको घुमाती है / 73
अगर मगर / 74
आओ भाई खिल्लू / 75
जुगनू भाई / 76
वह पेड़ पर चलती है / The Saw / 78
ईलम डील / 79
किताबों में बिल्ली ने बच्चे दिए हैं / 80
ररथी चल्लम चल्लम / 83
बना बनाया देखा आकाश / 85
रेगिस्तान में बस / 103
आपा की आपड़ी / 104
दो ही बरस के हो / 111
जब धूप भी हो और बारिश भी... /112
ऊटपटांग / 113
ये कव्वे काले-काले! / 114
पूँछ / 115
पहेलियाँ / 116
घड़ी घड़ी / 117

अवधि कविता

धुन्ना कै पड़िया / 136

कविताएँ

जिरहुल / 122

चित्र कविता

पेड़ पर बाघ / 135

लम्बी चित्र कविता

हरी पतंग पे हरा पतंगा / 120

उपन्यास

एक चुप्पी जगह / 02
नाच घर / 03
मगरमच्छों का बसेरा / 11
एक चोर की चौदह रातें / 44
ऊपर के गाँव का रहस्य / 107
कहानियाँ जो शुरू नहीं हुईं / 121
नाम है उसका पाखी / 138
बन्तू बतोले की करामाती कुर्सी / 139

ग्राफिक नॉवेल

बिक्सू / 08

व्यंग्य

रानू मैं क्या जानूँ? / 10
हाँजी नाजी / 18

बिग बुक

लाइटनिंग / Lightning / 87
हमारी दुनिया (हिन्दी-अँग्रेज़ी में) / 88

उस्ताद से मिलो

रज़ा के चित्र / 140

संस्मरण

किताबों वाला घर / 38
मैं कहाँ से हूँ? / 95
एक बटे बारह / 108

यात्रा डायरी

मसाई मारा / 28
जसिन्ता की डायरी / 109

विविध विधाएँ

मन में खुशी पैदा करने वाले रंग / 45

रचनात्मक लेखन

हवा मिठाई / 37

मिट्टी का इत्र / 82

पेड़ और परछाई / 101

सात पत्तों वाला पेड़ / 127

पर्यावरण पर रोचक लेख

पाँच पैरों वाली हाथी / 137

बायोग्राफी

लेडी टार्जन! जमुना / Lady Tarzan! Jamuna takes a stand / 97

वह फोटो किसने खींची? / Who clicked that pic? / 98

रॉकस्टार एन ए साड़ी / Rockstar in a sari / 99

गतिविधि

शेप चिल्ली / 102

इतिहास

इकतारा बोले / 07

भाषा शिक्षण

पढ़ना, ज़रा सोचना / 05

दर्शन शास्त्र

Philosophy for Children / सोचना, पढ़ना, लिखना / 63

कविता कार्ड

एक दिन पत्थर भी नहीं बचेगा... / 30

अक्स कविताएँ और हाइकू / 31

कहानी कविता कार्ड / 143

कहानी कविता पोस्टर / 145

कैलेंडर / 147

पत्रिकाएँ

- प्लूटो / 148
- साइकिल / 150

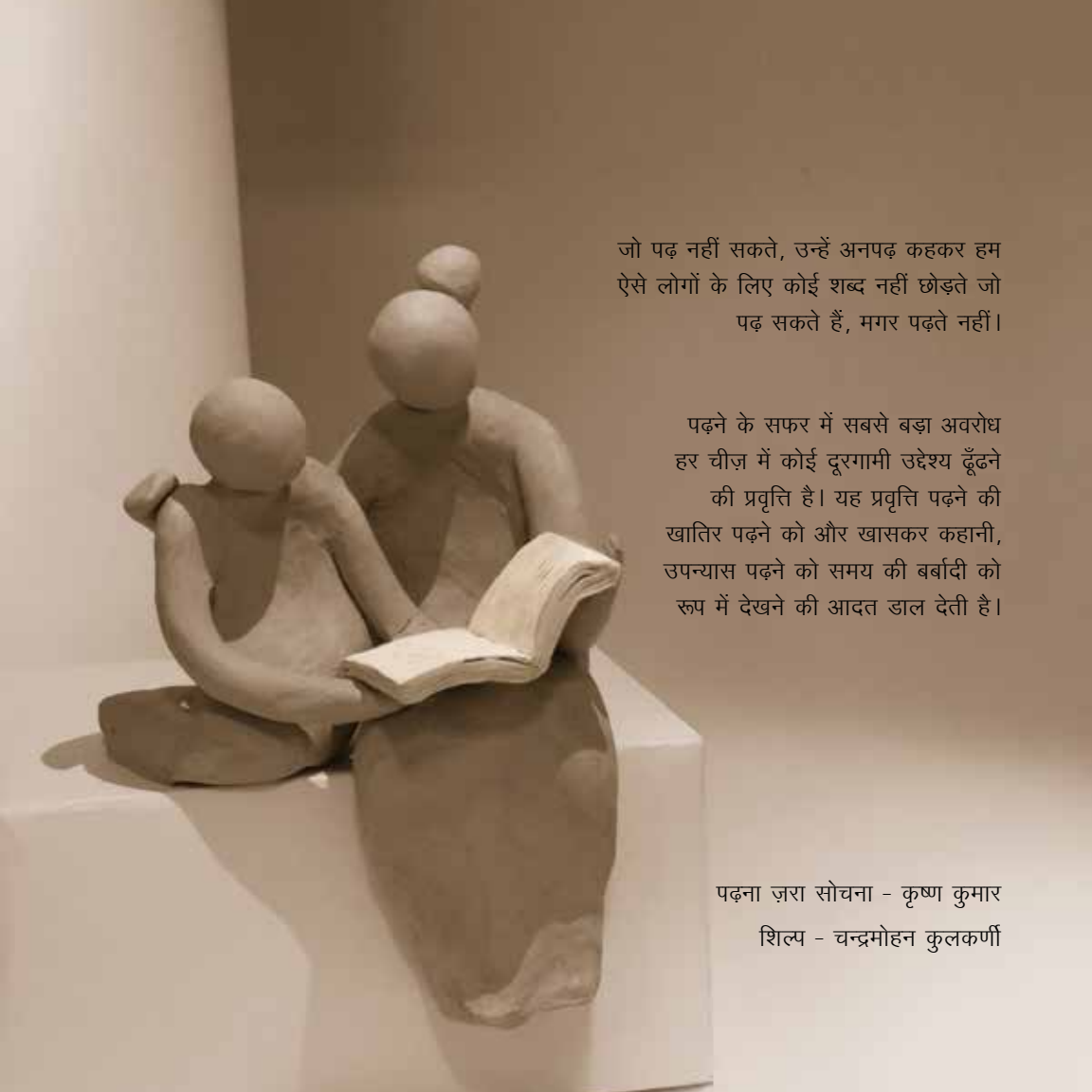

जो पढ़ नहीं सकते, उन्हें अनपढ़ कहकर हम ऐसे लोगों के लिए कोई शब्द नहीं छोड़ते जो पढ़ सकते हैं, मगर पढ़ते नहीं।

पढ़ने के सफर में सबसे बड़ा अवरोध हर चीज़ में कोई दूरगामी उद्देश्य ढूँढने की प्रवृत्ति है। यह प्रवृत्ति पढ़ने की खातिर पढ़ने को और खासकर कहानी, उपन्यास पढ़ने को समय की बर्बादी को रूप में देखने की आदत डाल देती है।

पढ़ना ज़रा सोचना - कृष्ण कुमार

शिल्प - चन्द्रमोहन कुलकर्णी

किताबों की धुनों के अलावा यहाँ है -

तक्षशिला बाल साहित्य सृजनपीठ

इसके तहत सुप्रसिद्ध रचनाकारों को एक वर्ष के लिए बाल साहित्य सृजन के लिए आमंत्रित किया जाता है। बाल साहित्य में यह देश में अपनी तरह का पहला प्रयास है। इसके तहत रचनाकारों को प्रतिमाह मानदेय स्वरूप तीस हज़ार रुपए का प्रावधान है।

बाल साहित्य संसाधन केन्द्र

दुनिया की विभिन्न भाषाओं की बेहतरीन किताबें, शोध पत्र, पत्रिकाएँ आदि सामग्री को जुटाकर यह केन्द्र विकसित किया जा रहा है।

रियाज़ अकेडमी फॉर इलस्ट्रेटर्स

टाटा ट्रस्ट्स और इकतारा की संयुक्त पहल। इसमें हर साल बीस युवा चित्रकारों को एक साल इलस्ट्रेशन के विभिन्न पहलुओं पर काम करने का मौका मिलता है। अनुभवी इलस्ट्रेट्र्स और लेखकों के साथ काम करने का अनोखा और इकलौता मौका।

लेखन कार्यशालाएँ

इकतारा विभिन्न भारतीय भाषाओं के लेखकों के साथ लेखन कार्यशालाएँ करता है। आमतौर पर साल में तीन से चार कार्यशालाएँ होती हैं। इसमें वरिष्ठ लेखकों के साथ युवा लेखकों को लेखन की बारीकियाँ सीखने-समझने का मौका मिलता है। ताकि युवा पीढ़ी बाल साहित्य के इलाके को समझे और सृजन करे। भारतीय भाषाओं के साहित्य में आपसी लेन-देन हो।

इकतारा तक्षशिला का बालसाहित्य एवं कला केन्द्र है। यह केन्द्र भोपाल में स्थित है। इकतारा बच्चों की दुनिया में साहित्य तथा कला के रंग और अनुभव जुटाने में लगा है। बच्चों को अपने मन की किताबें, पत्रिकाएँ पढ़ने को मिलें। उन्हें कहानियाँ सुनने को मिलें। कविताएँ गुनगुनाने को मिलें। चित्र आदि तमाम कलाओं का सुख उन्हें सम्भव हो। एक ऐसे भरे-पूरे बचपन का स्वप्न इकतारा दुनिया भर के बच्चों के लिए और अपने लिए देखता है।

जुगनू प्रकाशन इकतारा द्वारा विकसित किताबें प्रकाशित करता है।

भुगतान वितरण ऑनलाइन ट्रांसफर के लिए:
एच. डी. एफ़. सी. बैंक लिमिटेड
शाखाः डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
खाता नम्बर 50100688089124
IFSC: HDFC0000134 में भेंजे।

बैंक ड्राफ्ट/चेक
इकतारा ट्रस्ट
Ektara Trust
के नाम नई दिल्ली में देय।

EKTARA
इकतारा

2, मालवीय नगर, भोपाल 462003 (मध्य प्रदेश)
दूरभाष : 0755-4939472
मोबाईल : 9109915118/9630097118
ईमेल : publication@ektaraindia.in
वेबसाइट : www.ektarashop.in
ektarashop पर ebooks भी उपलब्ध हैं।
हमारे प्रकाशन Amazon पर भी उपलब्ध हैं।

इकतारा ट्रस्ट की प्रकाशन छाप

imagica@imagica.in